नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

परिवहन विशेष

www.newsparivahan.com

वर्ष 03, अंक 293, नई दिल्ली, मंगलवार 23 दिसम्बर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

संघर्ष में कभी हार नहीं माननी चाहिए क्योंकि जीवन हमें हमेशा एक और मौका देता है।

03 अद्भुत बाल लीला: जब नटखट कन्हैया बने गर्गाचार्य के नारायण!

06 डिजिटल दक्षता से कैरियर में कामयाबी

08 ....शिक्षा परिवर्तन की सबसे बड़ी प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी।

डीटीसी के अवसान की ओर दिल्ली?
जनता पूछे — बस सेवा या बस कहानी!

लेखक: संजय कुमार बाठला

(लेखक परिवहन नीतियों और शहरी प्रशासन पर सक्रिय सामाजिक विश्लेषक हैं।)

संपादकीय परिचय:- दिल्ली का सार्वजनिक परिवहन हमेशा से राष्ट्रीय राजधानी की जीवनरेखा रहा है। दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) न केवल शहर की गति का प्रतीक रहा, बल्कि पर्यावरण-मित्र और सस्ती बस सेवा का भरोसा भी था।

हालाँकि, हाल के वर्षों में निगम की घटती भूमिका और कर्मचारियों के अन्य विभागों में स्थानांतरण ने यह सवाल खड़ा कर दिया है कि कहीं सरकार स्वयं इस ऐतिहासिक संस्था को धीरे-धीरे समाप्त तो नहीं कर रही।

प्रस्तुत लेख में संजय कुमार बाठला ने इसी चिंताजनक प्रवृत्ति पर विस्तार से चर्चा की है — **क्या यह प्रशासनिक पुनर्गठन है या सार्वजनिक परिवहन को कमजोर करने की योजना?**

* "**जनहित में सवाल:** क्या दिल्ली की बस सेवा सत्ता की राजनीति की चपेट में?

* "**डीटीसी पर संकट:** दिल्ली का सार्वजनिक परिवहन दिशाहीन होता जा रहा है।

* "**राजधानी की सवारी सेवा खतरे में** — सरकारों की चुप्पी पर जनता की पुकार।

* "**दिल्ली की सड़कें फिर निजीकरण की ओर?** डीटीसी के भविष्य पर गहराया संशय।

* "**सार्वजनिक परिवहन या राजनीतिक प्रबंधन?** दिल्ली में डीटीसी की किस्मत अधर में।"

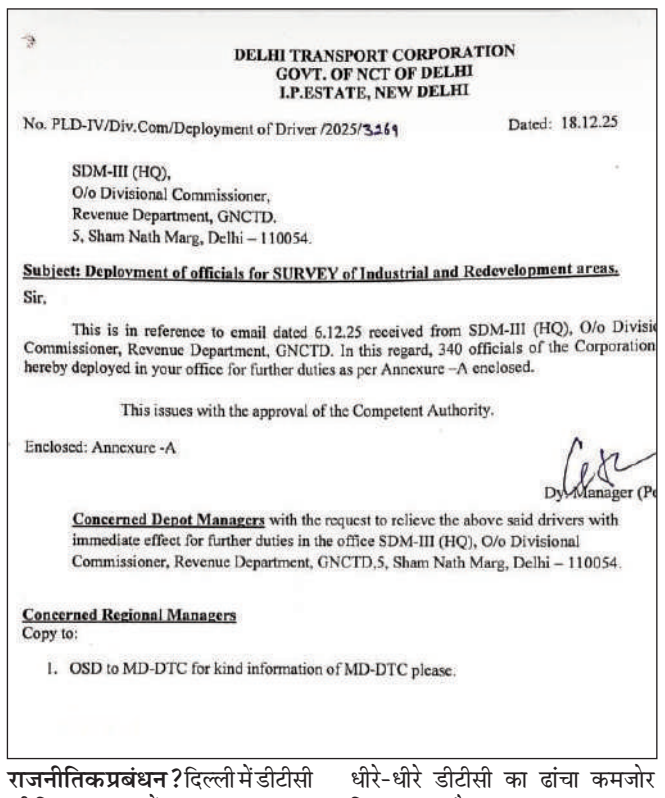

DELHI TRANSPORT CORPORATION
GOVT. OF NCT OF DELHI
I.P.ESTATE, NEW DELHI

No. PLD-IV/Div.Com/Deployment of Driver /2025/3269 Dated: 18.12.25

SDM-III (HQ),
O/o Divisional Commissioner,
Revenue Department, GNCTD.
5, Sham Nath Marg, Delhi – 110054.

Subject: Deployment of officials for SURVEY of Industrial and Redevelopment areas.

Sir,

This is in reference to email dated 6.12.25 received from SDM-III (HQ), O/o Divisi Commissioner, Revenue Department, GNCTD. In this regard, 340 officials of the Corporation hereby deployed in your office for further duties as per Annexure –A enclosed.

This issues with the approval of the Competent Authority.

Enclosed: Annexure -A

Dy. Manager (Pe

Concerned Depot Managers with the request to relieve the above said drivers with immediate effect for further duties in the office SDM-III (HQ), O/o Divisional Commissioner, Revenue Department, GNCTD,5, Sham Nath Marg, Delhi – 110054.

Concerned Regional Managers
Copy to:

1. OSD to MD-DTC for kind information of MD-DTC please.

दिल्ली की सड़कों पर चलने वाली बसें कभी राजधानी की पहचान हुआ करती थीं। दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) ने वर्षों तक लाखों यात्रियों को सस्ती और सुरक्षित यात्रा की सुविधा दी। लेकिन अब यह संस्था अस्तित्व के संकट से गुजर रही है।

हाल के सरकारी आदेशों और नीतिगत फैसलों से ऐसा प्रतीत होता है कि धीरे-धीरे डीटीसी का ढांचा कमजोर किया जा रहा है।

शीला दीक्षित सरकार के समय नई सीएनजी बसों के साथ डीटीसी ने पर्यावरण मित्र परिवहन मॉडल पेश किया था। मगर आम आदमी पार्टी के शासनकाल में बसों की नई खरीद लगभग ठप पड़ गई। इसका सीधा असर निगम की परिचालन और राजस्व स्थिति पर पड़ा।

अब, भाजपा-नेतृत्व वाली दिल्ली सरकार पर भी यह आरोप लग रहे हैं कि

वह इसी नीति को जारी रखते हुए निगम की संपत्तियों के पुनः उपयोग की दिशा में आगे बढ़ रही है।

हाल ही में जारी आदेश में डीटीसी के 340 कर्मचारियों को राजस्व विभाग में स्थानांतरित किया गया है। यह कदम इस आशंका को और बल देता है कि निगम के परिचालनिक ढांचे को व्यवस्थित रूप से कमजोर किया जा रहा है।

सवाल यह उठता है कि जब डीटीसी की सबसे बड़ी आय स्रोत — बस सेवा — को ही प्रभावित किया जा रहा है, तो निगम टिकेगा कैसे?

सरकार चाहे किसी भी दल की हो, सार्वजनिक परिवहन को घाटे का सौदा मानना जनता के हित में नहीं है। बस सेवा कोई व्यावसायिक उद्यम नहीं, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व है। यदि डीटीसी जैसी संस्थाएं खत्म होती हैं तो दिल्ली में निजी वाहनों की संख्या और प्रदूषण दोनों बढ़ेंगे, जबकि जनता की सुविधा और सुरक्षा घटेगी।

पिछले दो दशकों की नीति याद करें — ब्लू लाइन बस सेवा को सुरक्षा कारणों से बंद किया गया था, क्योंकि निजी संचालक अनुशासन और रखरखाव के मानक पूरे नहीं कर पा रहे थे। अब वही मॉडल यदि दोबारा लागू होता है, तो यह इतिहास से सबक न लेने जैसा होगा।

डीटीसी की संपत्तियां आज भी सबसे अधिक मूल्यवान हैं, जिन पर दिल्ली सरकार सीधा कब्जा नहीं कर सकती। लेकिन यदि निगम को 'घाटे में चलने वाला' घोषित कर दिया जाए, तो उसकी भूमि और परिसंपत्तियों के पुनर्विकास का रास्ता खुल जाएगा। यही स्थिति अब धीरे-धीरे बनती दिखाई दे रही है।

दिल्ली के नागरिक हमेशा से एक ऐसी बस सेवा के हकदार रहे हैं जो सुरक्षित, समयानुसार और सुलभ हो। यदि सरकारें सार्वजनिक परिवहन को नीतिगत प्राथमिकता से बाहर रखती हैं तो यह केवल एक निगम का अंत नहीं, बल्कि जनहित की उस भावना की अवहेलना होगी जिसने कभी डीटीसी को दिल्ली की पहचान बनाया था।

अब समय है कि सरकार साफ़ करे — क्या दिल्ली की सड़कें फिर से जनता की सवारी से भरेंगी या फिर निजी वाहनों और प्रदूषण के धुएं में जनता की उम्मीदें खो जाएंगी?

जय जगन्नाथ जी

जगन्नाथ पुरी धाम दर्शन यात्रा

(दिल्ली से फ्लाइट द्वारा यात्रा)

यात्रा तिथि: 19 जनवरी से 21 जनवरी

यात्रा कार्यक्रम :

DAY 1 – दिल्ली भुवनेश्वर (फ्लाइट द्वारा)
होटल में चेक-इन
खंडगिरी एवं उदयगिरी गुफाएं
एलिफेंटा / लायन / क्वीन केव्स
लिंगराज मंदिर
जैन मंदिर
मुक्तेश्वर मंदिर
बिंदुसागर
रात्रि विश्राम – भुवनेश्वर

DAY 2
नाश्ता
बुद्ध स्तूप
कोणार्क सूर्य मंदिर
चंद्रभागा बीच
रामचंडी मंदिर
पुरी होटल में ठहराव
श्री जगन्नाथ मंदिर दर्शन
विमला शक्तिपीठ
रात्रि विश्राम – पुरी

DAY 3
नाश्ता
चिल्का झील (डॉल्फिन सैंक्चुरी)
दिल्ली वापसी

पैकेज में शामिल :
हवाई यात्रा
होटल ठहराव
केवल नाश्ता

पैकेज मूल्य : 25,000 /- प्रति व्यक्ति

बुकिंग अंतिम तिथि : 15 दिसंबर

संपर्क करें :
9716338127,
9811732094
9212632095

PUC जांच में दिल्ली के 10 हजार से ज्यादा वाहन हो गए फेल...

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। 'पीयूसी नहीं तो ईंधन नहीं' अभियान का असर दिखने लगा है। पिछले सप्ताह 18 दिसंबर को शुरू हुए इस अभियान में अभी तक 10 हजार से अधिक वाहन पीयूसी फेल कर चुके हैं। रविवार तक कुल दो लाख से अधिक वाहनों की जांच हो चुकी है। रविवार को दिल्ली भर में 52 हजार से अधिक पीयूसी प्रमाण पत्र जारी हुए।

इसके एक दिन पहले शनिवार को 50,612 प्रमाणपत्र जारी हुए थे। दो दिन से लगातार यह आंकड़ा 50 हजार के पार है। रविवार को यह आंकड़ा 52, 021 था। दिल्ली सरकार के अनुसार, इस दौरान 10 हजार से अधिक वाहन पीयूसीसी के लिए अयोग्य करार भी दिए गए हैं।

हालांकि, सरकारी आंकड़ों के अनुसार, अभी भी लाखों की संख्या में वाहन बिना पीयूसी के ही दिल्ली की सड़कों पर दौड़ रहे हैं। अभियान शुरू करते हुए सरकार ने 30 लाख से अधिक वाहनों के बिना पीयूसी के चलने की जानकारी दी थी।

इस बीच, दिल्ली पेट्रोल डीलर्स एसोसिएशन (DPDA) ने दिल्ली सरकार को सख्ती बढ़ाते हुए पीयूसी में लापरवाही मामले में जुर्माने का प्रॉवधान लागू करने का सुझाव दिया है। डीपीडीए के अध्यक्ष निश्चल सिंघानिया ने कहा कि कोई वाहन चालक नियमित जांच करा रहा है और मानक पूरे कर रहा है।

वहीं, दूसरा वाहन चालक पीयूसीसी की अवधि पूरी होने के बावजूद वर्षों से वाहन की

प्रदूषण जांच नहीं करा रहा है। दोनों में अंतर आवश्यक है। जुर्माने के प्रविधान से वाहन चालक समय रहते वाहनों के रखरखाव पर ध्यान देने तथा पीयूसी कराने पर जोर देंगे।

सर्वर डाउन, एएनपीआर कैमरे नहीं कर रहे काम

इस बीच, कई पीयूसी सेंटरों पर सर्वर डाउन चल रहा है। लुटियंस दिल्ली के जनपथ मार्ग स्थित एक पंप पर पीयूसी सेंटर में सर्वर डाउन होने के चलते कुछ देर में ही सात से अधिक वाहनों को जांच के लिए दूसरे सेंटरों की तलाश में जाना पड़ा।

दोपहर तीन बजे कर्मी ने बताया कि यह समस्या करीब एक घंटे से है। दोपहर में पीयूसी सेंटरों में जैसे ही जांच का दबाव बढ़ रहा है, वैसे ही सर्वर ठप होने की समस्या आ रही है।

इस बीच, कई वाहन बिना वैध पीयूसी के पेट्रोल पंप पर आए, लेकिन पंपों के एएनपीआर कैमरे तथा स्पीकर ने भी कोई चेतावनी जारी नहीं की। डीपीडीए के अध्यक्ष निश्चल सिंघानिया के अनुसार, कैमरों में नहीं आने वाले दोपहिया वाहन अधिक आ रहे हैं। एएनपीआर कैमरे मुख्य तौर पर दोपहिया वाहनों को नहीं पकड़ पा रहे हैं।

प्रदूषण को लेकर सीएम रेखा गुप्ता की बैठक में ओला-उबर से पूलिंग शुरू करने पर विचार, ई-रिक्शा पर नई गाइडलाइंस

दिल्ली सचिवालय में मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता की अध्यक्षता में प्रदूषण नियंत्रण पर महत्वपूर्ण बैठक हुई। PUC प्रमाणपत्र के बिना वाहनों पर चालान जारी रखने के निर्देश दिए गए। ओला और उबर से पूल और शेयर बस सेवाएं शुरू करने पर विचार किया गया ताकि निजी वाहनों की संख्या कम हो। डीटीसी बसों के रूटों को बेहतर किया जाएगा और ई-रिक्शा के संचालन के लिए नई गाइडलाइंस जारी होंगी।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली सचिवालय में मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता की अध्यक्षता में प्रदूषण नियंत्रण पर एक महत्वपूर्ण बैठक हुई। बैठक में सभी संबंधित विभागों को सख्त निर्देश दिए गए कि बिना वैध PUC प्रमाणपत्र वाले वाहनों पर चालान की कार्रवाई जारी रहेगी और इसमें किसी को कोई छूट नहीं मिलेगी।

निजी वाहनों की संख्या कम करने के लिए ओला और उबर जैसी कैब एग्रीगेटर कंपनियों से बातचीत करने का फैसला लिया गया। इन कंपनियों से पूल

और शेयर बस सेवाएं शुरू करने को कहा जाएगा, ताकि सड़कों पर वाहनों का बोझ कम हो और प्रदूषण घटे।

डीटीसी बसों के रूटों में नई व्यवस्था की जाएगी। जिन इलाकों में सार्वजनिक परिवहन की ज्यादा जरूरत है, वहां बस सेवाएं और बेहतर तरीके से उपलब्ध कराई जाएंगी। साथ ही ई-रिक्शा के संचालन के लिए नई गाइडलाइंस जारी की जाएंगी, जिससे यातायात व्यवस्था सुचारु रहे।

बैठक में कैबिनेट मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा और संबंधित विभागों के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे। यह बैठक दिल्ली की हवा को साफ करने और प्रदूषण पर लगाम लगाने की दिशा में उठाए जा रहे कदमों का हिस्सा है।

दिल्ली में ईवी के लिए चार्जिंग स्टेशनों की कमी एक बड़ी समस्या

नई दिल्ली। वायु प्रदूषणों की जंग में बड़े हथियार के रूप में देखे जा रहे इलेक्ट्रिक वाहनों (EV) को 'करंट' नहीं मिल पा रहा है। इस मुहिम में चार्जिंग स्टेशनों की कमी बड़ी बाधा बनी हुई है। स्थिति यह कि मौजूदा वक्त में दिल्ली में दौड़ते वाहनों के लिए जितने चार्जिंग स्टेशन या प्वाइंट होने चाहिए, उसमें १५ प्रतिशत भी दिल्ली की सड़कों पर नहीं है। हाल ही में दिल्ली सरकार ने नई ईवी नीति लाने की घोषणा की है, जिसमें ईवी की खरीद पर बड़े स्तर पर सब्सिडी देने की घोषणा है। माना जा रहा है कि इस नीति के लागू होने के बाद दिल्ली वाले डीजल या पेट्रोल के वाहनों की तुलना में ईवी को खरीदने में ज्यादा दिलचस्पी दिखाएंगे, लेकिन दिल्ली वालों की चिंता और है। ईवी वाहन मालिक रवि जैन के अनुसार, यह उतनी आरामदेह व्यवस्था नहीं है, क्योंकि दिल्ली की सड़कों पर इसकी भारी कमी है। साथ ही जहां है, वह अक्सर खराब पड़े रहते हैं। चार्जिंग के लिए जाने वाले वाहनों की सहायता के लिए वहां कोई कर्मी तैनात नहीं रहता है। मौजूदा समय में दिल्ली में कुल 8,849 है, जो पार्किंग स्थल, माल, सार्वजनिक स्थानों पर लगाए गए हैं। जबकि, दिल्ली सरकार के वार्षिक कार्ययोजना २०२६ के अनुसार, वर्तमान में दौड़ते ईवी वाहनों के अनुपात में चार्जिंग स्टेशनों की कुल आवश्यकता ३६,150 की है।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com
tolwadelhi@gmail.com

पिंकी कुंडू

आज का साइबर सुरक्षा विचार

साइबर अलर्ट: WhatsApp अकाउंट हाईजैकिंग – GhostPairing

इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) तथा CERT-In ने नागरिकों को चेतावनी देते हुए एक उच्च गंभीरता परामर्श जारी किया है। इसमें बताया गया है कि GhostPairing नामक नया साइबर अभियान WhatsApp खातों को हाईजैक करने के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है।

GhostPairing क्या है?

* हमलावर WhatsApp की डिवाइस लिंकिंग सुविधा का दुरुपयोग करते हैं और पेयरिंग कोड से बिना प्रमाणीकरण खाते को जोड़ लेते हैं।

* पीड़ितों को धोखे से हमलावरों के ब्राउज़र को "विश्वसनीय डिवाइस" के रूप में लिंक करने के लिए मजबूर किया जाता है

* पासवर्ड चोरी या SIM स्वैप की ज़रूरत नहीं होती — बस कुछ भ्रामक क्लिक।

GhostPairing हमले की चरणबद्ध प्रक्रिया

1. प्रारंभिक संदेश

* पीड़ित को किसी भरोसेमंद संपर्क से संदेश मिलता है: "Hi, check this photo"

* लिंक WhatsApp में Facebook स्टाइल प्रीव्यू दिखाता है।

२. नकली साइट पर रीडायरेक्शन

* लिंक पर क्लिक करने से पीड़ित नकली Facebook viewer पेज पर पहुँचता है।

* पेज पीड़ित से "वेरिफाई" करने के लिए फोन नंबर दर्ज करने को कहता है।

३. WhatsApp की डिवाइस लिंकिंग सुविधा का दुरुपयोग

* सामान्यतः WhatsApp Web/Desktop पर डिवाइस लिंक करने के लिए QR कोड स्कैन करना पड़ता है।

* GhostPairing एक कम ज्ञात विकल्प का दुरुपयोग करता है: फोन नंबर और पेयरिंग कोड से लिंक करना।

* नकली साइट यह प्रक्रिया पृष्ठभूमि में शुरू कर देती है।

4. पीड़ित अनजाने में पेयरिंग को मंज़ूरी देता है

* फोन नंबर दर्ज करने पर पीड़ित हमलावर के ब्राउज़र को लिंक्ड डिवाइस के रूप में स्वीकार कर लेता है।

* OTP या SIM स्वैप की ज़रूरत नहीं होती — पेयरिंग कोड असली जैसा दिखता है और अतिरिक्त जाँच को दरकिनार कर देता है।

हमलावर क्या कर सकते हैं

एक बार लिंक होने पर हमलावर:

आपके सभी सिंक किए गए संदेश पढ़ सकते हैं

नए संदेश वास्तविक समय में प्राप्त कर सकते हैं

आपकी फ़ोटो, वीडियो और वॉइस नोट्स देख सकते हैं

आपके नाम से आपके संपर्कों और समूहों को संदेश भेज सकते हैं

यह श्रृंखला जारी रहती है और हाईजैक किए गए खाते अन्य पीड़ितों को निशाना बनाने लगते हैं।

नागरिकों के लिए सुरक्षा सुझाव

* संदिग्ध लिंक पर क्लिक न करें — चाहे वे परिचित संपर्क से आए हों।

* कभी भी अपना फोन नंबर बाहरी साइटों पर दर्ज न करें जो WhatsApp या Facebook होने का दावा करती हों।

* WhatsApp में Linked Devices नियमित रूप से जांचें:

o Settings Linked Devices पर जाएं

o सक्रिय सत्रों की समीक्षा करें (जैसे Chrome, Edge, Firefox)

o यदि कोई अनजान डिवाइस दिखे तो तुरंत लॉग आउट करें।

संगठनों के लिए सुझाव

* मैसेजिंग ऐप हमलों पर सुरक्षा जागरूकता प्रशिक्षण कराएं।

* जहां संभव हो, Mobile Device Management (MDM) लागू करें।

* फ़िशिंग और सोशल इंजीनियरिंग संकेतों की निगरानी करें।

* तेज़ पहचान और सुधार के लिए इंसिडेंट रिस्पॉन्स प्रोटोकॉल स्थापित करें।

याद रखें WhatsApp हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी का हिस्सा बन गया है — लेकिन अगला क्लिक आपके खाते को उजागर कर सकता है। सतर्क रहें, भरोसा करने से पहले सत्यापित करें और अपनी डिजिटल पहचान की रक्षा करें।

अपना जीवन वापस कैसे लें

पिंकी कुंडू

एक स्त्री जिसने विवाह किया और विवाह के साथ ही अपना जीवन समर्पण कर दिया। पति के लिए—उसकी पसंद, उसकी नापसंद, उसकी सुविधाएँ, उसकी इच्छाएँ। यह सोचकर कि "यही तो जीवन है।"

फिर बच्चे हुए और जीवन का अर्थ बदल गया — अब जीवन का मतलब था - उनकी पढ़ाई, उनका खाना, उनकी बीमारी, उनके सपने।

अपने सपनों को उसने धीरे-धीरे किसी अलमारी में बंद कर दिया। उसने दिन-रात मेहनत की, करियर में संघर्ष किया — इसलिए नहीं कि उसे नाम चाहिए, बल्कि इसलिए कि बच्चों को कभी कमी महसूस न हो।

वह हर दिन भगवान से नहीं, अपने पति से प्रार्थना करती रही — "थोड़ा समय दे दो, थोड़ा सम्मान दे दो, बस सुन ही लो" लेकिन जीवन चलता रहा, वह देती रही और देती रही।

फिर एक दिन बच्चे उड़ गए, अपने-अपने जीवन में। बिना यह सोचे कि पीछे कोई माँ है जिसने 30 साल एक ही रिश्ते को हर दिन सींचा था। अब घर वही है, पर आवाज़ें नहीं। कमरे वही हैं, पर अर्थ नहीं।

एक गहरा शून्य है ऐसा शून्य जिसे शब्दों में बताया नहीं जा सकता। वह रोती है, चुपचाप। कभी बाथरूम में, कभी रात के सन्नाटे में और फिर मन पूछता है — "अब मैं क्या करूँ?"

राम भी ऐसे ही क्षण से गुज़रे थे

* अयोध्या थी, पर राज्य नहीं।

* परिवार था, पर अपनापन नहीं।

* वनवास केवल जंगल में नहीं होता कभी-कभी वनवास घर के भीतर होता है।

लेकिन राम रुके नहीं, उन्होंने शोक को अपनी पहचान नहीं बनने दिया। उन्होंने जाना — जीवन एक ही भूमिका नहीं है।

* आप भी केवल पत्नी नहीं हो,

* आप केवल माँ नहीं थीं

आप अपने जीवन की कई अध्यायों में से कुछ लंबे अध्याय थे — बहुत लंबे, बहुत सुंदर, बहुत त्याग से भरे, लेकिन पूरी किताब नहीं।

अब समय है—

* रोने का—रो लीजिए।

* शोक का—शोक कर लीजिए।

यह कमजोरी नहीं है। यह शुद्धिकरण है।

* लेकिन वहाँ रुक मत जाइए, स्थिर होइए। अपने आप को फिर से थामिए।

सीता ने भी वन में रहते हुए अपनी पहचान नहीं खोई थी, उन्होंने जाना—उनका अस्तित्व, किसी एक रिश्ते से बड़ा है।

*अब अपनी किताब फिर से उठाइए, कलम आपके हाथ में है। अब नए अध्याय लिखने हैं —

* वह अध्याय जहाँ आप पहली बार अपने लिए जिएँगी।

* वह अध्याय जहाँ आपकी सुबह किसी की ज़रूरत से नहीं, आपकी इच्छा से शुरू होगी।

* वह अध्याय जहाँ आप अपनी रुचियों, अपने शौक, अपनी आत्मा को फिर से पहचानेंगी।

अपना जीवन वापस लीजिए क्योंकि जीवन पति और बच्चों से बना अध्याय जरूर है, लेकिन पूरा जीवन नहीं।

आपकी कहानी अभी खत्म नहीं हुई है। आप अभी भी अपने जीवन की लेखिका हैं और यह अध्याय — सबसे साहसी, सबसे सच्चा और सबसे सुंदर हो सकता है।

अपना जीवन वापस लीजिए, क्योंकि अब आपकी बारी है।

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

मुलैठी एक अत्यंत उपयोगी और बहुप्रचलित औषधीय पौधा है, जिसका प्रयोग आयुर्वेद में हजारों वर्षों से किया जा रहा है

आयुर्वेदिक ग्रंथों में इसे यष्टिमधु कहा गया है, जिसका अर्थ है "मीठी जड़"। इसकी जड़ में प्राकृतिक रूप से मधुर स्वाद होता है और यही जड़ औषधीय रूप से सबसे अधिक उपयोगी मानी जाती है। मुलैठी का वैज्ञानिक नाम ग्लाइसीर्रिजा ग्लबरा है। यह पौधा मुख्य रूप से ठंडी और शुष्क जलवायु में अच्छी तरह विकसित होता है। भारत में यह विशेष रूप से पंजाब, हरियाणा और राजस्थान के कुछ हिस्सों में उगाई जाती है, जबकि भारत के बाहर ईरान, अफगानिस्तान और मध्य एशिया के देशों में भी इसकी खेती प्रचलित है। वनस्पति विज्ञान और ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार इसका मूल उद्गम क्षेत्र ईरान, अफगानिस्तान, तुर्की, कज़ाख़स्तान, उज़्बेकिस्तान और आसपास का मध्य एशियाई इलाका। यहाँ की ठंडी-शुष्क जलवायु और हल्की दोमट मिट्टी में मुलैठी प्राकृतिक रूप से उगती थी। बाद में व्यापार मार्गों और सभ्यताओं के विस्तार के साथ यह पौधा अन्य क्षेत्रों तक पहुँचा। मिस्र में फिरौन तूतनखामुन (लगभग 1350 ईसा पूर्व) की कब्र में मुलेठी की जड़ें मिली थीं, जो इसके प्राचीन उपयोग को दर्शाती हैं।

मुलैठी की बुवाई के लिए अक्टूबर–नवंबर या फरवरी–मार्च का समय सबसे उपयुक्त माना जाता है। यह एक धीमी गति से बढ़ने वाला पौधा है, इसलिए इससे तुरंत परिणाम की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। इसकी औषधीय जड़ पूरी तरह विकसित होने में लगभग 2 से 3 वर्ष का समय लेती है। यही कारण है कि अच्छी गुणवत्ता वाली मुलैठी को काफी मूल्यवान माना जाता है। औषधीय गुणों की बात करें तो मुलैठी के फायदे भी अनेक हैं।

सेवन का सही तरीका और मात्रा मुलैठी का सेवन हमेशा सीमित मात्रा में और सही विधि से करना चाहिए। आमतौर पर सूखी मुलैठी की जड़ का चूर्ण उपयोग में लिया जाता है। वयस्क व्यक्ति के लिए इसकी सुरक्षित मात्रा 250–500 मिलीग्राम दिन में 1–2 बार मानी जाती है। इसे गुनगुने पानी, शहद या दूध के साथ लिया जा सकता है। खांसी, गले की खराश या आवाज बैठने की समस्या में मुलैठी का छोटा टुकड़ा मुंह में रखकर धीरे-धीरे चूसना भी लाभकारी होता है। पेट की जलन या एसिडिटी में मुलैठी का चूर्ण पानी या ठंडे दूध के साथ लेना अधिक प्रभावी माना जाता है। लंबे समय तक लगातार सेवन करने से पहले कुछ दिनों का अंतर देना उचित रहता है।

काढ़ा मुलैठी का काढ़ा सर्दी-खांसी, जुकाम और गले के संक्रमण में बहुत उपयोगी होता है। इसके लिए 1 छोटा टुकड़ा मुलैठी, थोड़ी सी सौंठ या अदरक और 1–2 तुलसी के पत्ते पानी में उबालकर छान लें। इस काढ़े को दिन में एक बार लेने से आराम मिलता है। इसके अलावा, पेट दर्द या गैस की समस्या में मुलैठी को सौंफ के साथ उबालकर पीना भी लाभ देता है। त्वचा के लिए मुलैठी पाउडर को गुलाब जल या दही में मिलाकर फेस पैक के रूप में लगाया जा सकता है, जिससे त्वचा की सूजन और दाग-धब्बे कम होते हैं।

इम्यूनिटी और कमजोरी के लिए मुलैठी शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को धीरे-धीरे मजबूत करती है। बदलते मौसम में होने वाले संक्रमण से बचाव में यह सहायक मानी जाती है। जो लोग बार-बार सर्दी-खांसी, थकान या कमजोरी महसूस करते हैं, उनके लिए सीमित मात्रा में मुलैठी का सेवन लाभकारी हो सकता है। आयुर्वेद में इसे बलवर्धक और रसायन गुणों वाला माना गया है, यानी यह शरीर को अंदर से पोषण देता है।

BP, डायबिटीज़ और हार्ट संबंधित बीमारी के लिए मुलैठी में मौजूद ग्लाइसिराइज़िन नामक तत्व अधिक मात्रा में लेने पर रक्तचाप बढ़ा सकता है। इसलिए हाई BP, हार्ट पेशेंट, किडनी रोगी और गर्भवती महिलाएं बिना वैद्य या डॉक्टर की सलाह के मुलैठी का नियमित सेवन न करें। डायबिटीज़ के मरीज सीमित मात्रा में और बिना शक्कर मिलाए इसका उपयोग कर सकते हैं, लेकिन लंबे समय तक लगातार सेवन से बचना चाहिए। यदि किसी को चक्कर, सूजन या BP बढ़ने जैसा महसूस हो तो तुरंत इसका सेवन बंद कर देना चाहिए।

कितने समय तक सेवन करें मुलैठी को आमतौर पर 4–6 सप्ताह से अधिक लगातार नहीं लेना चाहिए। इसके बाद कम से कम 2–3 सप्ताह का अंतर देना बेहतर रहता है। यह नियम खासकर उन लोगों के लिए जरूरी है जो इसे औषधि के रूप में रोज़ लेते हैं। जरूरत पड़ने पर छोटे अंतराल में दोबारा सेवन किया जा सकता है।

गमले में कैसे उगाये यदि आप चाहें तो मुलैठी को घर पर गमले में भी उगा सकते हैं। बीज से इसे उगाना थोड़ा कठिन होता है, इसलिए जड़ के टुकड़े से उगाना सबसे सरल और प्रभावी तरीका माना जाता है।

सही जड़ का चयन मुलैठी को उगाने के लिए सबसे पहले अच्छी गुणवत्ता वाली, ताज़ी और स्वस्थ मुलैठी की जड़ लें। जड़ सूखी, सड़ी हुई या बहुत पुरानी न हो। यदि जड़ पर छोटी-छोटी गांठें या नोड्स दिखें तो वह और भी बेहतर मानी जाती है, क्योंकि वहीं से नया पौधा निकलता है। जड़ को 3–4 इंच के टुकड़ों में काट सकते हैं।

जड़ को भिगोना रोपण से पहले जड़ के टुकड़ों को 8–10 घंटे सादे पानी में भिगो दें। इससे जड़ नरम हो जाती है और अंकुरण जल्दी होता है। चाहें तो पानी में थोड़ा सा गोमूत्र या जीवामृत मिला सकते हैं, इससे फंगल संक्रमण की संभावना कम होती है।

गमले और मिट्टी की तैयारी

* मुलैठी की जड़ गहरी फैलती है, इसलिए गमला गहरा होना बहुत जरूरी है।
* कम से कम 12–15 इंच गहरा और चौड़ा गमला लें
* मिट्टी का मिश्रण हल्का, भुरभुरा और पानी निकालने वाला होना चाहिए:
* 40% बगीचे की सामान्य मिट्टी
* 30% सड़ी हुई गोबर की खाद या वर्मीकम्पोस्ट
* 20% मोटी रेत
* 10% कोकोपीट
* गमले के नीचे ईंट के टुकड़े या कंकड़ डाल दें, ताकि जल निकासी अच्छी रहे।

जड़ का रोपण कैसे करें अब गमले में तैयार मिट्टी भरें और मुलैठी की जड़ को आड़ा रखकर 2–3 इंच गहराई पर रखें। ऊपर से हल्की मिट्टी डालकर दबा दें। ध्यान रखें कि मिट्टी बहुत ज्यादा सख्त न हो, ताकि अंकुर आसानी से बाहर आ सके।

पानी देने का सही तरीका रोपण के तुरंत बाद हल्का पानी दें, जिससे मिट्टी बैठ जाए। इसके बाद रोज़ पानी न दें।

* जब ऊपर की मिट्टी सूखी लगे तभी पानी दें।
* मुलैठी को ज्यादा पानी बिल्कुल पसंद नहीं है, पानी जमा होने से जड़ सड़ सकती है।

धूप और स्थान

* मुलैठी को बहुत तेज धूप की आवश्यकता नहीं होती।
* 4–6 घंटे की हल्की धूप या सुबह की धूप सबसे अच्छी रहती है।* बहुत तेज गर्मी में गमले को हल्की छाया में रखें।

शुरुआती अंकुरण और वृद्धि लगभग 15–30 दिनों में मिट्टी के ऊपर से हरे अंकुर निकलने लगते हैं। शुरुआत में पौधा धीमी गति से बढ़ता है, इसलिए धैर्य रखें। पहले साल पौधे की ऊपरी बढ़वार कम और जड़ का विकास ज्यादा होता है।

खाद कब और कितनी दें

* रोपण के 30–40 दिन बाद:-
* 2–3 मुट्ठी वर्मीकम्पोस्ट या
* 1 चम्मच सरसों की खली (भिगोकर)
* बहुत अधिक खाद देने से पत्ते तो बढ़ जाएंगे लेकिन जड़ कमजोर रह सकती है।

कीट और रोग से बचाव मुलैठी में आमतौर पर ज्यादा कीट नहीं लगते, फिर भी सुरक्षा के लिए:-

* 15 दिन में एक बार नीम तेल का हल्का छिड़काव करें।
* जलभराव से हमेशा बचाएं।

जड़ कब निकालें मुलैठी की असली औषधीय जड़ 2–3 साल बाद पूरी तरह तैयार होती है। जब पौधा पुराना हो जाए और पत्तियां कम होने लगें, तब सर्दियों में जड़ निकालना सबसे अच्छा रहता है।

मुलैठी को कैसे सुखाएं और सुरक्षित रखें जब मुलैठी की जड़ निकाल ली जाए, तो उसे साफ पानी से धोकर छोटे टुकड़ों में काट लें। इन्हें तेज धूप में नहीं बल्कि छाया और हवादार स्थान पर सुखाना चाहिए, ताकि इसके औषधीय गुण सुरक्षित रहें। पूरी तरह सूख जाने पर इसे एयरटाइट डिब्बे में रखें। सही तरीके से संग्रहित मुलैठी 1–2 साल तक खराब नहीं होती।

पनीर की सब्जी अलग अलग स्वाद, एक बार खाओगे तो फिर हमेशा

सभी की विस्तृत रेसिपी नीचे लिखी हुई हैं।

1. पनीर टिक्का मसाला

सामग्री: पनीर टिक्का के लिए:
- 250 ग्राम पनीर, क्यूब्स में कटा हुआ
- 1/2 कप दही
- 1 बड़ा चम्मच नींबू का रस
- 1/2 चम्मच जीरा पाउडर
- 1/2 चम्मच गरम मसाला पाउडर
- 1/2 चम्मच लाल मिर्च पाउडर
- 1/4 चम्मच हल्दी पाउडर
- 1/4 चम्मच काली मिर्च पाउडर
- 1 बड़ा चम्मच बेसन
- नमक स्वादानुसार
- 2 बड़े चम्मच तेल

सामग्री, मसाला ग्रेवी के लिए:
- 2 बड़े चम्मच तेल
- 1 बड़ा प्याज, बारीक कटा हुआ
- 2 हरी मिर्च, बारीक कटी हुई
- 1 बड़ा चम्मच अदरक-लहसुन का पेस्ट
- 1 बड़ा चम्मच टमाटर प्यूरी
- 1 बड़ा चम्मच क्रीम
- 1 चम्मच गरम मसाला पाउडर
- 1 चम्मच जीरा पाउडर
- 1/2 चम्मच लाल मिर्च पाउडर
- नमक स्वादानुसार
- ताजा धनिया, बारीक कटा हुआ (गार्निश के लिए)

विधि:

1. पनीर टिक्का बनाने के लिए, एक बाउल में दही, नींबू का रस, जीरा पाउडर, गरम मसाला पाउडर, लाल मिर्च पाउडर, हल्दी पाउडर, काली मिर्च पाउडर और नमक मिलाएं।
2. इस मिश्रण में पनीर के क्यूब्स डालें और अच्छी तरह मिलाएं।
3. एक पैन में तेल गरम करें और पनीर के क्यूब्स को सुनहरा होने तक तलें।
4. मसाला ग्रेवी बनाने के लिए, एक पैन में तेल गरम करें और प्याज, हरी मिर्च को भुनें।
5. अदरक-लहसुन का पेस्ट डालें और भुनें।
6. टमाटर प्यूरी और क्रीम डालें और अच्छी तरह मिलाएं।
7. गरम मसाला पाउडर, जीरा पाउडर, लाल मिर्च पाउडर और नमक डालें और मिलाएं।
8. तले हुए पनीर के क्यूब्स को मसाला ग्रेवी में डालें और अच्छी तरह मिलाएं।
9. गरम परोसें और ताजा धनिया से गार्निश करें।

परोसने का तरीका: पनीर टिक्का मसाला को गरम परोसें और नान, राइस या रोटी के साथ परोसें

2. लज़ीज़ स्वादिष्ट पनीर रजवाड़ी

सामग्री-
- 250 ग्राम पनीर (भारतीय पनीर)
- 2 बड़े प्याज, बारीक कटे हुए
- 2 लहसुन की कलियाँ, बारीक कटी हुई
- 1 बड़ा टमाटर, कटा हुआ
- 1 छोटा चम्मच अदरक का पेस्ट
- 1 छोटा चम्मच जीरा
- 1 छोटा चम्मच धनिया पाउडर
- 1 छोटा चम्मच गरम मसाला पाउडर
- 1/2 छोटा चम्मच हल्दी पाउडर
- 1/2 छोटा चम्मच लाल मिर्च पाउडर
- 1/2 छोटा चम्मच नमक
- 2 बड़े चम्मच मक्खन
- 2 बड़े चम्मच हैवी क्रीम
- 1 बड़ा चम्मच टमाटर प्यूरी
- सजाने के लिए ताज़ा हरा धनिया

निर्देश-

1. एक पैन में मक्खन गरम करें, जीरा डालें और उसे चटकने दें।
2. कटे हुए प्याज डालें और सुनहरा भूरा होने तक भूनें।
3. कटा हुआ लहसुन और अदरक का पेस्ट डालें; 1 मिनट तक पकाएँ।
4. कटे हुए टमाटर, धनिया पाउडर, गरम मसाला, हल्दी, लाल मिर्च पाउडर और नमक डालें। टमाटर के नरम होने तक पकाएँ।
5. टमाटर प्यूरी और हैवी क्रीम डालें और अच्छी तरह मिलाएँ।
6. पनीर के टुकड़े डालें और 5-7 मिनट तक या पनीर के स्वाद सोख लेने तक पकाएँ।
7. ताज़ा हरा धनिया डालकर नान या चावल के साथ परोसें!

3. मसालेदार पनीर अंगारा

सामग्री-
250 g पनीर
1 प्याज़ बारीक कटा हुआ
4 हरी मिर्च बारीक कटी हुई
5–6 लहसुन बारीक कटा हुआ
1 टुकड़ा अदरक बारीक काटा हुआ
3 टमाटर का पेस्ट
1/2 चम्मच जीरा
1/4 चम्मच हल्दी पाउडर
1/2 चम्मच लाल मिर्च पाउडर
1 चम्मच धनिया पाउडर
नमक स्वादानुसार
1 चम्मच मक्खन
2 चम्मच घी/ तेल
1/2 कप ताजा क्रीम
2 चम्मच पनीर मसाला
1 चम्मच टमाटर सॉस
1 चम्मच भुनी हुई कसूरी मेथी

विधि-

* एक कढ़ाई में बटर और घी/तेल डाल कर गरम करें।
* जीरा, बारीक कटा लहसुन और अदरक डाल के भुने।
* बारिक कटी हरी मिर्च मिला दे। अब प्याज़ डाल कर भूनें।
* प्याज भून जाने पर टमाटर का पेस्ट मिला दे और
* सभी सूखे मसाले, कसूरी मेथी, नमक मिला दे।
* पनीर मसाला और टमाटर सॉस भी मिला दे।
* कवर कर के 5 मिनट पकाये।
* क्रीम डाल कर कुछ देर और पकाएं।
* पनीर के टुकड़े मसाले में मिलाये।
* 1/2 कप पानी मिलाए और 2 मिनट ढक कर सारा मसाला पनीर मे मिलने तक पकाये।
* हरे धनिये से गार्निश करें।

4. पालक खड़ा मसाला

सामग्री-
2 कटोरी कटी हुई पालक
1/2 कप पनीर
1/2 कटोरी ताजी क्रीम
2 चाय चम्मच देसी घी
1 चम्मच साबुत खड़ा मसाला (लंबी, काली मिर्च, जयफल, दालचीनी, बड़ी इलायची, तेज पत्ता आदि)
नमक
4 हरी मिर्च
1 चम्मच अदरक लहसुन का पेस्ट
1/2 चम्मच जीरा
पनीर

रेसिपी -

* पैन में पानी गरम करें और पालक को 5 मिनट तक उबालें।
* अच्छे से ठंडे पानी से धोकर पालक और हरी मिर्च को मिक्सर में ब्लेंड कर लें।
* पैन में 1 चम्मच घी गरम करें खड़ा मसाला दाल दे.
* अदरक लहसुन का पेस्ट दाल पकाए..
* पालक पेस्ट डालें और अच्छे से मिक्स करें.
* 5 मिनट पकाए.
* मेश पनीर डालें और 5 मिनट और पकाए.
* नमक और ताज़ी क्रीम डालें और अच्छे से मिलाएँ।
* 2 मिनट पकाएँ और गैस बंद कर दें...
* अलग पैन में 1 चम्मच घी गरम करें और जीरा डालें..
* 1/2 चम्मच लाल मिर्च पाउडर डालें और तड़का लगा दे।
* पनीर डाल के कुछ देर ढक दे। तैयार,

5. चटपटे मसालेदार छोले पनीर

सामग्री-
1 कप 8 -10 घंटे भीगा काबुली चना (छोले)
1 कप कटा हुआ पनीर
1 प्याज बारीक कटा हुआ
3 टमाटर
2 -3 हरी मिर्च
1 टुकड़ा अदरक
1 चम्मच जीरा
साबुत गरम मसाला
हींग
1/4 चम्मच हल्दी पाउडर
1/2 चम्मच लाल मिर्च पाउडर
1 चम्मच धनिया पाउडर
नमक स्वाद के अनुसार
1/2 चम्मच गरम मसाला
1/2 चम्मच चना मसाला
2 बडे चम्मच तेल
2 बडे चम्मच क्रीम
हरा धनियां

रेसिपी -

* छोले को 2 कप पानी, थोड़ा नमक के साथ 4-5 सिटी आने तक उबाल लें और
* गैस सिम पर 10 मिनट तक पकाएं।
* टमाटर, हरी मिर्च और अदरक का पेस्ट बना ले।
* पैन में तेल गरम करें और जीरा, साबुत गरम मसाला और हिंग डाले।
* प्याज़ पकाए और हल्दी, मिर्ची और धनिया पाउडर, चना मसाला मिला के पकाए।
* टमाटर, मिर्ची और अदरक का पेस्ट मिला दे।
* तेल ऊपर आने तक मसाला पकाए और छोले मिला दे।
* 10 मिनट पकाए।
* पनीर और क्रीम मिलाए और 5 मिनिट ओर पकने दे।
* गरम मसाला, नमक मिला दे और हरे धनिये से गार्निश करे

6. बटर पनीर मसाला

सामग्री-
200 ग्राम पनीर
2 बड़े चम्मच मक्खन
1 चम्मच अदरक लहसुन का पेस्ट
1 तेज पत्ता
3 - 4 हरी मिर्च
2 टमाटर
1 प्याज
1/2 चम्मच लाल मिर्च पाउडर
1/2 चम्मच गरम मसाला
1/4 चम्मच हल्दी पाउडर
कटा हुआ हरा धनिया
1/2 कप काजू
1 बड़ा चम्मच फ्रेश क्रीम
नमक स्वादानुसार
1 छोटा चम्मच चीनी
1चम्मच कसूरी मेथी

विधि -

* मिक्सर में टमाटर, प्याज़ और हरी मिर्च बारीक़ पीस लें।
* काजू को गरम पानी में 15 मिनट तक भीगो दे।
* काजू को भी मिक्सर में पीस ले।
* कड़ाही में मक्खन गरम करे।
* इसमें तेज पत्ता और अदरक लहसुन और प्याज़ का पेस्ट डाल कर भुने।
* टमाटर का पेस्ट डालकर 2-3 मिनट तक पकने दे।
* हल्दी पाउडर, लाल मिर्च पाउडर डालकर पकाये।
* इसमें काजू का पेस्ट डालकर पकाये।
* अब धनिया पाउडर, गरम मसाला पाउडर, चीनी, नमक और क्रीम डालकर थोड़ी देर तक धीमी आंच पर पकने दे।
* अच्छे से मसाला पकने तक पकाये।
* पनीर मिलाये और 5 मिनट तक पकाये
* कसूरी मेथी डालकर गैस बंद कर दें।
* सर्व करते समय एक पीस पनीर को तवे पर बटर से साथ सेक कर ताजी क्रीम से गार्निश करते हुए सर्व करें।

7. चटाखेदार पनीर की सब्जी - पनीर तूफ़ानी

सामग्री-
200 g पनीर
1 प्याज़
4 हरी मिर्च
5–6 लहसुन बारीक कटा हुआ
1 टुकड़ा अदरक बारीक काटा हुआ
3 टमाटर का पेस्ट
1/2 चम्मच जीरा
1/4 चम्मच हल्दी पाउडर
1/2 चम्मच लाल मिर्च पाउडर
1 चम्मच धनिया पाउडर
नमक स्वादानुसार
1 चम्मच मक्खन
2 चम्मच घी/ तेल
1/2 कप ताजा क्रीम
2 चम्मच पाव भाजी मसाला
1 चम्मच टमाटर सॉस

विधि

* एक कढ़ाई में बटर और घी/तेल डाल कर गरम करे।
* जीरा, बारीक कटा लहसुन और अदरक डाल के भुने।
* बारिक कटी हरी मिर्च मिला दे।
* अब प्याज़ का पेस्ट डाल कर भुने।
* पेस्ट भुन जाने पर टमाटर का पेस्ट मिला दे और
* सभी सूखे मसाले मिला दे।
* पाव भाजी मसाला और टमाटर सॉस भी मिला दे।
* कवर कर के 5 मिनट पकाये।
* क्रीम डाल कर कुछ देर और पकाएं।
* 50 g पनीर कद्दूकस कर के मसाले में डाल कर अच्छे से मिलाये।
* बाकी पनीर के पीस कर के मिला दे।
* 2 मिनट सारा मसाला पनीर मे मिलने तक पकाये। पनीर तूफानी तैयार।

8. स्वादिष्ट पालक पनीर

सामग्री -
200 g कटा हुआ पालक
200 g कटा हुआ पनीर
1 बारिक कटा प्याज़
2 बड़े चम्मच देसी घी /तेल
1 चम्मच साबुत खड़ा मसाला (लौंग, काली मिर्च, जायफल, दालचीनी, बड़ी इलायची, तेज पत्ता आदि)
नमक स्वादानुसार
4 हरी मिर्च
1 चम्मच अदरक लहसुन का पेस्ट
1/2 चम्मच जीरा
1/2 चम्मच लाल मिर्च पाउडर

रेसिपी -

* पैन में पानी गरम करें और पालक को 1 मिनट तक गरम पानी में डुबो के निकाल ले और ठंडे पानी में कुछ देर डुबो दे।
* पालक और हरी मिर्च को मिक्सर में ब्लेंड कर ले.
* पैन में 1 चम्मच घी गरम करें.
* खड़ा मसाला डाले.
* अदरक लहसुन का पेस्ट पकाए..
* बारिक कटा प्याज़ डाल कर पकाये.
* पालक पेस्ट डालें और अच्छे से मिक्स करें.
* 5 मिनट पकाए.
* पनीर डालें और 5 मिनट और पकाए.
* नमक डालें और अच्छे से मिलाएँ।
* 2 मिनट पकाएँ और गैस बंद कर दें
* अलग पैन में 1 चम्मच घी गरम करें और जीरा डालें..
* 1/2 चम्मच लाल मिर्च पाउडर डालें और पालक में तड़का लगा दें .पालक पनीर तैयार

9. मलाईदार पनीर महारानी

सामग्री-
- 250 ग्राम पनीर, क्यूब्स में कटा हुआ
- 2 बड़े प्याज, बारीक कटे हुए
- 2 लहसुन की कलियाँ, बारीक कटी हुई
- 1 बड़ा टमाटर, कटा हुआ
- 1 छोटा चम्मच जीरा
- 1 छोटा चम्मच धनिया पाउडर
- 1 छोटा चम्मच गरम मसाला पाउडर
- 1/2 छोटा चम्मच हल्दी पाउडर
- 1/2 छोटा चम्मच लाल मिर्च पाउडर (वैकल्पिक)
- 1/2 कप हैवी क्रीम या मलाई
- 1/4 कप मक्खन या घी
- स्वादानुसार नमक
- सजाने के लिए ताज़ा हरा धनिया

निर्देश-

1. एक पैन में मक्खन/घी गरम करें, जीरा डालें और उसे चटकने दें।
2. कटे हुए प्याज डालें और सुनहरा भूरा होने तक भूनें।
3. कटा हुआ लहसुन डालें और एक मिनट तक भूनें।
4. कटे हुए टमाटर, धनिया पाउडर, गरम मसाला पाउडर, हल्दी पाउडर और लाल मिर्च पाउडर (अगर इस्तेमाल कर रहे हों) डालें। टमाटर के नरम होने तक पकाएँ।
5. पनीर के टुकड़े डालें और 2-3 मिनट तक पकाएँ।
6. गाढ़ी क्रीम/मलाई डालें और अच्छी तरह मिलाएँ। इसे 5-7 मिनट तक या ग्रेवी के गाढ़े होने तक धीमी आँच पर पकने दें।
7. स्वादानुसार नमक डालें।
8. ताज़ा हरा धनिया डालकर नान, चावल या रोटी के साथ परोसें।

अद्भुत बाल लीला: जब नटखट कन्हैया बने गर्गाचार्य के नारायण!

पिंकी कुंडू

गोकुल के नंदभवन में आज एक अनोखी लीला रची गई। कुलगुरु गर्गाचार्य जी पधारे थे।

उन्होंने बड़े ही नियम और प्रेम से, केसर-इलायची की सुगंध वाली खीर अपने इष्टदेव श्रीहरि नारायण के लिए बनाई। लेकिन, इधर थाल सजा नहीं, और उधर मौका पाते ही हमारे माखनचोर कन्हैया ने वह प्रेम-भरी खीर चट कर दी!

मैया यशोदा को जब यह पता चला, तो वे तमतमा उठीं। लला को डांटते हुए बोलीं, ₹अरे ओ नटखट! तुझे घर में खाने को कम पड़ता है, जो गुरुजी की खीर झूठी कर दी?₹ कन्हैया ने बड़ी मासूमियत से अपनी बड़ी-बड़ी आँखें नचाते हुए तर्क दिया, ₹मैया, तू नाहक ही मुझे डांटती है। महाराज ने ही तो पुकारा था — आइए, भोग लगाइये!"

'मैं ही तो नारायण हूँ!' गर्गाचार्य जी हैरान होकर बोले, "लाला, मैंने तुझे नहीं, वैकुंठवासी नारायण को आह्वान किया था।" कन्हैया ने तुरंत अपनी बाल-सुलभ चपलता से कहा, "तो बाबा, मैं ही तो हूँ वो वैकुंठवासी नारायण!"

मैया ने बात हँसी में उड़ा दी, "चल झूठा! नारायण के तो चार हाथ होते हैं, तेरे कहाँ हैं?" वात्सल्य में डूबी माँ को तो बस अपना दो हाथों वाला, ठुमक-ठुमक चलने वाला लला ही प्यारा था, उन्हें विराट रूप से क्या लेना-देना?

हारकर गर्गाचार्य जी ने फिर से खीर बनाई। आजपवित्र तुलसीदल डाला, आँखें मूँदीं और व्याकुल होकर प्रार्थना की— "हे लक्ष्मीपति! अब तो पधारिये और भोग स्वीकार कीजिये।" इधर कन्हैया ने अपनी योगमाया का खेल रचा और मैया को गहरी नींद में सुला दिया। मैया के सोते ही वे फिर दौड़ पड़े खीर की ओर! भक्त ब्राह्मण की व्याकुलता देख, अंततः भक्तवत्सल भगवान ने अपनी बाल-लीला समेटी।

अचानक कुटिया में एक अलौकिक तेज फैल गया। नन्हें कन्हैया की जगह शंख-चक्र-गदा-पद्मधारी साक्षात चतुर्भुज नारायण मंद-मंद मुस्कुरा रहे थे! उन्होंने कहा— "महाराज! आप जिस नारायण को पुकार रहे थे, वह मैं ही हूँ। आपकी तपस्या सफल हुई।"

गर्गाचार्य जी की आँखों से अविरल प्रेमाश्रु बह निकले, वे सुध-बुध खो बैठे। तभी वह विराट ब्रह्म फिर से छोटा सा बालक बनकर उनकी गोद में आ बैठा और अपनी तोतली बोली में कहा, "महाराज, अब आप तो भोजन कर लीजिये।"

भक्त का हृदय भर आया, वे गदगद होकर बोले, "प्रभु! आज मैं अपने हाथ से नहीं खाऊँगा। जब मेरे इष्टदेव अपने इन नन्हें-नन्हें हाथों से मेरे मुँह में कौर रखेंगे, तभी मैं यह महाप्रसाद ग्रहण करूँगा।"

विश्वास रखिए, क्योंकि जब विश्वास जागता है— तो जीवन खुद रास्ता बना लेता है।

पिंकी कुंडू

जीवन में हर किसी को
* -एक बार वनवास मिलता है।
* -एक बार अग्निपरीक्षा देनी पड़ती है।
* -एक बार लंका पार करनी पड़ती है।

लेकिन अंत में जीतता वही है जिसके मन में जीत का विश्वास होता है।

विश्वास—-एक ऐसा शब्द, जो दिखाई नहीं देता, पर उसी से जीवन की दिशा तय होती है। रामायण कोई केवल युद्ध की कथा नहीं है। रामायण दरअसल विश्वास की परीक्षा है। जब श्रीराम को 14 वर्षों का वनवास मिला—
* क्या उनके पास विकल्प नहीं था?
* राजा दशरथ चाहते तो आदेश बदल सकते थे।
* अयोध्या चाहती तो विद्रोह कर सकती थी।

लेकिन श्रीराम ने क्या चुना?
* धर्म पर विश्वास,
* उन्होंने सत्ता नहीं चुनी,
* उन्होंने सुविधा नहीं चुनी,
* उन्होंने तर्क नहीं चुना—

उन्होंने विश्वास चुना। और यही विश्वास उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम बनाता है।

आज का मनुष्य भी एक वनवास से गुजर रहा है
* कोई रिश्तों में ठगा गया है,
* कोई करियर में टूट गया है,
* कोई अपनों से हार गया है, तो कोई खुद से।

हम कहते हैं—"मेरे साथ ही ऐसा क्यों?" "भगवान ने मेरे साथ ऐसा क्यों किया?" पर रामायण हमें सिखाती है— भगवान परीक्षा तब लेते हैं, जब वे आपको आगे ले जाना चाहते हैं।

सीता माता को देखिए अशोक वाटिका में कैद, चारों ओर भय, अपमान, अकेलापन।
* क्या उनके पास कारण नहीं था टूट जाने का?
* क्या उनका विश्वास कमजोर नहीं पड़ सकता था?

पर उन्होंने किस पर विश्वास रखा?
* अपने राम पर
* अपने सत्य पर
* अपने धर्म पर।

और वही विश्वास उन्हें शक्ति बना देता है— पीड़िता नहीं।

आज हम भी अशोक वाटिका में हैं हमारी वाटिका का नाम है— डिप्रेशन, अकेलापन, असफलता, उपेक्षा।

लेकिन प्रश्न यह नहीं है कि आप किस हालात में हैं, प्रश्न यह है— आप किस पर विश्वास कर रहे हैं? डर पर? या धर्म पर?

हनुमान जी को देखिए समुद्र विशाल था, सामर्थ्य पर संदेह था लेकिन जामवंत जी ने क्या किया? उन्होंने विश्वास जगाया। "तुम कर सकते हो।" और जैसे ही हनुमान जी को खुद पर विश्वास हुआ, समुद्र छोटा हो गया। आज हर इंसान को एक जामवंत चाहिए लेकिन सच यह है - आपको खुद ही अपना जामवंत बनना होगा, खुद से कहना होगा—
* "मैं कर सकता हूँ।"
* "मैं टूटने के लिए नहीं बना।"
* "मेरा जीवन अभी खत्म नहीं हुआ।"

अवचेतन मन वही स्वीकार करता है, जिस पर आप बार-बार विश्वास करते हैं। रामायण भी यही कहती है — मन ही युद्धभूमि है, युद्ध बाहर नहीं, भीतर होता है। रावण बाहर नहीं बैठा। रावण हमारे भीतर है — अहंकार, डर, क्रोध, लोभ के रूप में और राम भी भीतर हैं — धैर्य, विश्वास और धर्म के रूप में।

* जीवन में हर किसी को एक बार वनवास मिलता है
* एक बार अग्निपरीक्षा देनी पड़ती है
* एक बार लंका पार करनी पड़ती है।

लेकिन अंत में वही जीतता है जो कहता है—"मैं परिस्थिति नहीं हूँ, मैं अपना विश्वास हूँ।" अगर आज सब कुछ डगमगा रहा है, तो घबराइए मत। यह अंत नहीं है। यह वही क्षण है, जहाँ से रामायण शुरू होती है।

श्री और समृद्धि देता है एकाक्षी नारियल (श्रीफल)

पिंकी कुंडू

हमारी सनातन पूजा पद्धति में श्रीफल अर्थात नारियल का विशेष महत्व है। हिन्दू धर्म की कोई भी पूजा बिना श्रीफल अर्पण के पूर्ण नहीं होती। चाहे वह प्रसाद रूप में हो या भेंट के रूप में, श्रीफल का हमारी पूजा पद्धति में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि सभी नारियल श्रीफल नहीं होते केवल एकाक्षी नारियल ही श्रीफल होता है।

'श्री' अर्थात लक्ष्मी, 'एकाक्षी नारियल' को साक्षात लक्ष्मी का रूप माना गया है। यह अत्यन्त दुर्लभ होता है। सैंकड़ों-हजारों नारियलों में कोई एक श्रीफल होता है। एकाक्षी नारियल अर्थात श्रीफल जिसके भी पास होता है उस पर सदैव लक्ष्मी की कृपा बनी रहती है। उसे जीवन में कभी आर्थिक संकटों का सामना नहीं करना पड़ता। एकाक्षी नारियल को तोड़ना अशुभ होता है।

सामान्य नारियल की आकृति में तीन छिद्र दिखाई देते हैं जिन्हें प्रचलित भाषा में दो आंखें व एक मुख कहा जाता है। ध्यान से देखने पर आपको नारियल में तीन खड़ी रेखाएं भी दिखाई देती हैं किन्तु एकाक्षी नारियल अर्थात श्रीफल में केवल दो छिद्र होते हैं। जिन्हें एक मुख व एक आँख कहा जाता है। जैसा कि नाम से स्पष्ट है एकाक्षी अर्थात एक आँख वाला।

एकाक्षी नारियल में तीन के स्थान पर केवल दो रेखाएं ही होती हैं। एकाक्षी नारियल प्राप्त होने पर विशेष मुहूर्तों जैसे दीपावली, होली, रवि-पुष्य, गुरु-पुष्य, ग्रहण काल आदि पर षोडषोपचार पूजा कर उसे लाल रेशमी वस्त्र में बांधकर अपने व्यापारिक प्रतिष्ठान या तिजोरी में रखने या पूजा स्थान में रखने से सदैव लक्ष्मी की कृपा बनी रहती है। एकाक्षी नारियल में धन आकर्षण की अद्भुत क्षमता होती है।

कैसे करें एकाक्षी नारियल की पूजा विधि - स्नान आदि करके साफ़ वस्त्र धारण कर पूर्व या उत्तर दिशा की और मुँह कर लाल उनी आसन पर बैठ जाय अपने सामने लकड़ी की चौकी पर सवा मीटर लाल वस्त्र बिछाये ! अब बाजोट पर बिछे वस्त्र के मध्य में सवा किलो गेंहू की ढेरी बनाये ! एकाक्षी नारियल को गंगाजल से शुद्ध कर दे और सिंदूर को गाय के घी में मिला कर लेप बना ले और इस लेप को नारियल में अछी तरह लेपित कर दे , बाद में चारो तरफ चाँदी का वर्क लगा दे ! अब इस नारियल को गेंहू की ढ़ेरी के ऊपर स्थान दे ! अब सर्व प्रथम आचमन - पवित्रीकरण आदि क्रिया के बाद दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करे कि .... मैं..... पुत्र श्री .....गोत्र .....का साधक आज 2076 परिधावी नामक संवत्सर के माघ माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी तिथि दिन गुरूवार (दिन जो भी हो) को पुष्य नक्षत्र में, मैं अपनी आर्थिक उन्नति - वयपार उन्नति धन -धान्य यश -पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति के उद्देश से अपने निवास स्थान में चिरकाल तक एकाक्षी नारियल की स्थापना कर रहा हु , आपसे यह प्रार्थना करता हु कि आप मेरे यहाँ विराजे और अपनी सम्पूर्ण कृपा प्रदान करे !

संकल्प करने के बाद हाथ में लिया जल भूमि पर छोड़ दे , तत्पश्चात गणेश - गौरी का पूजन कर गुरु पूजन आदि संपन्न कर ले ! अब नारियल के समक्ष 11 गोमती चक्र , 11 सफ़ेद कौड़ी , 5 काली कौड़ी , 3 पीली हल्दी की गाठ रखे ! नारियल एवं समस्त सामग्री पर आम पल्लव से गंगाजल से स्नान कराये , सभी पर रोली - हल्दी - चन्दन का तिलक करे , अक्षत ,लाल पुष्प अर्पित करे , तीव्र सुगन्ध वाली धुप लगाये .. घी का दीपक प्रज्वलित कर हाथ धोले और दूध से बनी मिठायी का भोग लगा कर एक पान पत्ते पर 2 लौंग - 2 इलायची और एक सुपारी रख कर अर्पित करे नारियल के समक्ष सामर्थ्यानुसार रूपए दक्षिणा के रूप में अर्पित करे ! अब पुनः अपनी प्रार्थना बोल कर स्फटिक माला या कमलगट्टे की माला से निम्न मंत्र का 5 माला जप करे !

मंत्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं एकाक्षीश्रीफलं भगवते विश्वरूपाय सर्वेश्वराय त्रैलोक्यनाथाय सर्वकार्य सिद्धिप्रदायके नमः

मंत्र जप पूर्ण होने के बाद कपूर द्वारा आरती करे और पूजा में हुई त्रुटियो की क्षमा प्रार्थना कर अपने आसन के नीचे जल डाल कर अपने मस्तक एवं नेत्रो में लगा कर पूजा से उठ जाय ! अब जब तक दीपक जलता रहे , तब तक सब कुछ ऐसे ही रहने दें ! दीपक ठंडा हो जाने के बाद एकाक्षी नारियल को श्रद्धापूर्वक घर के पूजास्थल में लाल वस्त्र के आसन पर स्थान दें ! कौड़ियो , गोमती चक्र और हल्दी की गाठ को एक अन्य लाल वस्त्र में रख कर पोटली का रूप दें और धन रखने के स्थान पर रख दें ! प्रसाद को परिवार के सदस्यो में वितरित कर दें ! दीपक को अलग कर के बाजोट के ऊपर रखीं समस्त सामग्री बिछे हुए लाल वस्त्र सहित उठा कर एक पोटली बना ले ! बाद में कुछ नगद दक्षिणा के साथ किसी ब्राह्मण या हिजड़े को दान कर दें !

ऐसा करने के उपरांत एकाक्षी नारियल अन्य कार्यो हेतु सिद्ध एवं प्रभावशाली माना जाता है ! इसलिए अब यह आपके लिए कार्यसिद्ध हेतु शुभप्रदाता हो जाएगा और ऐसे सिद्ध नारियल पर आप कोइ अन्य प्रयोग भी करना चाहे तो कर सकते है यह नारियल आप को पूर्ण लाभ प्रदान करेगा !

संघर्ष बहुत है, पर थकिए मत

पिंकी कुंडू

जीवन में कई बार ऐसा समय आता है जब व्यक्ति थक जाता है। संघर्ष लंबा हो जाता है। परिणाम देर से आते हैं और मन पूछता है — "क्या वाकई इसका कोई अर्थ है?"

ऐसे ही एक क्षण में यह बात याद रखिए कि कहीं कोई है, जिसे आपकी कहानी की ज़रूरत है। कहीं कोई है, जो आपको देख रहा है। आपकी हार को नहीं, आपके उठने को देख रहा है।

जब भगवान राम वनवास के लिए निकलते हैं, तो वह अकेले नहीं जा रहे होते।

* नगर के लोग देख रहे होते हैं — एक राजा का पुत्र, बिना विद्रोह, बिना शिकायत, सब कुछ छोड़ रहा है।

* भरत देख रहे होते हैं कि कैसे त्याग किया जाता है।

* लक्ष्मण देख रहे होते हैं —कैसे कर्तव्य निभाया जाता है और सबसे गहराई से,

* भविष्य की पीढ़ियाँ देख रही होती हैं —कि कठिन समय में मनुष्य कैसा आचरण करता है।

हनुमान जी जब समुद्र के सामने खड़े होते हैं, तो उन्हें यह नहीं पता होता कि वे अंत तक पहुँचेंगे या नहीं, उन्हें बस इतना पता होता है कि "रुकना विकल्प नहीं है।" वे छलांग लगाते हैं।

* बीच में मैनाक पर्वत आता है —विश्राम का निमंत्रण देता है।

* सुरसा आती है —परीक्षा लेती है।

* सिंहिका आती है —भय दिखती है।

पर हनुमानजी रुकते नहीं। क्यों? क्योंकि कहीं सीता माता हैं, जो प्रतीक्षा कर रही हैं।

क्योंकि किसी और के जीवन की आशा, उनकी गति पर निर्भर है।

आपकी कहानी भी किसी का सहारा है। आप सोचते होंगे —"मैं कौन हूँ? मेरी सफलता से किसे फर्क पड़ेगा?"

पर सच यह है —
*कोई युवा आपको देखकर हिम्मत कर रहा है
*कोई टूटा हुआ व्यक्ति आपके संघर्ष से शक्ति ले रहा है
*कोई यह सीख रहा है कि हार के बाद भी जीवन चलता है
*आपका आगे बढ़ना, किसी और के लिए प्रमाण है कि आगे बढ़ना संभव है।

रामायण जी यह कहती है कि "तुम कर्म करते रहो। तुम चलते रहो। फल समय पर मिलेगा।"

* राम जी ने वर्षों बाद विजय पाई।

* सीता माता ने धैर्य से अग्निपरीक्षा दी।

*हनुमान जी ने सेवा को पहचान नहीं, कर्तव्य माना।

*इसलिए जब मन थक जाए, तो यह मत सोचिए कि आप अकेले हैं, आप सोचे

* आपकी यात्रा किसी और का रास्ता रोशन कर रही है।

* आपका धैर्य — किसी और की ढाल है।

* आपका संघर्ष — किसी और की प्रेरणा है।

* आपका आगे बढ़ना — किसी और का विश्वास है।

चलते रहिए, रुकिए मत। क्योंकि कोई है, जो आपकी कहानी का इंतज़ार कर रहा है

स्वस्थ व प्रसन्न रहिए

चतुर्दशी को पीपल पर दूध चढ़ाया जाता है, जाने है क्यों?

पिंकी कुंडू

भारतीय परंपरा में पीपल के पेड़ को पूज्यनीय माना जाता है। वेदों में भी पीपल के पेड़ को पूज्य माना गया है। पीपल की छाया तप, साधना के लिए ऋषियों का प्रिय स्थल माना जाता था।महात्मा बुद्ध का बोधक्तनिर्वाण पीपल की घनी छाया से जुड़ा हुआ है। शास्त्रों के अनुसार पीपल में भगवान विष्णु का निवास माना गया है और विष्णु को पितृ के देवता माना गया है क्योंकि प्रसिद्ध ग्रन्थ व्रतराज की अश्वत्थोपासना में पीपल वृक्ष की महिमा का उल्लेख है।

इसमें अर्थवणऋषि पिप्पलादमुनि को बताते हैं कि प्राचीन काल में दैत्यों के अत्याचारों से पीड़ित समस्त देवता जब विष्णु के पास गए और उनसे कष्ट मुक्ति का उपाय पूछा, तब प्रभु ने उत्तर दिया-मैं अश्वत्थ के रूप में भूतल पर प्रत्यक्ष रूप से विद्यमान हूं। इसलिए यह मान्यता हैं विष्णु भगवान के स्वरूप पीपल को पितृ निमित्त जो भी चढ़ाया जाता है। उससे हमारे पूर्वजों को तृप्ति मिलती है। चौदस और अमावस्या पितृ के दिन माने जाते है इसलिए इस दिन पूर्वजों की तृप्ति के लिए पीपल को दूध और जल चढ़ाया जाता है।

मृतक का सिर दक्षिण दिशा की ओर ही क्यों रखना चाहिए एवं कपाल क्रिया का सच

पिंकी कुंडू

मृत देह को दक्षिणोत्तर क्यों रखते हैं?

जीव की प्रेतवत अवस्था, पंचप्राणों एवं उपप्राणों के स्थूल देह संबंधी कार्य की समाप्ति दर्शाती है। जिस समय जीव निष्प्राण हो जाता है, उस समय जीव के शरीर में तरंगों का वहन लगभग थम सा जाता है व उसका रूपांतर 'कलेवर' में होता है। 'कलेवर' अर्थात स्थूल देह की किसी भी तरंग को संक्रमित करने की असमर्थता दर्शाने वाला अंश। 'कलेवर' अवस्था में देह से निष्कासन योग्य सूक्ष्मवायुओं का वहन बढ जाता है। मृत देह को दक्षिणोत्तर रखने से कलेवर की ओर दक्षिणोत्तर में भ्रमण करने वाली यम तरंगें आकर्षित होती हैं और मृत देह के चारों ओर इन तरंगों का कोष तैयार हो जाता है। इससे मृत देह की निष्कासन योग्य सूक्ष्म वायुओं का अल्प कालावधि में विघटन होता है। निष्कासन योग्य सूक्ष्म वायुओं का कुछ भाग मृत देह की नासिका व गुदा (मलद्वार) से वातावरण में उत्सर्जित होता है। इस प्रक्रिया के कारण, निष्कासन योग्य रज-तमात्मक दूषित वायुओं से मृत देह मुक्त हो जाता है, जिससे वातावरण में संचार करने वाली अनिष्ट शक्तियों के लिए देह को वश में करना बहुत कठिन हो जाता है। इसीलिए मृतदेह को दक्षिणोत्तर रखा जाता है।

व्यक्ति की मृत्यु होने के उपरांत उस की देह घर में रखते समय उसके पैर दक्षिण दिशा की ओर क्यों करते हैं?

दक्षिण यम दिशा है। व्यक्ति का प्राणोत्क्रमण होते समय उसके प्राण यम दिशा की ओर खींचे जाते हैं। देह से प्राण बाहर निकलने के उपरांत अन्य निष्कासन-योग्य वायु का देह से उत्सर्जन प्रारंभ होता है। इस उत्सर्जन की तरंगों की गति तथा उनका आकर्षण/खींचाव भी अधिक मात्रा में दक्षिण दिशा की ओर होता है। व्यक्ति की कटि के निचले भाग से (कमर के नीचे का भाग) अधिक मात्रा में वासनात्मक तरंगों का उत्सर्जन होता रहता है, वह अधिक उचित पद्धति से हो, इसके लिए यम तरंगो के वास्तव्य वाली दक्षिण दिशा की ओर ही उस व्यक्ति के पैर रखने का शास्त्र है। ऐसा करने से यम तरंगों की सहायता प्राप्त होकर व्यक्ति की देह से उसके पैर की दिशा से अधोगति से अधिकाधिक निष्कासन-योग्य तरंगे रिझंवकर इस वायु का योग्य प्रकार से अधिकतम मात्रा में उत्सर्जन होता है जिससे चिता पर रखने से पूर्व देह अधिकतम मात्रा में रिक्त हो जाती है। यह दिशा अधिकाधिक स्तर पर देह से बाह्य दिशा में विसर्जित होने वाली निष्कासन-योग्य वायु के प्रक्षेपण के लिए पूरक होती है।

यम (दक्षिण) दिशा में यम देवता का अस्तित्व होता है। इसलिए उन के सान्निध्य में देह से प्रक्षेपित होने वाली निष्कासन योग्य वायु के उत्सर्जन के उपरांत विलिनीकरणात्मक प्रक्रिया अधिकाधिक

प्रमाण में दोष विरहित करने का प्रयास किया जाता है, अन्यथा निष्कासन-योग्य वायु के उत्सर्जन के लिए संबंधित दिशा पूरक न रखने पर, ये तरंगें घर में अधिक समय तक घनीभूत होने की संभावना होती है; इसलिए यमदिशा की ओर इस निष्कासन-योग्य तरंगों का वहन होने के लिए मृत व्यक्ति के पैर घर में दक्षिण दिशा की ओर रखने की पद्धति है।'

मृत देह घर में रखते समय मृतक के पैर दक्षिण दिशा में रखने का शास्त्र ज्ञात न होने के कारण वर्तमान में कुछ स्थानों पर घर में मृतदेह रखते समय मृतक के पैर उत्तर की ओर रखने का अयोग्य कृत्य किया जाता है।

मृतदेह को श्मशान में ले जाने के उपरांत मृतदेह चिता पर रखते समय मृतक के पैर उत्तर दिशा में रखना आवश्यक होता है।

अंतिम संस्कार के समय कपाल क्रिया का सच

हम सभी ने शमशान में अंत्येष्टि के समय देखा है कि मृतक व्यक्ति की चिता जलने के कुछ समय उपरांत सिर पर लकड़ी का डंडा मारा जाता है।

शव को मुखाग्नि देने के करीब आधे घंटे बाद जब शव की चमड़ी और मांस का ज्यादातर भाग जल चुका होता है, तब एक बांस में लोटा बांधकर शव के सिर वाले हिस्से में और घी डाला जाता है। जिससे की सिर का कोई हिस्सा जलने से न बच जाए। इसे कपाल क्रिया कहते हैं। गरुड़ पुराण की मान्यता अनुसार अगर सिर या दिमाग का कोई हिस्सा जलने से रह जाए तो इंसान को अगले जन्म में पिछले जन्म की बातें याद रह जाती हैं।

इसीलिए अच्छी तरह से जलाया जाता है। अगर पिछले जन्म में इंसान की मृत्यु किसी दुखद कारण की वजह से हुई है तो नए जन्म में इसको याद रखने से मनुष्य फिर दुःखी हो जाएगा और लगातार उसके दिमाग में पूर्व जन्म की बातें और अपने करीबियों का दुःख घूमता रहेगा।

इस बात में मतभेद यह है कि कपाल क्रिया करने से इस जन्म की यादाश्त भूल कर आत्मा अगले जन्म को स्वीकार कर लेती है। दूसरा मतभेद यह है कि कपाल क्रिया करने से सहस्रार चक्र खुल जाता है, और आत्मा ज्ञान मार्ग से मोक्ष को प्राप्त होति है। पहला मत को पूर्णतया सत्य नही कहा जा सकता है, यादाशत आत्मा के साथ रहती ही है, चाहे भले ही अगले जन्म में वह उसे भूल जाए, परंतु पिछले सभी जन्मों की याद आत्मा या अवचेतन मन में ज़मेशा रहती है। इसलिए कपाल क्रिया का इससे कोई संबंध नहीं।

जहाँ तक दूसरे मत का सवाल है, बहुत हद तक वह सत्य है। सहस्रार चक्र से आत्मा के गमन से ज्ञान मार्ग से आत्मा को मोक्ष मिल सकता है। लेकिन तभी जब आत्मा सहस्रार चक्र से निकले। यहाँ तो आत्मा पहले ही शरीर छोड़ चुकी है, सिर्फ शव पड़ा है आपके सामने। फिर क्यों किया जाए कपाल क्रिया?

बौद्ध धर्म में ख़ास तौर से तिब्बत के कुछ लामा मंत्रो से मृत्यु शय्या पर पड़े कुछ लोगो की आत्मा सहस्रार चक्र से निकालने का दावा करते है। यह एक बहुत बड़ा व्यवसाय भी बन गया है जिसके लिए लाखों रुपए भी लिए जाते है। सनातन धर्म में भी समाधि द्वारा मृत्यु से पूर्व आसन लगा कर आत्मा को सहस्रार चक्र से निकाला जाता है, लेकिन यह एक योगी ही कर सकता है, आम आदमी नहीं।

फिर कपाल क्रिया क्यों? और क्या यह जरूरी है?

जी, यह जरूरी है। यह कर्म कांड का हिस्सा तो नहीं है, लेकिन इसे बाद में कर्म कांड का हिस्सा बना दिया गया। इसका कारण थे दुष्ट तांत्रिक। बहुत से दुष्ट तांत्रिक शमशान से कपाल इखट्ठे कर लेते है। इन्ही कपाल द्वारा मृत इंसान की आत्मा को प्रेत बना कर अपने काम निकाले जाते है। इसलिए ही अघोरियों ने इस दुष:क्रिया को रोकने के लिए यह प्रथा चलायी की सभी की कपाल क्रिया कर दी जाय। जब कपाल ही नहीं रहेगा तो उससे कोई दुष:क्रिया नहीं होगी। यह कारण किसी को बताया नहीं जाता, अन्यथा कोई इसे मानेगा कोई नहीं। परंतु मानने या न मानने से तांत्रिकों को तो कोई फर्क नहीं पड़ता न। समय समय पर ऐसे मामले आते ही है जहाँ कोई अच्छी आत्मा को भी प्रेत बना कर गलत कार्य करवाये जाते है। इसलिए यह क्रिया ज़रूरी है।

अगर अरावली नहीं बची, तो आने वाली पीढ़ियाँ क्या बचाएँगी? भारत की सबसे प्राचीन पर्वतमाला पर मंडराता अस्तित्व का संकट

डॉ. महिपाल सिंह साँखला
असिस्टेंट प्रोफेसर, फॉरेंसिक विज्ञान विभाग, के. आर. मंगलम विश्वविद्यालय, गुरुग्राम

अरावली केवल एक पर्वतमाला नहीं है। यह उत्तर-पश्चिम भारत की जीवनरेखा, जल सुरक्षा की रीढ़ और मरुस्थलीकरण के विरुद्ध अंतिम प्राकृतिक दीवार है। लेकिन हाल ही में सुप्रीम कोर्ट द्वारा अरावली पहाड़ियों की एक संकीर्ण और ऊँचाई-आधारित परिभाषा को स्वीकार किए जाने के बाद इस प्राचीन पर्वतमाला का भविष्य गंभीर खतरे में पड़ गया है। 20 नवंबर 2025 को दिए गए निर्णय में अदालत ने पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEFCC) की सिफारिशों को स्वीकार करते हुए अरावली पहाड़ियों को केवल उन्हीं भू-आकृतियों तक सीमित कर दिया है जिनकी स्थानीय ऊँचाई 100 मीटर या उससे अधिक है। विशेषज्ञों और पर्यावरणविदों का कहना है कि इस परिभाषा से अरावली क्षेत्र का 90 प्रतिशत से अधिक हिस्सा संरक्षण के दायरे से बाहर हो जाएगा, जिससे बड़े पैमाने पर खनन का रास्ता खुल सकता है।इसकी दो अरब वर्ष पुरानी भू-संरचना वर्षा जल को प्राकृतिक रूप से संचित कर भूजल रिचार्ज करती है, जिससे नदियाँ, झीलें और aquifers जीवित रहते हैं। यहाँ के शुष्क पर्णपाती वन वातावरण में नमी बनाए रखते हैं, तापमान और वर्षा चक्र को नियंत्रित करते हैं तथा दिल्ली-NCR सहित आसपास के क्षेत्रों के लिए प्राकृतिक प्रदूषण-रोधी "ग्रीन लंग्स" का काम करते हैं। अरावली हजारों ज्ञात-अज्ञात प्रजातियों, औषधीय पौधों, पक्षियों और वन्यजीवों का आवास है, जिनका अस्तित्व एक-दूसरे से जुड़ी खाद्य शृंखलाओं और सूक्ष्म जैविक प्रक्रियाओं पर निर्भर करता है। खनन और वनों के विनाश से यह संतुलन टूटता है, जिससे मिट्टी क्षरण, जल संकट, कृषि गिरावट, मानव-वन्यजीव संघर्ष और गंभीर पर्यावरणीय अस्थिरता पैदा होती है; इसलिए अरावली का संरक्षण केवल प्रकृति की रक्षा नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के जीवन, स्वास्थ्य और भविष्य की सुरक्षा का प्रश्न है। अरावली सिर्फ अतीत की विरासत नहीं, भविष्य की गारंटी है।

अगर हम आज अरावली को नहीं बचा पाए, तो आने वाली पीढ़ियाँ हमें माफ़ नहीं करेंगी। यह लड़ाई अरावली की नहीं, भारत की है।

मरुस्थल को रोकने वाली अंतिम दीवार

करीब दो अरब वर्ष पुरानी अरावली पर्वतमाला थार मरुस्थल को पूर्व की ओर फैलने से रोकती है। राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली-एनसीआर और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के लिए यह एक प्राकृतिक ढाल की तरह कार्य करती है। बीते दशकों में अत्यधिक खनन के कारण अरावली में कई जगहों पर दरारें और "ब्रिच" बन चुकी हैं, जिनसे थार की धूल दिल्ली-एनसीआर तक पहुँच रही है। विशेषज्ञ चेतावनी देते हैं कि यदि अरावली की निरंतरता टूटी, तो मरुस्थलीकरण की गति और तेज़ होगी।

जल संकट की गहराती आहट

अरावली क्षेत्र उत्तर-पश्चिम भारत का एक प्रमुख भूजल रिचार्ज ज़ोन है। वैज्ञानिक आकलनों के अनुसार, अरावली की चट्टानें प्रति हेक्टेयर लगभग 20 लाख लीटर वर्षा जल को जमीन में समाहित करने की क्षमता रखती हैं। लेकिन खनन के चलते कई क्षेत्रों में भूजल स्तर 1000 से 2000 फीट तक नीचे चला गया है।

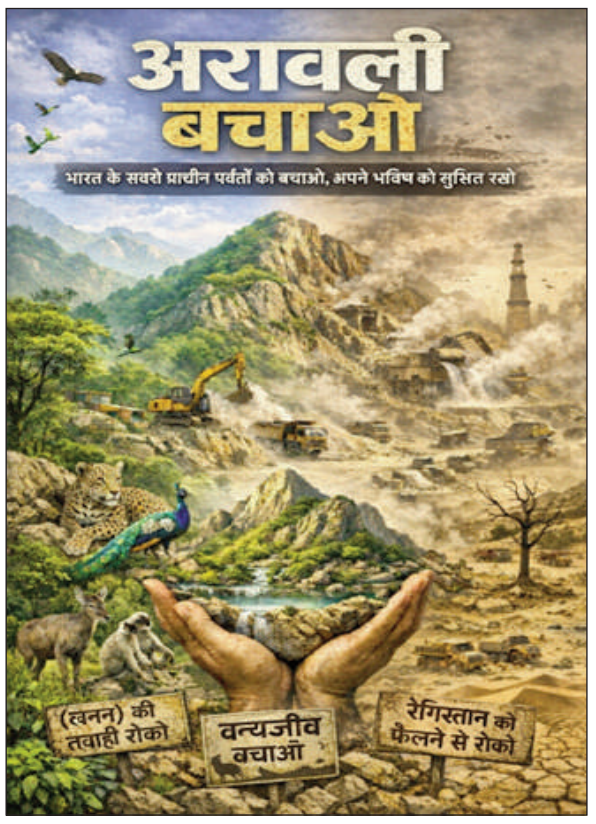

नई परिभाषा के बाद यदि और पहाड़ियाँ खनन के लिए खोली गईं, तो यह जल संकट भयावह रूप ले सकता है।

वन, वर्षा और प्रदूषण नियंत्रण

अरावली के जंगल न केवल वर्षा चक्र को संतुलित करते हैं, बल्कि हवा की गति नियंत्रित कर तापमान और आर्द्रता बनाए रखते हैं। दिल्ली-एनसीआर के लिए ये वन प्राकृतिक ग्रीन लंग्स का काम करते हैं, जो प्रदूषण को रोकने और तापमान को नियंत्रित करने में सहायक हैं। हरियाणा, जहाँ पहले ही देश का सबसे कम वन क्षेत्र (लगभग 3.6 प्रतिशत) बचा है, इस फैसले से और अधिक हरित क्षेत्र खो सकता है, क्योंकि अधिकांश वन क्षेत्र 100 मीटर से कम ऊँचाई पर स्थित हैं।

जैव विविधता का मौन विनाश

अरावली केवल पत्थरों की श्रृंखला नहीं, बल्कि हजारों ज्ञात और अज्ञात प्रजातियों की जननी है। यहाँ तेंदुआ, सियार, लकड़बग्घा, नीलगाय, भेड़िया, जंगली बिल्ली और 200 से अधिक पक्षी प्रजातियाँ पाई जाती हैं। साथ ही, अनेक औषधीय पौधे और स्थानीय वनस्पतियाँ भी इसी पारिस्थितिकी पर निर्भर हैं। पहाड़ियों और जंगलों के नष्ट होने से वन्यजीवों का आवास सिमटेगा और मानव–वन्यजीव संघर्ष बढ़ेगा। अरावली केवल पत्थरों का ढेर नहीं, बल्कि हजारों ज्ञात-अज्ञात प्रजातियों की माँ है।

यहाँ पाए जाते हैं कई प्रजातियाँ अभी तक वैज्ञानिक रूप से पहचानी भी नहीं गई हैं। पहाड़ियों के नष्ट होने से ये प्रजातियाँ हमेशा के लिए विलुप्त हो सकती हैं। यह सब मिलकर आने वाले वर्षों में गंभीर जल संकट, खाद्य असुरक्षा और मानव-वन्यजीव संघर्ष को जन्म देगा।

सिर्फ अरावली की नहीं, भारत की चेतावनी

पर्यावरण विशेषज्ञों का कहना है कि ऊँचाई आधारित यह परिभाषा एक खतरनाक मिसाल है। आज अरावली को "कम ऊँचाई" के आधार पर कमजोर किया जा रहा है, कल यही तर्क अन्य पर्वतमालाओं तक पहुँच सकता है।

"आज अरावली की कोई कीमत नहीं, कल यही सोच हिमालय तक पहुँचेगी।"

अरावली को बचाना केवल पर्यावरण का प्रश्न नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के जीवन, जल और स्वास्थ्य का प्रश्न है।

यदि आज हमने इस दो अरब वर्ष पुरानी धरोहर को नहीं बचाया, तो आने वाली पीढ़ियाँ हमें कभी माफ़ नहीं करेंगी। वह दिन दूर नहीं जब आने वाली पीढ़ियाँ यह कहती सुनाई देंगी कि कभी यहाँ अरावली पर्वतमाला हुआ करती थी और आज वहाँ केवल खनन, कंक्रीट और तथाकथित विकास के निशान बचे हैं। विकास आवश्यक है, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि हम अपनी विरासत, धरोहर, वनस्पति और जैव विविधता को खो दें, या उन हजारों वन्य जीवों को बेघर कर दें जिनका अस्तित्व अरावली पर निर्भर है, ताकि वे धीरे-धीरे विलुप्त होकर रेड डाटा बुक के पन्नों में सिमट जाएँ और प्रदूषण का स्तर और भयावह हो जाए। यह समझना आज पूरे देश के लिए अनिवार्य है कि विकास और संरक्षण एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं। इस विषय पर भारत को सामूहिक रूप से गंभीर चिंतन करना होगा, और आदरणीय माननीय सर्वोच्च न्यायालय, जो देश का सर्वोच्च न्यायालय है, से भी यह अपेक्षा है कि वह अरावली जैसे संवेदनशील पारिस्थितिकी तंत्र के संदर्भ में पुनर्विचार करे, क्योंकि मूक वन्य जीवों, पेड़-पौधों और वनस्पतियों की रक्षा करना भी हमारा नैतिक, सामाजिक और मानवीय धर्म है।

ताजमहल: संगमरमर में तराशी गई मोहब्बत की एक अमर दास्तान

परिवहन विशेष न्यूज

आगरा। भारत — जब आप आगरा की तंग गलियों और भीड़भाड़ से निकलकर ताजमहल के पूर्वी या पश्चिमी गेट पर पहुँचते हैं, तो एक अजीब सी खामोशी और कौतूहल का अहसास होता है। लाल पत्थर के भव्य 'दरवाज़ा-ए-रौज़ा' (मुख्य द्वार) से जैसे ही आपकी नज़र उस सफ़ेद गुंबद पर पड़ती है, वक्त मानो थम सा जाता है।

रवींद्रनाथ टैगोर ने इसे ₹वक्त के गाल पर थमा हुआ एक आँसू₹ कहा था। आज, 21वीं सदी की भागदौड़ भरी दुनिया में भी, ताजमहल अपनी उसी गरिमा और रहस्य के साथ खड़ा है।

इतिहास के पन्नों से: एक वादे की तामील

इस अजूबे की नींव 1631 में तब पड़ी, जब मुगल बादशाह शाहजहाँ की बेगम मुमताज़ महल ने अपनी 14वीं संतान को जन्म देते हुए दम तोड़ दिया। कहा जाता है कि बादशाह का गम इतना गहरा था कि उनके बाल रातों-रात सफ़ेद हो गए। उन्होंने अपनी बेगम की याद में एक ऐसी इमारत बनाने की कसम खाई, जैसी दुनिया में दूसरी न हो।

लगभग 22 साल, 20,000 से ज़्यादा कारीगर और उस दौर के करोड़ों रुपयों (आज के अरबों) की लागत के बाद, यमुना किनारे यह श्वेत स्वप्न साकार हुआ। उस्ताद अहमद लाहौरी की वास्तुकला ने मकराना के संगमरमर को एक कविता का रूप दे दिया।

स्थापत्य कला: पत्थर बोलते हैं

ताजमहल की खूबसूरती केवल उसकी सफेदी में नहीं, बल्कि उसकी बारीकियों में है। इसे 'इंडो-इस्लामिक' वास्तुकला का सबसे बेहतरीन नमूना माना जाता है।

*** पच्चीकारी (Pietra Dura):** संगमरमर पर कीमती पत्थरों (जैसे जेड, क्रिस्टल, लैपिस लाजुली) को तराश कर फूल-पत्तियों की जो नक्काशी की गई है, वह आज भी इतनी जीवंत है कि छूने पर असली फूल जैसी महसूस होती है।

*** ऑप्टिकल इल्यूजन (Optical Illusion):** जब आप मुख्य द्वार से ताज की ओर बढ़ते हैं, तो यह बड़ा होता जाता है, लेकिन जैसे ही आप पीछे हटते हैं, यह छोटा दिखाई देता है—मानो आप इसे अपने दिल में समेट कर ले जा रहे हों।

*** बदलते रंग:** ताजमहल का मिज़ाज दिन के साथ बदलता है। सुबह की पहली किरण में यह हल्का गुलाबी, दिन की धूप में चमकता हुआ सफ़ेद और पूर्णिमा की रात को सुनहरा दिखाई देता है। स्थानीय लोग कहते हैं कि यह मुमताज़ के बदलते हुए मूड (मिज़ाज) को दर्शाता है।

आज के दौर में ताजमहल

आज के दौर में ताजमहल केवल प्रेम का प्रतीक नहीं, बल्कि भारत के पर्यटन की रीढ़ है। हर साल लाखों देशी और विदेशी सैलानी यहाँ आते हैं। सोशल मीडिया के इस दौर में, 'डायना बेंच' पर बैठकर फोटो खिंचवाना हर पर्यटक की 'बकेट लिस्ट' का हिस्सा है।

हालांकि, यह इमारत आज कई चुनौतियों का सामना भी कर रही है:

*** प्रदूषण की मार:** आगरा के बढ़ते प्रदूषण और यमुना नदी की बदहाली के कारण ताजमहल के संगमरमर पर पीलापन (Yellowing) आ रहा है। इसे बचाने के लिए ए.एस.आई. (ASI) समय-समय पर 'मड पैक थेरेपी' (मुल्तानी मिट्टी का लेप) का इस्तेमाल करता है।

*** भीड़ प्रबंधन:** पर्यटन का दबाव इतना अधिक है कि अब टिकटों की कीमत और समय सीमा को नियंत्रित किया जा रहा है ताकि इमारत को नुकसान न पहुँचे।

निष्कर्ष: एक अहसास जो कभी पुराना नहीं होता

यमुना के उस पार महताब बाग से जब आप डूबते सूरज के साथ ताजमहल को देखते हैं, तो इतिहास और वर्तमान का अंतर मिट जाता है। यह इमारत हमें याद दिलाती है कि सत्ता, दौलत और तख्त सब नश्वर हैं, लेकिन कला और प्रेम अनंत हैं।

आज के डिजिटल युग में, जहाँ हम 'स्वाइप' और 'लाइक' में उलझे हैं, ताजमहल हमें ठहरने और किसी चीज़ को शिद्दत से महसूस करने की वजह देता है। यह सिर्फ एक मकबरा नहीं है; यह इंसान की जिद्द और जुनून का वो सबूत है, जो सदियों तक दुनिया को हैरान करता रहेगा।

सत्यम मिश्रा
सोशल मीडिया गतिविधि विशेषज्ञ
उत्तर प्रदेश / उत्तराखंड

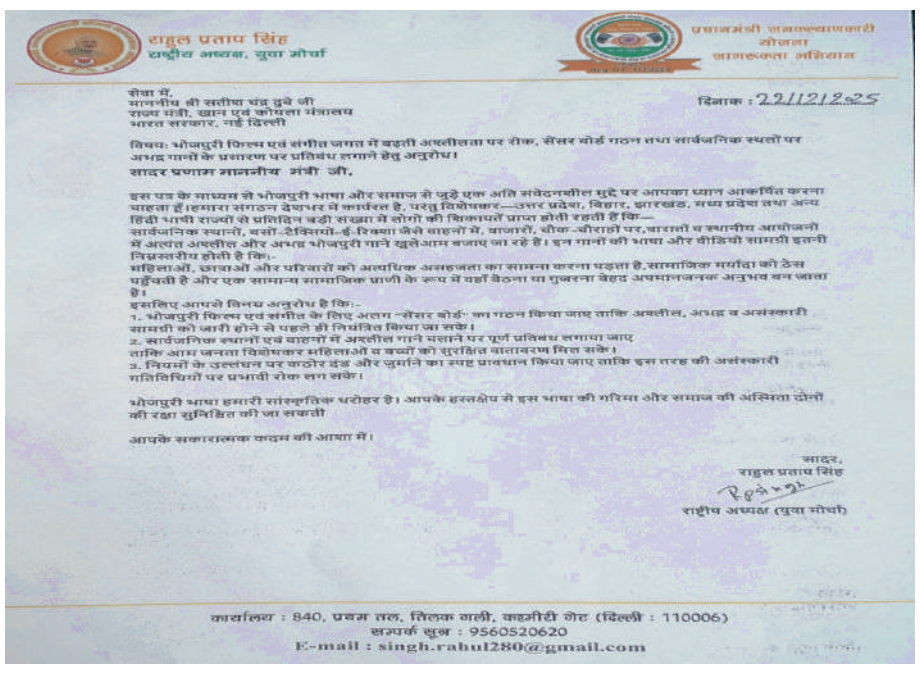

राहुल प्रताप सिंह
राष्ट्रीय अध्यक्ष, युवा मोर्चा

प्रधानमंत्री जनकल्याणकारी योजना जागरूकता अभियान

सेवा में,
माननीय श्री सतीश चंद्र दुबे जी
राज्य मंत्री, खान एवं कोयला मंत्रालय
भारत सरकार, नई दिल्ली

दिनांक : 22/12/2025

विषय: भोजपुरी फिल्म एवं संगीत जगत में बढ़ती अश्लीलता पर रोक, सेंसर बोर्ड गठन तथा सार्वजनिक स्थलों पर अभद्र गानों के प्रसारण पर प्रतिबंध लगाने हेतु अनुरोध।

सादर प्रणाम माननीय मंत्री जी,

इस पत्र के माध्यम से भोजपुरी भाषा और समाज से जुड़े एक अति संवेदनशील मुद्दे पर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ।हमारा संगठन देशभर में कार्यरत है, परंतु विशेषकर—उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, मध्य प्रदेश तथा अन्य हिंदी भाषी राज्यों से प्रतिदिन बड़ी संख्या में लोगों की शिकायतें प्राप्त होती रहती हैं कि—
सार्वजनिक स्थानों, बसों-टैक्सियों-ई-रिक्शा जैसे वाहनों में, बाजारों, चौक-चौराहों पर, बारातों व स्थानीय आयोजनों में अत्यंत अश्लील और अभद्र भोजपुरी गाने खुलेआम बजाए जा रहे हैं। इन गानों की भाषा और वीडियो सामग्री इतनी निम्नस्तरीय होती है कि:-
महिलाओं, छात्राओं और परिवारों को अत्यधिक असहजता का सामना करना पड़ता है, सामाजिक मर्यादा को ठेस पहुँचती है और एक सामान्य सामाजिक प्राणी के रूप में वहाँ बैठना या गुजरना बेहद अपमानजनक अनुभव बन जाता है।
इसलिए आपसे विनम्र अनुरोध है कि:-
1. भोजपुरी फिल्म एवं संगीत के लिए अलग "सेंसर बोर्ड" का गठन किया जाए ताकि अश्लील, अभद्र व असंस्कारी सामग्री को जारी होने से पहले ही नियंत्रित किया जा सके।
2. सार्वजनिक स्थानों एवं वाहनों में अश्लील गाने बजाने पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाए ताकि आम जनता विशेषकर महिलाओं व बच्चों को सुरक्षित वातावरण मिल सके।
3. नियमों के उल्लंघन पर कठोर दंड और जुर्माने का स्पष्ट प्रावधान किया जाए ताकि इस तरह की असंस्कारी गतिविधियों पर प्रभावी रोक लग सके।

भोजपुरी भाषा हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। आपके हस्तक्षेप से इस भाषा की गरिमा और समाज की अस्मिता दोनों की रक्षा सुनिश्चित की जा सकती

आपके सकारात्मक कदम की आशा में।

सादर,
राहुल प्रताप सिंह
राष्ट्रीय अध्यक्ष (युवा मोर्चा)

कार्यालय : 840, प्रथम तल, तिलक गली, कश्मीरी गेट (दिल्ली : 110006)
सम्पर्क सूत्र : 9560520620
E-mail : singh.rahul280@gmail.com

भोजपुरी फिल्म एवं साहित्य जगत में बढ़ती अश्लीलता पर रोक लगाने की मांग को लेकर राज्य मंत्री (कोयला एवं खान मंत्रालय) सतीश चंद्र दुबे को सौंपा ज्ञापन

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। भोजपुरी फिल्म एवं साहित्य जगत में बढ़ती अश्लीलता पर रोक लगाने की मांग को लेकर आज नई दिल्ली में माननीय राज्य मंत्री, भारत सरकार (कोयला एवं खान मंत्रालय) श्री सतीश चंद्र दुबे से उनके दिल्ली स्थित आवास पर प्रधानमंत्री जन कल्याणकारी योजना जागरूकता अभियान प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात कर ज्ञापन सौंपा।

प्रतिनिधिमंडल में प्रधानमंत्री जन कल्याणकारी योजना जागरूकता अभियान के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनीत कौशिक, युवा मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राहुल प्रताप सिंह तथा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री विजय कौशिक शामिल रहे।

प्रतिनिधिमंडल ने मंत्री को अवगत कराया कि भोजपुरी फिल्म, संगीत एवं साहित्य में बढ़ती अश्लीलता से सामाजिक मूल्यों और सांस्कृतिक मर्यादाओं को ठेस पहुंच रही है। उन्होंने इस पर प्रभावी नियंत्रण के लिए ठोस कदम उठाने की मांग की।

माननीय मंत्री श्री सतीश चंद्र दुबे ने ज्ञापन को गंभीरता से सुनते हुए उचित कार्रवाई का आश्वासन दिया।

मिलावटी दूध,पनीर और दुग्ध उत्पादों पर बढ़ता संकट-भारत की खाद्य सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौती -एफएसएसएआई का अभियान निर्णायक हस्तक्षेप- एक समग्र विश्लेषण

मिलावट अब केवल स्वास्थ्य तक सीमित नहीं रही, बल्कि खाद्य प्रणाली की विश्वसनीयता, उपभोक्ता अधिकारों और राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा के लिए एक सबसे बड़ा संकट पनीर में संभवतःस्टार्च मिलाना, दूध में डिटर्जेंट, यूरिया और सिंथेटिक रसायन,यह मिलावट संगठित अपराध का रूप ले चुकी है इसपर नियंत्रण ज़रूरी- **एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर सर्वविदित है क़ि भारत में दूध और दुग्ध उत्पाद केवल पोषण का स्रोत नहीं,बल्कि संस्कृति परंपरा और आर्थिक जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं।दुनियाँ का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक देश होने के बावजूद भारत आज एक गंभीर विडंबना का सामना कर रहा है,मिलावटी दूध,नकली पनीर और अशुद्ध खोया का तेज़ी से बढ़ता कारोबार। यह समस्या अब केवल स्वास्थ्य तक सीमित नहीं रही,बल्कि खाद्य प्रणाली की विश्वसनीयता, उपभोक्ता अधिकारों और राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा के लिए एक बड़े संकट के रूप में अब उभर चुकी है।मिलावट की समस्याःस्थानीय गड़बड़ी से राष्ट्रीय आपात तक -बीते कुछ वर्षों में देश के विभिन्न हिस्सों से मिलावटी दूध, पनीर और खोया की लगातार शिकायतें सामने आई हैं। कहीं पनीर में स्टार्च मिलाया जा रहा है, तो कहीं दूध में डिटर्जेंट, यूरिया और सिंथेटिक रसायन।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं क़ि यह मिलावट संगठित अपराध का रूप ले चुकी है, जिसमें अवैध डेयरी यूनिट्स, नकली ब्रांडिंग और कमजोर निगरानी तंत्र का खुला दुरुपयोग हो रहा है।इसके परिणामस्वरूप आम उपभोक्ता अनजाने में ज़हर का सेवन करने को मजबूर है। स्वास्थ्य पर सीधा प्रहार:एक अदृश्य लेकिन घातक खतरा- मिलावटी दूध और पनीर के सेवन से बच्चों, बुजुर्गों और गर्भवती महिलाओं पर सबसे अधिक दुष्प्रभाव पड़ता है। लंबे समय तक ऐसे उत्पादों का सेवन पेट संबंधी रोगों, किडनी और लिवर डैमेज, हार्मोनल असंतुलन और यहां तक कि कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों को जन्म दे सकता है।यह स्थिति सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली पर अतिरिक्त बोझ डालती है और देश की मानव पूंजी को कमजोर करती है।

साथियों बात अगर हम एफएसएसएआई का निर्णायक हस्तक्षेप,दिसंबर 2025 से विशेष अभियान को समझने की करें तो,उपभोक्ताओं की बढ़ती चिंताओं और संसद में सामने आए चौंकाने वाले आंकड़ों के बाद,भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) ने दिसंबर 2025 में एक बड़ा और सख्त कदम उठाया। एफएसएसएआई ने देशभर में मिलावटी दूध, पनीर और खोया के खिलाफ विशेष प्रवर्तन अभियान चलाने का आदेश जारी किया,जिसे अब तक का सबसे व्यापक डेयरी निगरानी अभियान माना जा रहा है।देशव्यापी प्रवर्तन अभियान- होटल से डेयरी यूनिट तक सख्ती -इस विशेष अभियान के तहत होटल,रेस्टोरेंट,कैटरिंग यूनिट्स, मिठाई दुकानों और डेयरी प्रसंस्करण इकाइयों को जांच के दायरे में लाया गया है। खाद्य व्यवसाय संचालकों के परिसरों से दूध,पनीर और खोया के सैंपल लिए जाएंगे और उन्हें मान्यता प्राप्त प्रयोगशालाओं में जांच के लिए भेजा जाएगा। मानकों पर खरे न उतरने वाले उत्पादों के खिलाफ तत्काल कार्रवाई की जाएगी।

साथियों बात अगर हम राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को स्पष्ट निर्देश देने के महत्व को समझने की

करें तो,एफएसएसएआई ने सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को निर्देशित किया है कि वे दूध और दुग्ध उत्पादों में मिलावट की पहचान के लिए व्यापक, समयबद्ध और लक्षित अभियान चलाएं।यह निर्देश केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि जवाबदेही से जुड़ा है। राज्यों को तय समयसीमा में कार्रवाई रिपोर्ट प्रस्तुत करनी होगी। फूड सेफ्टी ऑफिसरों की भूमिका, जमीनी स्तर पर कार्रवाई,इस अभियान में फूड सेफ्टी ऑफिसर की भूमिका केंद्रीय है। उन्हें निर्देश दिया गया है कि वे नियमित रूप से दूध,पनीर और खोया के सैंपल लें, संदिग्ध यूनिट्स पर छापे मारें और प्रयोगशाला परीक्षण सुनिश्चित करें। पहली बार यह सुनिश्चित किया गया है कि निरीक्षण केवल कागज़ी न रहे, बल्कि ठोस और परिणाम आधारित होगी। (1) सख्त दंडात्मक प्रावधान-लाइसेंस रद्द से लेकर यूनिट बंद तक,जहां मिलावट पाई जाएगी, वहां केवल जुर्माने तक सीमित न रहकर लाइसेंस निलंबन या रद्दीकरण, माल जब्ती,अवैध यूनिट्स को सील करना और मिलावटी उत्पादों को नष्ट करना अनिवार्य किया गया है। यह स्पष्ट संदेश है कि अब मिलावटखोरी को एक गंभीर आर्थिक अपराध माना जाएगा। (2) ट्रेसबिलिटी जांच, पूरी सप्लाई चेन पर नजर-एफएसएसएआई ने पहली बार दूध और पनीर की पूरी सप्लाई चेन की ट्रेसबिलिटी जांच को अनिवार्य किया है। यदि किसी क्षेत्र में संदिग्ध पैटर्न या बार-बार मिलावट की शिकायत मिलती है, तो कच्चे दूध से लेकर अंतिम उत्पाद तक की जांच की जाएगी। इससे बड़े नेटवर्क और संगठित मिलावट माफिया तक पहुंचने में मदद मिलेगी। (3) रियल टाइम रिपोर्टिंग-पारदर्शिता की नई व्यवस्था-अभियान की निगरानी के लिए हर 15 दिन में रियल टाइम रिपोर्टिंग अनिवार्य की गई है। सभी निरीक्षणों और नमूना जांच का डेटा तुरंत एफएसएसएआई पोर्टल पर अपलोड करना होगा। इससे राष्ट्रीय स्तर पर निगरानी, विश्लेषण और नीति निर्माण को मजबूती मिलेगी।(4) फूड सेफ्टी ऑन व्हील्स-मोबाइल लैब का विस्तारग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में त्वरित जांच के लिए फूड सेफ्टी ऑन व्हील्स यानी मोबाइल लैब को बाजारों और भीड़भाड़ वाले इलाकों में तैनात किया जा रहा है। इससे मौके पर ही प्रारंभिक जांच संभव होगी और उपभोक्ताओं में जागरूकता भी बढ़ेगी।

साथियों बात कर हम होटल और फूड सर्विस सेक्टर की जिम्मेदारी इसको समझने और संसद में पेश पंजाब के आंकड़ों की करें तो,एफएसएसएआई ने होटल, रेस्टोरेंट और कैटरिंग सेक्टर को कड़ा संदेश दिया है कि वे केवल प्रमाणित और शुद्ध डेयरी उत्पादों का ही उपयोग करें।यदि किसी फूड सर्विस यूनिट में मिलावटी दूध या पनीर पाया गया, तो उसे भी समान रूप से जिम्मेदार ठहराया जाएगा।संसद में पेश केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के आंकड़े इस संकट की गंभीरता को उजागर करते हैं।वर्ष 2024- 25 में पंजाब में जांचे गए लगभग 47 प्रतिशत दुग्ध उत्पाद मानकों पर खरे नहीं उतरे। पनीर में स्टार्च और सुक्रोज जैसी मिलावट ने यह स्पष्ट कर दिया कि समस्या केवल छोटे स्तर पर नहीं, बल्कि औद्योगिक पैमाने पर हो रही है।गलत ब्रांडिंग और उपभोक्ता के साथ धोखा मिलावट के साथ- साथ गलत ब्रांडिंग भी एक बड़ी समस्या बन चुकी है। नकली लेबल, फर्जी सर्टिफिकेशन और भ्रामक दावे उपभोक्ताओं को गुमराह करते हैंएफएसएसएआई ने स्पष्ट किया है कि गलत ब्रांडिंग भी खाद्य सुरक्षा उल्लंघन के अंतर्गत आएगी और उस पर सख्त कार्रवाई होगी।

साथियों बात अगर हम अंतरराष्ट्रीय संदर्भ वैश्विक खाद्य सुरक्षा मानकों से तालमेल इसको समझने की करें तो दुनियाँ के कई देशों में दूध और डेयरी उत्पादों की ट्रेसबिलिटी रियल टाइम मॉनिटरिंग और कठोर दंड व्यवस्था पहले से लागू है। एफएसएसएआई का यह अभियान भारत को वैश्विक खाद्य सुरक्षा मानकों के अनुरूप लाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।उपभोक्ता जागरूकता: नीति की सफलता की कुंजी,सरकारी कार्रवाई के साथ-साथ उपभोक्ता जागरूकता भी उतनी ही आवश्यक है। जब तक उपभोक्ता शुद्ध उत्पादों की मांग नहीं करेंगे और संदिग्ध उत्पादों की शिकायत नहीं करेंगे, तब तक मिलावट पर पूरी तरह सटीक रूप से अंकुश लगाना कठिन रहेगा।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे क़ि खाद्य सुरक्षा से राष्ट्रीय विश्वास तक,मिलावटी दूध, पनीर और खोया के खिलाफ एफएसएसएआई का विशेष अभियान केवल एक प्रशासनिक कार्रवाई नहीं,बल्कि जनस्वास्थ्य, उपभोक्ता अधिकार और राष्ट्रीय खाद्य विश्वास की रक्षा का प्रयास है।यदि यह अभियान ईमानदारी, पारदर्शिता और निरंतरता के साथ लागू होता है,तो यह न केवल मिलावटखोरों पर नकेल कसेगा,बल्कि भारत की खाद्य प्रणाली को अधिक सुरक्षित, विश्वसनीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित बनाएगा।

बनारसी साड़ी के अस्तित्व को खतरा 4 लाख बुनकर छोड़ चुके हैं काम बिक रहीं सूरत से आ रहीं सस्ती डुप्लीकेट साड़ियां

वाराणसी से वसीम अहमद पुर्व मिडिया प्रभारी उत्तर प्रदेश

बनारसी साड़ी बुनने वाले बुनकर कई कारणों से बुनाई छोड़ रहे हैं। मुख्य कारणों में से एक है बिजली की बढ़ती दरें, जिससे बुनकरों की उत्पादन लागत बढ़ जाती है और उन्हें अपना काम जारी रखना मुश्किल हो जाता है। इसके अलावा, सूरत से आने वाली सस्ती डुप्लीकेट साड़ियों की वजह से भी बनारसी साड़ी की मांग कम हो रही है, जिससे बुनकरों को काम नहीं मिल पा रहा है

एक अन्य महत्वपूर्ण कारण है बुनकरों की आर्थिक स्थिति। बुनकरों को बहुत कम मजदूरी मिलती है, जिससे वे अपने परिवार का पालन-पोषण नहीं कर पाते हैं। इसके अलावा, बुनकरों को सरकार से भी पर्याप्त सहायता नहीं मिल पा रही है, जिससे उनकी स्थिति और भी खराब हो रही है

बनारस में बुनकरों की संख्या भी तेजी से घट रही है। 10 साल पहले बनारस में 7 लाख बुनकर थे, लेकिन अब केवल 2.5 लाख बुनकर बचे हैं। इनमें से भी कई बुनकर दूसरे शहरों में पलायन कर गए हैं

बनारस में बुनकरों का इस पुश्तैनी काम से मोह भंग हो गया है. पिछले दस साल में 4 लाख बुनकर दूसरे काम करने लगे हैं.

वाराणसी बनारसी साड़ी बनारस के हथकरघा उद्योग की पहचान है देश दुनिया में लोग इसके दीवाने हैं हम आपको बनारसी साड़ी बनाने वाले उन बुनकरों की बात करने जा रहे हैं जिनकी बनाई साड़ियां पहनकर लोग खुशियां बांटते हैं. लेकिन उनके घर में दो वक्त की रोटी भी नहीं है.

4 लाख बुनकर करने लगे दूसरे काम बनारस के हथकरघा बुनकर भुखमरी के कगार पर हैं कई अपनी मशीनों को बेच चुके हैं, तो कुछ काम पूरी बंद कर चुके हैं. कोरोना की मार के बाद ये बुनकर आज तक उभर नहीं पाए हैं. जानकारों का कहना है कि करीब चार लाख बुनकर दूसरे काम करने लगे हैं.

वाराणसी में बुनकरों ने बतायी दुख भरी दास्तान 10 साल पहले बनारस में 7 लाख बुनकर थेः बनारस में एक दशक पहले 7 लाख से ज्यादा बुनकर हुआ करते थे वर्तमान में ढाई लाख बुनकर रोजी रोजगार के चक्कर में सूरत और बेंगलुरु की ओर पलायन कर गए तो वहीं लगभग डेढ़ लाख ने बुनकरी का काम छोड़कर दूसरे कामों को करना शुरू कर दिया. कोई मजदूर बन गया, तो किसी ने पान की दुकान लगा ली, तो कोई ऑटो रिक्शा चलाने लगा.चार लाख बुनकर दूसरे काम करने लगे हैं बुनकरों को आस जल्द बदलेंगे हालात कुछ बनाकर अब भी इस काम से जुड़े हुए हैं. वह इस आस में बैठे हुए हैं कि जल्द उनकी स्थिति में सुधार होगा बनारस के बजरडीहा क्षेत्र के रहने वाले वसीम अहमद ने बताया कि बुनकर बहुत मुश्किल दौर से गुजर रहे हैं. एक समय था जब बनारसी साड़ी शान हुआ करती थी, लेकिन अब यह शान हमारे लिए दुखदाई बन गई है. हम दो वक्त की रोटी के लिए दिन रात मेहनत करते हैं वसीम अहमद ने कहा कि बच्चों को दूध दिलाना

पढ़ाना सब कुछ महंगा हो गया है. दिन भर मेहनत करने के बाद ढाई सौ से 300 रुपए मजदूरी कर पाते हैं परिवार का पालन पोषण कैसे होगा यही वजह है कि हमारे घर की महिलाएं और बच्चे भी पढ़ाई छोड़कर काम करने लगे हैं. जैसे तैसे गुजारा हो रहा है

बुनकरों ने बताया कि ऑर्डर न मिलने के कारण हैंडलूम की मशीनें भी बहुत सारे बंद हैं कुछ ऐसी कहानी बनारस के अन्य बुनकरों की भी है दूसरे बुनकर बताते हैं कि हमारे 9 लोगो का परिवार है और कमाने वाले तीन लोग हैं मुश्किल से उनके घर का गुजारा हो रहा है बहुत सारी पावरफुल की मशीनें बंद हो गयी हैं क्योंकि आर्डर नहीं मिल रहे हैं ऑर्डर न होने के कारण उन्हें काम नहीं मिल रहा है. इस वजह से साल में 2 से 3 महीने ही मशीनें चल रही हैं. बाकी समय वह बेरोजगार हो जाते हैं.

पुश्तैनी काम को छोड़ने के लिए मजबूर हुए लोग

सूरत में कम दाम पर बन रहीं डुप्लीकेट बनारसी साड़ियां साड़ी कारोबारी और बड़े बुनकरों का कहना है कि बुनकरों के जीवन में सबसे ज्यादा समस्या लाने का काम सूरत की डुप्लीकेसी ने किया है. बनारसी साड़ियों की डुप्लीकेट साड़ी को कम कीमत पर सूरत में तैयार किया जाता है. सस्ते दामों पर उसे बेचा जाता है.

इसने बनारसी साड़ी के काम पर बुरा असर डाला है. इसका परिणाम यह है कि लोग अब सस्ती साड़ियां खरीदना पसंद कर रहे हैं. इस वजह से बनारस की साड़ियां कम बिक रही हैं. लोगों को रोजगार भी काम मिल रहा है.

बनारस में चौपट हुआ हथकरघा उद्योग

काशी में अब बचे हैं 15000 हैंडलूम बुनकरों ने कहा कि बढ़े बिजली की दरों ने भी बुनकरों की कमर तोड़ दी है. पहले यहां एक लाख हैंडलूम हुआ करते थे वर्तमान में केवल 15000 बचे हैं इनमें काम करने वाले लोग बेंगलुरु और सूरत चले गए उन्हें वहां मुनाफा और कमाई ज्यादा हो रही है.

बुनकरों को सरकार से मदद की आस बुनकर कहते हैं कि हमारे लिए बिजली की कीमत बड़ी समस्या है. बिजली की यूनिट इतनी महंगी हो गयी है कि बुनकर उसकी कीमत नहीं चुका पा रहें हैं. अंत में उनको अपनी मशीनें बेचनी पड़ रही हैं. पिछले तीन-चार सालों में बड़ी संख्या में बुनकरों ने अपने मशीनों को बड़े पूंजीपतियों को बेच दिया और खुद को इस काम से अलग कर लिया.बनारस में चौपट हुआ हथकरघा उद्योग

काशी में अब बचे हैं 15000 हैंडलूमः बुनकर हाजी अकबरुद्दीन ने कहा कि बढ़े बिजली की दरों ने भी बुनकरों की कमर तोड़ दी है. पहले यहां एक लाख हैंडलूम हुआ करते थे. वर्तमान में केवल 15000 बचे हैं. इनमें काम करने वाले लोग बेंगलुरु और सूरत चले गए. उन्हें वहां मुनाफा और कमाई ज्यादा हो रही है

बुनकरों के लिए परिवार की देखभाल करना हुआ मुश्किल

बनारस की साड़ी को ट्रेड मार्क देने की मांगः बुनकरों ने कहा कि अगर दो-तीन समस्याओं का समाधान कर दिया जाए, तो बुनकरों के जीवन में खुशियां आ सकती हैं. बनारस की साड़ी को एक ट्रेड मार्क दे दिया जाए. इससे बनारसी साड़ी का डुप्लीकेट सूरत से आना बंद हो जाएगा. इससे बनारसी साड़ियों की बिक्री बढ़ जाएगी और बुनकरों को रोजगार भी मिलेगा.

महंगी बिजली के कारण भी बुनकरों की हालत हुई बदतर

बुनकरों का स्मार्ट मशीनें और बिजली पर सब्सिडी दे सरकारः बुनकरों को बिजली में सब्सिडी मिल जाए और तमाम योजनाओं के तहत उनको रोजगार उपलब्ध करा दिया जाए. स्मार्ट मशीनें दे दी जाएं, जिससे बुनकरों का काम आसान हो जाएगा. साड़ियों का प्रोडक्शन बढ़ जाएगा और दूसरे लोग साड़ियां खरीदेंगे, जिससे बुनकरों का जीवन सहज हो जाएगा।

कुछ ऐसे पुरुष

हॉ मायावी कलयुग में आज भी कुछ ऐसे पुरुष जीवित है,
जो ज़िम्मेदारियों का दामन एकधार जीवन पर्यन्त ढोतें हैं,
वे बिना किसी शिकायत हर रिश्ते को नसीब की इनायत मान लेते,
और अपनी इस चुप्पी को जीवन का अहम हिस्सा बना लेते ।

वे राम कृष्ण या बुद्ध के जैसे कोई युगपुरुष अवतारी नहीं,
पर उन्होंने हर कठिनाई ऑसुओं को अन्त:करण में दबा सही,
वे मॉ पत्नी बहन बच्चों समाज घर बाहर में पीसते चले जाते,
और सब को मनाते-मनाते दिल में दर्द का सैलाब गढ़ते जाते ।

एक पत्नी व्रत धारी नहीं करते है वे पैतृक संस्कारों से हेरा फेरी,
और अपने सपनों की तिलांजलि देने में नहीं करते जरा भी देरी,
बना दिया जाता है उनको शुरू से ही कठोर और सुखा तना,
और डाल दिया जाता है धीरे से उनके कंधों पर बोझ घना ।

सिखाया जाता हमेशा खुद से पहले परिवार से करना है तुम्हें प्यार,
नहीं कर सकते तुम किसी की अपेक्षाओं और उम्मीदों से इंकार,
उत्सव मनाता है समाज उनके जन्म पर बस पहला व आखिरी,
और थोप देता है भूत-भविष्य की सारी अगली पिछली जिम्मेवारी ।

उनकी सादगी को कमज़ोरी समझ दी जाती है कई शाब्दिक यात्नाएं,
और धीरे-धीरे हृदय के एक कोने में मृत होती जाती उनकी संवेदनाएं,
पर नहीं लिखी जाती है उन पर कभी कोई कविता या कोई ग़ज़ल,
और नहीं होती है उनके बहुमूल्य त्याग पर किसी की ऑखें सजल ।

पर सच तो ये है ऐसे ही कई पुरूषों ने भी संभाला है परिवार,
वे आगे बढ़ते जाते और सह लेते है जीवन में मिली हर फटकार,
अपने अधूरेपन को सांझा करने के लिए ढूँढते है वो भी एक किनारा,
शायद कभी कोई मिले जिसको बता सके मैने अकेले क्या-क्या हारा ।

- मोनिका डागा 'आनंद', चेन्नई, तमिलनाडु
आपके स्नेह और प्यार का धन्यवाद !
रचना (स्वरचित व सर्वाधिकार सुरक्षित)

अयोध्या आंदोलन में सड़क से संसद तक लड़ने वाले योद्धा रामविलास दास वेदांती

रामस्वरूप रावतसरे

अयोध्या में राम मंदिर आंदोलन के सबसे बड़े चेहरों में से एक, पूर्व सांसद और वरिष्ठ संत डॉ रामविलास दास वेदांती का 15 दिसंबर 2025 सुबह 77 साल की उम्र में निधन हो गया। मध्य प्रदेश के रीवा में रामकथा के दौरान उनकी तबीयत बिगड़ी थी। वेदांती जी का पार्थिव शरीर अयोध्या लाया गया है जहाँ उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए संतों, नेताओं और श्रद्धालुओं का हुजूम उमड़ पड़ा था।

डॉ वेदांती का निधन राम जन्मभूमि आंदोलन के एक युग का अंत माना जा रहा है क्योंकि उन्होंने अपना पूरा जीवन राम मंदिर के लिए समर्पित कर दिया था और भव्य मंदिर निर्माण देखने के बाद ही उन्होंने दुनिया को अलविदा कहा।

डॉ रामविलास दास वेदांती जी का जन्म 7 अक्टूबर 1958 को मध्य प्रदेश के रीवा शहर में हुआ था। वह बचपन से ही बहुत धार्मिक थे और भगवान की भक्ति में उनका मन लगता था। जब वह सिर्फ 12 साल के थे यानी बहुत छोटे थे, तभी उन्होंने फैसला कर लिया कि वह साधु बनेंगे। उन्होंने अपना घर-परिवार छोड़ दिया और सीधे भगवान राम की नगरी अयोध्या आ गए। एक तरह से उन्होंने अपनी पूरी जिंदगी राम जी के नाम कर दी। अयोध्या पहुँचकर वे हनुमानगढ़ी के बहुत मशहूर संत महंत अभिराम दास के शिष्य बन गए और उनके मार्गदर्शन में रहने लगे। वेदांती जी संस्कृत के बहुत बड़े जानकार (प्रकांड विद्वान) थे। अयोध्या में उनका एक अपना आश्रम 'वशिष्ठ भवन' था और वह अक्सर सरयू नदी के पास 'हिंदू धाम' नाम की जगह पर रहते थे।

जानकारों के अनुसार 1980 के आस-पास जब देश में राम मंदिर बनाने का आंदोलन जोर पकड़ रहा था, तब वेदांती जी भी इसमें शामिल हो गए। वह अकेले नहीं थे, बल्कि उन्हें कई बड़े संतों का साथ मिला। इनमें महंत अवैद्यनाथ (जो आगे चलकर योगी आदित्यनाथ के गुरु बने), रामचंद्र परमहंस और अशोक सिंघल जैसे दिग्गज संत थे। वेदांती जी बहुत जल्द इस आंदोलन का एक मुख्य चेहरा बन गए। वह सिर्फ अयोध्या में नहीं रुके बल्कि देश के कोने-कोने में गए। उन्होंने लोगों से मिलकर राम मंदिर बनाने की बात की और जनता को जोड़ा। उनकी मेहनत और जोशीले भाषणों के कारण ही उन्हें पूरे देश में एक मजबूत पहचान मिली। वह उन संतों में से थे जिन्होंने राम मंदिर के सपने को सच करने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दी थी।

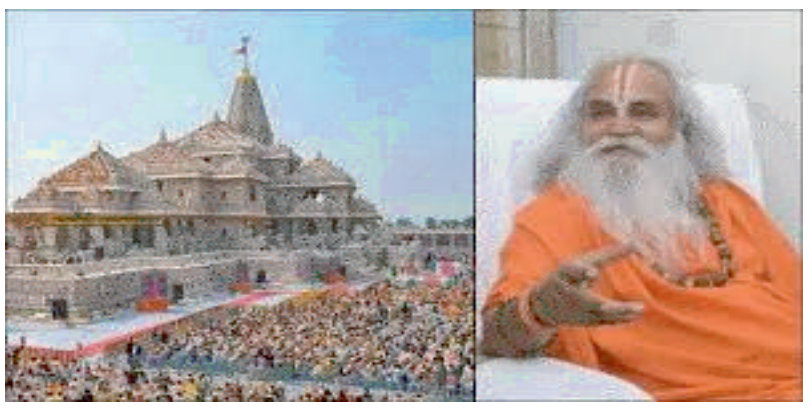

डॉ रामविलास दास वेदांती जी राम मंदिर आंदोलन के एक बहुत ही बेबाक और तेज-तर्रार नेता थे। वह अपनी बात खुलकर और जोरदार तरीके से रखते थे। आंदोलन में उनकी बड़ी भूमिका के चलते ही उन्हें राम जन्मभूमि न्यास (ट्रस्ट जो मंदिर का काम देखता है) का सदस्य और बाद में कार्यकारी अध्यक्ष भी बनाया गया था।

साल 1992 में, जब 6 दिसंबर को बाबरी ढाँचा गिराया गया तो इस मामले में जिन बड़े नेताओं पर केस चला, उनमें वेदांती जी का नाम भी शामिल था। उन्होंने कोर्ट में और बाहर भी हमेशा यह कहा कि उन्होंने कोई गलती नहीं की। उनका दावा था कि हमने किसी मस्जिद को नहीं तोड़ा बल्कि जहाँ ढाँचा खड़ा था, वहाँ असल में बहुत पहले राजा विक्रमादित्य ने एक मंदिर बनवाया था। समय के साथ वह मंदिर खंडहर बन चुका था। वेदांती जी ने कहा कि उन्होंने और कारसेवकों ने मिलकर केवल उस पुराने खंडहर को हटाया था ताकि उसकी जगह पर भव्य राम मंदिर बन सके। वेदांती ने साफ कहा कि उनका मकसद वहाँ सिर्फ नया मंदिर बनाना था। लंबी कानूनी लड़ाई के बाद सीबीआई की स्पेशल कोर्ट ने उन्हें, लालकृष्ण आडवाणी और उमा भारती जैसे सभी बड़े नेताओं के साथ बरी कर दिया।

वेदांती जी राम मंदिर को लेकर बहुत उत्साहित थे। उनकी इच्छा थी कि अयोध्या में बनने वाला राम मंदिर इतना ऊँचा हो (करीब 1111 फुट) कि वह सिर्फ भारत ही नहीं, बल्कि पड़ोसी देशों जैसे इस्लामाबाद या कोलंबो से भी दिखाई दे। उनका मानना था कि यह मंदिर दुनिया का सबसे भव्य और बड़ा मंदिर होना चाहिए।

राम मंदिर आंदोलन में वेदांती जी की पहचान इतनी मजबूत हो गई थी कि उन्होंने राजनीति में भी कदम रखा। भारतीय जनता पार्टी ने उन्हें चुनाव लड़ने का मौका दिया। पहली जीत (1996) वह सबसे पहले मछली शहर (जौनपुर और प्रतापगढ़ के हिस्सों वाली सीट) से लोकसभा चुनाव लड़े। राम मंदिर की वजह से लोगों ने उन्हें भरपूर प्यार दिया और वह चुनाव जीतकर सांसद बन गए।

दूसरी जीत (1998) इसके बाद उन्होंने प्रतापगढ़ सीट से चुनाव लड़ा। यह सीट ऐसी थी जहाँ बड़े-बड़े राजा-महाराजाओं के खानदान का दबदबा रहता था लेकिन वेदांती जी ने कॉन्ग्रेस की उम्मीदवार रत्ना सिंह को हरा दिया। उनकी यह जीत बहुत बड़ी मानी गई क्योंकि उन्होंने पुरानी राजाओं वाली राजनीति को चुनौती दी थी। वेदांती जी हमेशा कहते थे कि वे अपनी ये जीतें भगवान राम के नाम पर मिली 'राम लहर' के कारण ही जीत पाए।

बताया जाता है कि जब सुप्रीम कोर्ट का फैसला आया और अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण शुरू हुआ तो डॉ वेदांती जी बहुत खुश थे। उन्होंने कहा था कि यह सब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कारण ही हो पाया है जिन्होंने महंत अवैद्यनाथ और रामचंद्र परमहंस जैसे संतों के पुराने सपने को सच कर दिखाया।

जानकारों के अनुसार वेदांती जी ने अपनी पूरी जिंदगी राम मंदिर के लिए लगा दी थी। यह देश के लिए एक बहुत बड़ी और भावुक बात है कि उन्होंने भव्य राम मंदिर को बनते हुए देख लिया। उनका निधन ऐसे समय में हुआ है जब राम मंदिर का काम पूरा हो चुका है। इसीलिए, पूरे देश में लोग कह रहे हैं कि 'वह राम मंदिर देखकर स्वर्ग सिधारे, यानी उनकी सबसे बड़ी इच्छा पूरी हो गई और वह शांति से दुनिया छोड़कर चले गए।

राष्ट्रीय किसान दिवस: चौधरी चरण सिंह के विचार आज भी प्रासंगिक

सुनील कुमार महला

हमारे देश के पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न चौधरी चरण सिंह का यह मानना था कि 'भारत की आत्मा गाँवों में और गाँवों की आत्मा किसानों में बसती है।' चौधरी चरण सिंह जी यह बात बिल्कुल सत्य है, क्यों कि भारत विश्व का एक बड़ा कृषि प्रधान देश है और यहां की अधिकांश जनसंख्या कृषि पर ही निर्भर और आधारित है। यह भी कह सकते हैं भारतीय अर्थव्यवस्था भी एक कृषि आधारित अर्थव्यवस्था ही है। बहरहाल, यहां पाठकों को बताता चलूं कि 23 दिसंबर को भारत के पूर्व प्रधानमंत्री (पांचवें प्रधानमंत्री) चौधरी चरण सिंह की जयंती है और इसे हमारे देश में राष्ट्रीय किसान दिवस के रूप में मनाया जाता है और इस दिवस को औपचारिक रूप से मनाने की शुरुआत 2001 में हुई थी। वास्तव में, चौधरी चरण सिंह किसानों के सच्चे हितैषी माने जाते हैं। उल्लेखनीय है कि वर्ष 1902 में नूरपुर, मेरठ, उत्तर प्रदेश में जन्मे, चौधरी चरण सिंह एक भारतीय राजनीतिज्ञ और स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्होंने भारत के पाँचवें प्रधानमंत्री (1979-80) के रूप में कार्य किया। उन्होंने दो बार उप-प्रधानमंत्री (जनवरी-जुलाई 1979) और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में भी कार्य किया। इतना ही नहीं, उन्होंने उत्तर प्रदेश विधानसभा में छपरौली (वर्ष 1937, 1946, 1952, 1962, 1967) और बाद में बागपत के सांसद के रूप में प्रतिनिधित्व भी किया।कहना ग़लत नहीं होगा कि भारत रत्न चौधरी चरण सिंह जी ने किसानों को हकदार बनाया, दलितों-पिछड़ों को जमीन का मालिक बनाया और स्वाभिमान से जीने का हक दिया। गांधीवादी विचारधारा के चौधरी चरण सिंह ने विदेशी विचारों पर आधारित सहकारी खेती के सिद्धांत का इसलिए तीखा विरोध किया, क्योंकि उनका मानना था कि भारत का किसान अपनी ज़मीन से भावनात्मक, सामाजिक और आर्थिक रूप से जुड़ा है। ज़मीन का सामूहिक स्वामित्व किसान की मेहनत, जिम्मेदारी और आत्मसम्मान को कमजोर करता है। उनके अनुसार छोटा किसान अपनी निजी भूमि पर ही सबसे अधिक उत्पादक और स्वतंत्र होता है। उन्होंने नमक सत्याग्रह में भाग लेकर औपनिवेशिक सत्ता के खिलाफ प्रतिरोध दर्ज किया। यह उनके भीतर बसे राष्ट्रवाद और सामाजिक न्याय के भाव को दर्शाता है। स्वतंत्रता के बाद उन्होंने सत्ता को साधन नहीं, बल्कि किसानों के उत्थान का माध्यम माना।उनका सबसे क्रांतिकारी योगदान जमींदारी प्रथा का उन्मूलन था। इस ऐतिहासिक कदम से पहली बार किसान केवल खेत जोतने वाला नहीं, बल्कि जमीन का वास्तविक मालिक बना। इससे ग्रामीण समाज में शक्ति-संतुलन बदला और शोषण की सदियों पुरानी व्यवस्था टूटी।चौधरी साहब की विशेषता यह थी कि वे किसी भी राजनीतिक या वैचारिक दबाव में नहीं झुके। चाहे समाजवादी खेमा हो या विदेशी मॉडल अपनाने का आग्रह-उन्होंने हमेशा भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप नीतियों की वकालत की। पाठकों को बताता चलूं कि किसानों को प्रशासनिक स्तर पर ताकत देने के लिए उन्होंने लेखपाल पद का सृजन किया। इससे किसान को पहली बार सरकारी तंत्र में सीधी पहुंच मिली और भूमि अभिलेख, अधिकार और न्याय की प्रक्रिया सरल हुई।इस प्रकार चौधरी चरण सिंह केवल नेता नहीं थे, बल्कि किसानों के आत्मसम्मान, स्वामित्व और स्वावलंबन के प्रतीक थे। सच तो यह है कि किसानों के लिए चौधरी चरण सिंह ने बहुत कुछ किया, और चूंकि वे स्वयं एक किसान परिवार से थे, उनकी नीतियाँ भी ज़मीनी थीं। उनका यह मानना था कि औद्योगिक विकास से पहले हमारे देश की कृषि सशक्त होनी चाहिए।

कृषि सशक्त होगी तो हमारे देश की अर्थव्यवस्था सशक्त होगी और हमारे देश की अर्थव्यवस्था सशक्त होगी तो हम सभी सशक्त होंगे। उनकी नीतियाँ आज भी यह संदेश देती हैं कि भारत की प्रगति का रास्ता खेत और किसान से होकर ही गुजरता है। बहरहाल, यहां पाठकों को बताता चलूं कि 1965 में तत्कालीन प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने जय 'जवान, जय किसान' का एक ऐतिहासिक और प्रेरणादायक नारा दिया था। कहना ग़लत नहीं होगा कि देश की सीमाओं की रक्षा करने वाला जवान और देश का पेट भरने वाला किसान-दोनों ही राष्ट्र की असली ताकत हैं। जवान देश को सुरक्षा देता है, तो किसान अन्न देता है; दोनों के बिना देश सुरक्षित और समृद्ध नहीं हो सकता। लाल बहादुर शास्त्री जी की भांति ही चौधरी चरण सिंह जी का यह मानना था कि किसान ही देश की असली ताकत हैं। दूसरे शब्दों में कहना ग़लत नहीं होगा कि उन्होंने अपने विचारों और नीतियों में किसानों के हितों को सर्वोपरि रखा। उनका मानना था कि भारत की अर्थव्यवस्था की असली नींव किसान हैं। जब तक किसान खुशहाल नहीं होगा, तब तक देश का विकास अधूरा रहेगा। उन्होंने कहा कि भारत जैसे

कृषि-प्रधान देश में खेती को नजरअंदाज कर उद्योगों पर अत्यधिक जोर देना गलत है। कृषि मजबूत होगी तभी उद्योग भी टिक पाएंगे।वे स्पष्ट रूप से कहते थे कि किसान सबसे ज्यादा मेहनत करता है, लेकिन उसे अपनी फसल का उचित मूल्य नहीं मिलता। बिचौलियों और गलत नीतियों से किसान का शोषण होता है। वे भूमि सुधारों के प्रबल समर्थक थे। उनका मानना था कि जो किसान जमीन जोतता है, वही उसका असली मालिक होना चाहिए।उन्होंने चेतावनी दी थी कि गांवों और किसानों की उपेक्षा सामाजिक असंतोष और आर्थिक असंतुलन को जन्म देगी।उनका विचार था कि किसान को कर्ज, बीज, सिंचाई और बाजार की सही सुविधाएं मिलें, ताकि वह आत्मनिर्भर बन सके और सम्मानजनक जीवन जी सके।संक्षेप में कहें तो चौधरी चरण सिंह किसानों को केवल अन्नदाता नहीं, बल्कि राष्ट्र-निर्माता मानते थे और चाहते थे कि नीति-निर्धारण के केंद्र में किसान हो। ये चौधरी चरण सिंह थे जिन्होंने हमारे देश में भूमि सुधार और छोटे किसानों के हित में कई फैसले लिए।

उल्लेखनीय है कि उन्होंने विकेंद्रीकरण, ज़मीनी स्तर पर शासन और स्थानीय आर्थिक स्वायत्तता को बढ़ावा दिया । उन्होंने ऋण राहत विधेयक, 1939 का प्रारूप तैयार किया, जिससे किसानों को साहूकारों से मुक्ति मिली तथा जोत सीमा आरोपण अधिनियम, 1960 में भूमि की अधिकतम सीमा को कम करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इतना ही नहीं, उन्होंने न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) की वकालत की, भूमिहीनों को लाभ पहुँचाने के लिये चकबंदी अधिनियम (1953) तथा उत्तरप्रदेश जमींदारी और भूमि सुधार अधिनियम (1952) पेश किये तथा कृषि-बाज़ार बुनियादी ढाँचे का निर्माण करते हुए कृषि उपज (ग्रेडिंग और मार्केटिंग) अधिनियम (1938) का प्रस्ताव रखा।ग्रामीण विकास विभाग को मंत्रालय का दर्जा दिया तथा नाबार्ड की स्थापना में भी उन्होंने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई । दूसरे शब्दों में कहें तो वर्तमान की पहलें जैसे-किसानों की आय दोगुनी करना, एमएसएमई प्रोत्साहन, पंचायती राज और नैतिक प्रशासन उनके दूरदर्शी विचारों से प्रेरित हैं। बहरहाल, किसान सिर्फ अन्नदाता ही नहीं है, बल्कि वे पर्यावरण और पारिस्थितिकी के रक्षक भी हैं और हमारे देश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था की असली रीढ़ भी किसान ही हैं।सरल शब्दों में कहें तो खेती भारत की सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान का मूल है। हाल फिलहाल, यदि हम यहां पर किसान दिवस के उद्देश्यों की बात करें तो इस दिवस का मुख्य उद्देश्य हमारे देश के किसानों के विभिन्न अधिकारों, उनकी विभिन्न समस्याओं और उनके योगदान को राष्ट्रीय विमर्श में लाना, भारतीय कृषि को अधिक लाभकारी, सम्मानजनक और टिकाऊ पेशा बनाना,नई पीढ़ी को खेती या कृषि कार्यों से जोड़ना तथा नीतियों में किसान-केंद्रित सोच को मजबूत करना है। पाठकों को बताता चलूं कि साल 2024 में थीम 'एक समृद्ध राष्ट्र के लिए अन्नदाताओं को सशक्त बनाना' रखी गई थी, जिसका उद्देश्य किसानों को संसाधन, अवसर और सतत कृषि के लिए समर्थन देने पर केंद्रित था। वास्तव में,किसान का सम्मान ही देश का सम्मान है। यदि हमारे देश के खेत सुरक्षित होंगे, तभी हमारे देश का भविष्य भी सुरक्षित होगा,यही किसान दिवस का असली संदेश है। बहरहाल, आज भी भारत में किसानों के सम्मुख अनेक प्रकार की समस्याएं हैं।

दरअसल,भारत में किसानों की प्रमुख समस्याएँ आर्थिक असुरक्षा, प्राकृतिक जोखिम(जैसा कि भारतीय कृषि मानसून का जुआ कहलाती है) और नीतिगत चुनौतियों से जुड़ी हुई हैं। बढ़ती उत्पादन लागत के बावजूद फसलों के उचित दाम नहीं मिल पाते, जिससे किसानों की आय अस्थिर रहती है। कर्ज़ का बोझ भी एक बड़ी समस्या है, क्योंकि फसल खराब होने या बाजार में कीमत गिरने पर किसान ऋण चुकाने में असमर्थ हो जाते हैं। कृषि आज भी काफी हद तक मानसून पर निर्भर है, जैसा कि ऊपर इस आलेख में चर्चा कर चुका हूं, और जलवायु परिवर्तन के कारण सूखा, बाढ़ व ओलावृष्टि जैसी आपदाएँ खेती को लगातार नुकसान पहुँचा रही हैं। सिंचाई सुविधाओं की कमी, छोटे और बँटे हुए खेत, बिचौलियों का दबदबा, भंडारण व प्रसंस्करण की अपर्याप्त व्यवस्था तथा फसल बीमा और सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन में खामियाँ किसानों की समस्याओं को और गहरा करती हैं। इन सबके परिणामस्वरूप किसानों में असुरक्षा, तनाव और खेती से मोहभंग बढ़ रहा है, जो देश की कृषि व्यवस्था के लिए गंभीर चुनौती है। पाठकों को बताता चलूं कि भारत में अधिकांश किसान सीमांत और छोटे किसान हैं, जिनकी जोत 2 हेक्टेयर से भी कम है। हालांकि, आज सरकार किसानों के लिए कई स्तरों पर काम कर रही है। किसानों की आय बढ़ाने के उद्देश्य से प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के तहत सालाना 6,000 रुपये सीधे उनके खाते में दिए जा रहे हैं, वहीं किसान क्रेडिट कार्ड के माध्यम से कम ब्याज पर कृषि ऋण भी किसानों को उपलब्ध कराया जा रहा है। फसलों को प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षित रखने के लिए प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना लागू है, जिससे नुकसान की भरपाई हो सके। खेती की लागत कम करने के लिए उर्वरकों पर सब्सिडी, मिट्टी स्वास्थ्य कार्ड के जरिए मिट्टी की जांच, और आधुनिक कृषि तकनीक को बढ़ावा दिया जा रहा है। सरकार डिजिटल एग्रीकल्चर मिशन, सिंचाई परियोजनाओं, भंडारण व कोल्ड स्टोरेज जैसी सुविधाओं के विस्तार पर भी ध्यान दे रही है, ताकि किसानों को बेहतर बाजार और सही दाम मिल सके। इसके अलावा किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) के माध्यम से किसानों को संगठित कर उनकी सौदेबाजी की ताकत बढ़ाई जा रही है। कुल मिलाकर सरकार का फोकस किसानों की आय, सुरक्षा, तकनीक और बाजार तक पहुंच को मजबूत करने पर है। निस्संदेह आज सरकार द्वारा किसानों के लिए अनेक योजनाएँ और सुविधाएँ चलाई जा रही हैं, फिर भी ज़मीनी स्तर पर किसानों की समस्याएँ पूरी तरह समाप्त नहीं हो पाई हैं। इसका कारण यह है कि कृषि केवल योजनाओं से नहीं, बल्कि मौसम, बाज़ार, संसाधनों और सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों से गहराई से जुड़ा हुआ क्षेत्र है।

अंत में यही कहूंगा कि किसान ही हमारे देश और अर्थव्यवस्था की असली रीढ़ हैं, क्योंकि खाद्य सुरक्षा, रोज़गार और औद्योगिक विकास प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कृषि पर ही निर्भर हैं। इसलिए किसानों को केवल सहायता का पात्र नहीं, बल्कि विकास का साझेदार मानना आवश्यक है। किसानों को प्रगतिशील, आत्मनिर्भर और खुशहाल बनाने के लिए आधुनिक तकनीक, वैज्ञानिक खेती, उचित मूल्य, सशक्त भंडारण-विपणन व्यवस्था और समय पर ऋण जैसी व्यवस्थाओं को प्रभावी ढंग से लागू करना होगा। हमें यह याद रखना चाहिए कि आर्थिक रूप से मजबूत किसान ही सशक्त राष्ट्र की नींव रख सकता है। किसानों की समस्याओं का समाधान किसी एक उपाय से नहीं, बल्कि नीति, तकनीक, बाज़ार और सामाजिक स्तर पर समन्वित व दीर्घकालिक रणनीतियों से संभव है। इसमें लागत के अनुरूप एमएसपी का प्रभावी क्रियान्वयन, फसल विविधीकरण, बेहतर सिंचाई व जल प्रबंधन, कृषि तकनीक व प्रशिक्षण का विस्तार, बाज़ार तक सीधी पहुँच, भंडारण-प्रसंस्करण सुविधाएँ, सरल व भरोसेमंद फसल बीमा तथा सस्ती ऋण व्यवस्था शामिल हैं। साथ ही, ग्रामीण बुनियादी ढाँचा, शिक्षा-स्वास्थ्य और सामाजिक-मानसिक समर्थन भी किसानों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने में अहम भूमिका निभाते हैं। इन सभी उपायों के समन्वित क्रियान्वयन से ही किसानों का भविष्य सुरक्षित और उज्ज्वल बनाया जा सकता है।

फ्रीलांस राइटर, कॉलमिस्ट व युवा साहित्यकार, पिथौरागढ़,उत्तराखंड।

डिजिटल दक्षता से कैरियर में कामयाबी

● विजय गर्ग

शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, बैंकिंग, पत्रकारिता, कानून, मीडिया या इंजीनियरिंग आदि हर क्षेत्र डिजिटल टेक्नोलॉजी से ही संचालित होता है। इसलिए कैरियर के लिए ये क्षमताएं जरूरी हैं। जानकारी खोजने की डिजिटल क्षमता, ई-मेल प्रस्तुति और ऑनलाइन संचार, एआई टूल्स का उपयोग, एक्सेल पॉवर, वीआई जैसे डाटा टूल्स, टीम वर्क के लिए जूम, स्लैक, टीम्स जैसे प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल, सोशल मीडिया और डिजिटल ब्रांडिंग आदि जो व्यक्ति अपने कैरियर में इन्हें नहीं अपनाता या अपनाने की क्षमता नहीं रखता, तो समझिये वो जॉब मार्केट से बाहर हो गया।

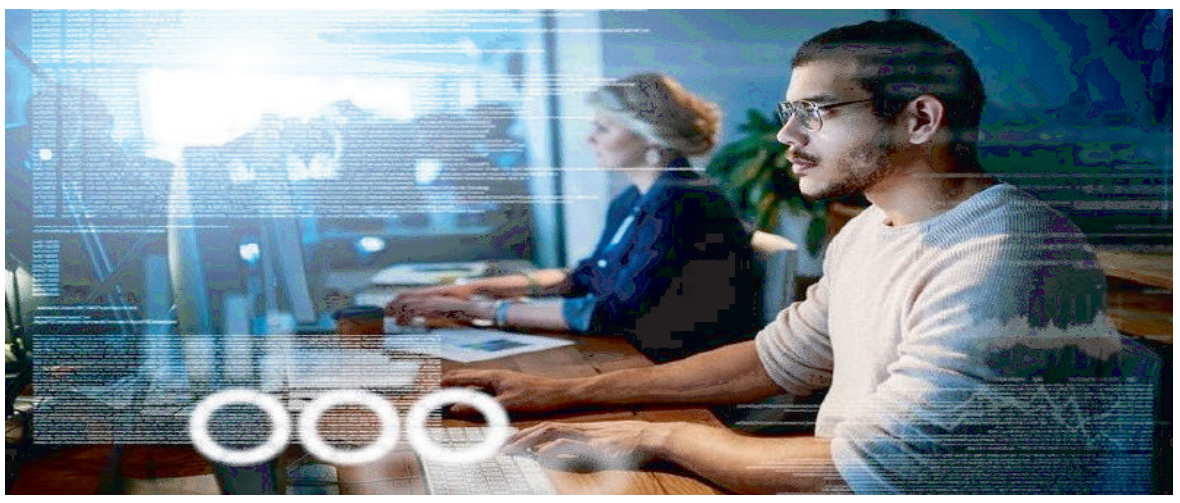

कामकाजी दुनिया में तेजी से बदलाव हुआ है। एआई आटोमेशन, रिमोट वर्क, एप इकोनॉमी और डेटा ड्रिवन फैसलों ने हर सेक्टर की कार्यशैली को नई दिशा दी है। टेक्नॉलोजी में माहिर कर्मचारी ही कंपनी की पहली पसंद होते हैं।

आज की दुनिया में कैरियर सिर्फ डिग्री या अनुभव पर नहीं रुकते। प्रोफेशनल सफलता की परिभाषा अब बिल्कुल बदल चुकी है। कंपनियों से लेकर स्टार्टअप तक हर जगह डिजिटल टेक्नोलॉजी में माहिर होना अब सबसे ऊंची मैरिट है। डिजिटल टेक्नोलॉजी को समझना और उसे अपने कामकाज में इस्तेमाल करना, स्मार्ट होने का सबसे बड़ा पैमाना है।

दरअसल, पिछले एक दशक से कामकाजी दुनिया में तेजी से बदलाव हुआ, एआई आटोमेशन, रिमोट वर्क, एप इकोनॉमी और डेटा ड्रिवन फैसलों ने हर सेक्टर की कार्यशैली को नई दिशा दी है। क्योंकि अब किसी भी जगह कागज पर काम नहीं होता। हर विभाग का केंद्र डाटा बन चुका है। मीटिंग अब ऑफिस में कम, ऑनलाइन ज्यादा होती है। इसलिए टेक और सक्षम कर्मचारी ही कंपनी की पहली पसंद होती है। ऐसे में कामयाब होना है तो डिग्री+डिजिटल स्किल में दक्षता हासिल करिए।

डिजिटल टेक आज की प्रोफेशनल भाषा

शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, बैंकिंग, पत्रकारिता, कानून, मीडिया या इंजीनियरिंग आदि हर क्षेत्र डिजिटल टेक्नोलॉजी से ही संचालित होता है। इसलिए कैरियर के लिए ये क्षमताएं जरूरी हैं। जानकारी खोजने की डिजिटल क्षमता, ई-मेल प्रस्तुति और ऑनलाइन संचार, एआई टूल्स का उपयोग, एक्सेल पॉवर, वीआई जैसे डाटा टूल्स, टीम वर्क के लिए जूम, स्लैक, टीम्स जैसे प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल, सोशल मीडिया और डिजिटल ब्रांडिंग आदि जो व्यक्ति अपने कैरियर में इन्हें नहीं अपनाता या अपनाने की क्षमता नहीं रखता, तो समझिये वो जॉब मार्केट से बाहर हो गया।

एआई -हमारा नया सहकर्मी

साल 2025 का कार्यक्षेत्र एआई-सहयोगी होने के दौर में प्रवेश कर चुका है। याद रखिए एआई अब सिर्फ मशीन नहीं यह आपकी अदृश्य मददगार टीम है। आज एआई ही हमारे कैरियर को आगे बढ़ाता है। एआई से ही ज्यादातर शोधकर्ता शोध करते हैं। ई-मेल पर रिपोर्ट लिखने का यही बढ़िया माध्यम है। प्रस्तुतियां तैयार करना, प्रोजेक्ट प्लानिंग, कोड और ऑटोमेशन तथा इंटरव्यू की तैयारी व नये कौशल सीखने में सहायता पहुंचाना- ये सब एआई के जरिये ही संभव है। आज एआई के उपयोग करने वाले प्रोफेशनल उसी काम को दूसरे लोगों के मुकाबले 40 से 50 फीसदी कम समय में कर लेते हैं । इसलिए डिजिटल दक्षता हासिल कर लें।

जीवन रक्षक कौशल

आज कंपनियां अपने कर्मचारियों से यही पूछती हैं कि कौन सा डिजिटल टूल कितनी दक्षता से इस्तेमाल करते हैं। जरा इन कुछ डिजिटल तकनीकों पर नजर दौड़ाइये - डाटा एनालिटिक्स, साइबर सिक्योरिटी बेसिक्स, सोशल मीडिया मैनेजमेंट,ऑटोमेशन टूल्स, एक्सल एडवांस, ग्राफिक-वीडियो टूल, सीआरएम/ईआरपी सॉफ्टवेयर, एआई सपोर्ट तथा वर्क फ्लो- ये सारे के सारे कोर्स अब मैरिट लिस्ट का आधार बन चुके हैं और करीब-करीब हर क्षेत्र की नौकरी का हिस्सा हैं।

डिजिटल नेटवर्किंग

लिंक्डइन जैसे प्लेटफॉर्म अब रेज्यूमे से कहीं ज्यादा शक्तिशाली साबित हुए हैं। यहां की आपकी तस्वीर, प्रोफाइल, पोस्ट, कमेंट, बातचीत, सब आपकी डिजिटल पहचान बनाते हैं। डिजिटल नेटवर्किंग के बहुत फायदे हैं। इससे हमारी अवसरों तक सीधे पहुंच बनती है। इंडस्ट्री लीडर से सीधा संवाद होता है। नौकरियों का पता चलता है और प्रोजेक्ट तथा फ्रीलांस काम होते हैं। यहां हर व्यक्ति अपने आपमें सेल्फ ब्रांड होता है। आज 50 प्रतिशत से ज्यादा नौकरियां रेफरल या नेटवर्क से मिल रही हैं। इससे पता चलता है कि क्यों डिजिटल टेक्नोलॉजी में दक्षता जरूरी है।

डिजिटल टेक के जरिये ई-लर्निंग

आज सफल कैरियर का मंत्र है- 'जो सीखना बंद कर देता है, वह बढ़ना भी बंद कर देता है।'

डिजिटल टेक्नोलॉजी की सबसे बड़ी देन है, ऑनलाइन सीखने की आजादी। कोरसेरा, उडेमी, एनबीटीएल, गूगल सर्टिफिकेट्स व 'यू-ट्यूब यूनिवर्सिटी'। आज भला ऐसा कौन सा प्लेटफॉर्म है जहां जबर्दस्त ज्ञान नहीं बिखरा पड़ा। लेकिन अगर आप डिजिटल टेक्नोलॉजी से अंजान हैं, तो यह सारा ज्ञान आपके लिए नहीं है। वास्तव में डिजिटल टेक्नोलॉजी हमें तेजी से बदलती है। अगर सप्ताह में दो या तीन घंटे की डिजिटल सीख अपनाते हैं, तो हम इसमें दक्षता हासिल करके अपने कैरियर को मनचाही उड़ान दे सकते हैं।

डिजिटल टेक से पर्सनल ब्रांडिंग

एचआर आपका सीवी देखने के लिए पहले गूगल पर आपका नाम सर्च करता है, जिसमें आपकी ऑनलाइन छवि ही वास्तव में छवि है। लिंक्डइन पर नियमित पोस्ट करें, अपने काम की उपलब्धियों को साझा करें और नये कार्यों की उपलब्धियां साझा करें। इससे आपकी जॉब मार्केट में बहुत आकर्षक व प्रभावशाली तस्वीर बनेगी।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

लेखन की कला को भूल जाने वाली पीढ़ी

डॉ विजय गर्ग

डिजिटल युग ने हमारे जीवन को तेज़, सुविधाजनक और तकनीक-प्रधान बना दिया है। मोबाइल फोन, सोशल मीडिया और त्वरित संदेशों के इस दौर में संवाद पहले से कहीं आसान हुआ है, लेकिन इसी के साथ लेखन की कला धीरे-धीरे हाशिए पर जाती दिखाई दे रही है। आज की पीढ़ी शब्दों को गढ़ने, भावों को विस्तार देने और विचारों को सहेजने की कला को भूलती जा रही है। पहले लोग पत्र लिखते थे, डायरी रखते थे और अपने अनुभवों को शब्दों में पिरोते थे। लेखन केवल सूचना देने का साधन नहीं था, बल्कि आत्म-अभिव्यक्ति और चिंतन का माध्यम था। आज लंबे पत्रों की जगह छोटे संदेश, इमोजी और वॉइस नोट्स ने ले ली है। भावनाओं की गहराई कुछ प्रतीकों और संक्षिप्त वाक्यों तक सीमित हो गई है।

हस्तलेखन का महत्व भी कम होता जा रहा है। काग़ज़ और कलम की जगह कीबोर्ड और टचस्क्रीन ने ले ली है। जबकि शोध बताते हैं कि हाथ से लिखने से स्मरण शक्ति बढ़ती है, एकाग्रता सुधरती है और रचनात्मकता विकसित होती है। जब बच्चे लिखना कम करते हैं, तो सोचने और समझने की प्रक्रिया भी प्रभावित होती है।

पढ़ने की आदत में आई कमी भी लेखन की गिरावट का एक बड़ा कारण है। लेखन और पठन एक-दूसरे के पूरक हैं। जब पढ़ना केवल सोशल मीडिया पोस्ट और सुर्खियों तक सीमित रह जाता है, तो शब्द-भंडार सिकुड़ने लगता है। अच्छे पाठक के बिना अच्छा लेखक बनना कठिन है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और स्वचालित लेखन उपकरणों का बढ़ता उपयोग भी चिंता का विषय है। ये साधन सहायक हो सकते हैं, लेकिन इन पर अत्यधिक निर्भरता मौलिक सोच को कमजोर करती है। विचारों को स्वयं शब्दों में ढालने का संघर्ष ही लेखन को सशक्त बनाता है।

लेखन की कला का लुप्त होना केवल भाषा का नुकसान नहीं है, बल्कि विचारों की स्पष्टता, संवेदनशीलता और संवाद की गुणडवत्ता का भी ह्रास है। जिस समाज में लोग अपने विचार ठीक से व्यक्त नहीं कर पाते, वहाँ विमर्श और समझ भी कमजोर पड़ जाती है।

लेखन की कला को बचाने के लिए तकनीक से दूरी बनाना आवश्यक नहीं, बल्कि संतुलन ज़रूरी है। विद्यालयों में रचनात्मक लेखन को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, माता-पिता बच्चों को लिखने के लिए प्रेरित करें, और युवाओं को यह समझना होगा कि शब्दों में अपनी बात कहने का आनंद अद्वितीय है।

लेखन की कला पुरानी नहीं हुई है, वह केवल उपेक्षित हो गई है। यदि इस पीढ़ी ने इसे पूरी तरह भुला दिया, तो यह केवल शब्दों की नहीं, बल्कि सोच और संवेदना की भी क्षति होगी।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

किसान: वह शोरहीन क्रांति, जो देश को पालती है

प्रो. आरके जैन "अरिजीत"

आज की आधुनिक दुनिया जब चमकते महानगरों, डिजिटल तकनीक और तेज़ विकास की चकाचौंध में डूबी दिखाई देती है, तब किसान हमें हमारी जड़ों की ओर लौटने का संदेश देता है। वह भूमि का सच्चा योद्धा है, जो सूरज की पहली किरण से पहले खेतों में उतर जाता है और देर रात तक परिश्रम करता है। किसान दिवस, जो प्रतिवर्ष 23 दिसंबर को मनाया जाता है, केवल एक तिथि नहीं बल्कि उस विचार का प्रतीक है जो भारत को उसकी मिट्टी से जोड़ता है। यह दिन चौधरी चरण सिंह की स्मृति से जुड़ा है, जिनका जन्म 1902 में इसी दिन हुआ था। एक साधारण किसान परिवार से निकलकर भारत के पाँचवें प्रधानमंत्री बने चरण सिंह ने जमींदारी उन्मूलन, न्यूनतम समर्थन मूल्य और सहकारी आंदोलनों के माध्यम से किसानों को अधिकार और सम्मान दिलाया। वर्ष 2001 में भारत सरकार ने उनके योगदान को स्मरण करते हुए इस दिन को किसान दिवस घोषित किया।

किसान का महत्व भारत की आत्मा में गहराई से रचा-बसा है। वह केवल अन्नदाता नहीं, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था, सामाजिक संतुलन और खाद्य सुरक्षा का आधार स्तंभ है। भारत में करोड़ों किसान अपनी मेहनत से 146 करोड़ से अधिक लोगों का पेट भरते हैं और राष्ट्रीय आय में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। उत्तर प्रदेश, पंजाब और हरियाणा जैसे राज्यों की कृषि उपज भारत को वैश्विक कृषि शक्ति के रूप में पहचान दिलाती है। किसान पर्यावरण के संरक्षक भी हैं, जो मिट्टी की उर्वरता बनाए रखते हैं, जल संरक्षण करते हैं और जैव विविधता को जीवित रखते हैं। वर्ष 2025 में, जब जलवायु परिवर्तन का संकट गहराता जा रहा है, किसान दिवस यह स्मरण कराता है कि टिकाऊ विकास किसानों के बिना संभव नहीं है।

किसान भारतीय संस्कृति और परंपराओं का भी मूल आधार है। हमारे पर्व, लोकगीत, लोकनृत्य और त्योहार सीधे कृषि चक्र से जुड़े हुए हैं। बैसाखी, पोंगल, मकर संक्रांति और ओणम जैसे पर्व किसान की मेहनत और प्रकृति के साथ उसके गहरे संबंध को दर्शाते हैं। गाँवों की सामाजिक संरचना, आपसी सहयोग और सामूहिक श्रम की भावना कृषि से ही जन्मी है। किसान पीढ़ियों से पारंपरिक ज्ञान को सहेजते आए हैं, जिसमें मौसम, मिट्टी और बीजों की गहन समझ निहित है। आधुनिक विकास की दौड़ में इस सांस्कृतिक विरासत की अनदेखी नहीं की जानी चाहिए, क्योंकि यही भारतीय समाज की पहचान और आत्मा को जीवित रखती है।

फिर भी किसानों की राह कभी आसान नहीं रही। जलवायु परिवर्तन आज कृषि की सबसे बड़ी चुनौती बन चुका है। अनियमित वर्षा, बढ़ते तापमान, बाढ़ और सूखे ने फसलों को भारी नुकसान पहुँचाया है। हाल के वर्षों में कई राज्यों में आई बाढ़ और सूखे ने हजारों एकड़ भूमि को प्रभावित किया, जहाँ किसानों को दोबारा खेती योग्य जमीन तैयार करने के लिए संघर्ष करना पड़ा। जल संकट, गिरता भूजल स्तर और मिट्टी की घटती गुणवत्ता उत्पादन को कमजोर कर रही है। साथ ही, पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने वाली पद्धतियाँ संतुलन बिगाड़ रही हैं।

आर्थिक मोर्चे पर भी किसान अनेक दबावों से घिरा हुआ है। बढ़ती लागत, कर्ज का बोझ और बाजार की अस्थिरता किसानों को मानसिक तनाव में डाल रही है। छोटे और सीमांत किसान विशेष रूप से असुरक्षित हैं, जिनकी आय वैश्विक आर्थिक परिवर्तनों से सीधे प्रभावित होती है। डेयरी और बागवानी जैसे सहायक कृषि क्षेत्र भी अत्यधिक गर्मी और बदलते मौसम से प्रभावित हो रहे हैं। फसल के उचित मूल्य न मिलने से किसान की मेहनत का प्रतिफल अधूरा रह जाता है। ये समस्याएँ केवल किसानों तक सीमित नहीं, बल्कि पूरे देश की खाद्य सुरक्षा और सामाजिक स्थिरता से जुड़ी हुई हैं।

इन चुनौतियों से निपटने के लिए सरकार ने अनेक कल्याणकारी योजनाएँ लागू की हैं। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत किसानों को प्रत्यक्ष आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है, जबकि प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षा देती है। कृषि अवसंरचना फंड से भंडारण, परिवहन और विपणन सुविधाओं का विकास किया जा रहा है। एटीएमए (एग्रीकल्चरल टेक्नोलॉजी मैनेजमेंट एजेंसी) जैसी योजनाएँ किसानों को आधुनिक तकनीकी प्रशिक्षण देती हैं और डिजिटल प्लेटफॉर्म उन्हें बाजार की जानकारी उपलब्ध कराते हैं। वर्ष 2025 में शुरू की गई प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना और अन्य नई पहलों (जैसे दलहन आत्मनिर्भरता मिशन) से आत्मनिर्भर कृषि को प्रोत्साहन मिला है।

हालाँकि, इन योजनाओं की सफलता तभी सुनिश्चित हो सकती है जब उनका क्रियान्वयन पारदर्शी हो और अंतिम किसान तक उनकी पहुँच बने। कई बार जानकारी के अभाव या जटिल प्रक्रियाओं के कारण किसान इनका पूरा लाभ नहीं उठा पाते। नाबार्ड और अन्य संस्थानों द्वारा दी जा रही ऋण और सब्सिडी सहायता किसानों के लिए संबल बन सकती है, यदि उन्हें समय पर और सरल रूप में उपलब्ध कराया जाए। किसान दिवस इस दिशा में संवाद, समीक्षा और सुधार का अवसर प्रदान करता है, ताकि नीतियाँ ज़मीन पर प्रभावी रूप से उतर सकें।

आज कृषि के सामने एक और गंभीर चुनौती युवाओं का इससे दूर होना है। ग्रामीण युवा बेहतर शिक्षा और रोजगार की तलाश में शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं, जिससे खेती वृद्ध किसानों के भरोसे रह गई है। यदि कृषि को लाभकारी, तकनीक-आधारित और सम्मानजनक पेशा बनाया जाए, तो युवा इसमें रुचि ले सकते हैं। एग्री-टेक स्टार्टअप, स्मार्ट खेती, मूल्य संवर्धन और प्रत्यक्ष विपणन जैसे मॉडल युवाओं को कृषि से जोड़ सकते हैं। किसान दिवस युवाओं को यह संदेश देता है कि कृषि केवल परंपरा नहीं, बल्कि भविष्य की एक सशक्त संभावना भी है।

किसान दिवस के आयोजन को और अधिक सार्थक बनाने के लिए नवाचारी प्रयास आवश्यक हैं। स्कूलों और कॉलेजों में आधुनिक कृषि तकनीकों पर कार्यशालाएँ आयोजित की जा सकती हैं, जहाँ छात्र कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ड्रोन और स्मार्ट सिंचाई प्रणालियों के बारे में सीखें। कृषि मेलों में जैविक खेती और सफल किसानों के अनुभव साझा किए जाएँ। सोशल मीडिया के माध्यम से किसानों की प्रेरक कहानियों को सामने लाया जा सकता है। स्थानीय बाजारों में 'फार्म टू टेबल' जैसे आयोजन उपभोक्ताओं और किसानों के बीच सीधा संबंध स्थापित कर सकते हैं।

किसानों के सम्मान और सशक्तिकरण में उपभोक्ताओं की भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। सस्ता भोजन पाने की हमारी अपेक्षा के पीछे किसान की मेहनत, लागत और जोखिम छिपे होते हैं। स्थानीय और मौसमी उत्पादों को अपनाकर, भोजन की बर्बादी रोककर और उचित मूल्य देने की सोच विकसित कर हम किसानों का सहयोग कर सकते हैं। किसान दिवस हमें आत्मचिंतन का अवसर देता है कि हमारी दैनिक आदतें किसानों के जीवन को किस प्रकार प्रभावित करती हैं।

भविष्य की दृष्टि में किसान दिवस एक ऐसे भारत का सपना प्रस्तुत करता है, जहाँ परंपरा और तकनीक का संतुलित संगम हो। कृत्रिम बुद्धिमत्ता से मौसम पूर्वानुमान, ड्रोन से सटीक छिड़काव और डेटा आधारित खेती किसानों की आय और उत्पादकता बढ़ा सकती है। आने वाले वर्षों में भारत जैविक और सतत कृषि का वैश्विक केंद्र बन सकता है, जहाँ किसान केवल उत्पादक नहीं बल्कि उद्यमी भी हों। महिलाओं और युवाओं की बढ़ती भागीदारी कृषि को नई दिशा देगी। यह सपना तभी साकार होगा जब समाज हर दिन किसानों के प्रति सम्मान और सहयोग का भाव रखे। किसान दिवस हमें संकल्प लेने की प्रेरणा देता है कि हम भूमि के इन योद्धाओं की आवाज़ को कभी दबने न दें, क्योंकि जब किसान समृद्ध होता है, तभी राष्ट्र सशक्त और सुरक्षित बनता है।

कहानी ,: वजूद

डॉ विजय गर्ग

सुधा आश्चर्य से भैया को देख रही थी, नवीन अपने परिस्थितियों के आगे अपाहिज थे, लाचार थे... ईश्वर ने उनके साथ अच्छा नहीं किया पर क्या ये समाज भी मानसिक रूप से अपाहिज नहीं है। महान बनने का इससे अच्छा शॉर्टकट कोई हो ही नहीं सकता था, कहीं न कहीं इस रिश्ते के लिए पापा-मम्मी और भैया का मन भी गवाही नहीं दे रहा था, जिंदगी भर उसके हर छोटे-बड़े फैसले आज तक वो ही लोग ले रहे थे पर आज...।

सुधा के एम.ए. करते ही घर में जोर-शोर से शादी की बातें चलने लगी। पापा अखबारों और पत्रिकाओं में सिर डाले बैठे रहते और अपनी लाडो के लिए योग्य वर की तलाश करते रहते। कागजों के छोटे-छोटे टुकड़े पर योग्य वर... सुधा को न जाने क्यों कभी-कभी ऐसा लगता वो लड़कों का बायोडाटा नहीं एक लॉटरी है लगी तो ठीक वरना... सुधा एक अजीब-सा जीवन जी रही थी, हर दूसरे-तीसरे महीने घर की साफ-सफाई शुरू हो जाती। चादरें बदली जाने लगतीं, सोफे के नीचे झाड़ू डाल-डाल कर सफाई होने लगती, सुधा, मां की इस हरकत पर मन ही मन मुस्कुरा देती।

लड़के वाले उसे देखने आ रहे या फिर उसके घर को पर मां का यह भगीरथ प्रयास भी न जाने क्यों विफल हो जाता। सुधा देखने-सुनने में ठीक-ठाक थी पर न जाने क्यों लड़के वाले उसे हर बार मना कर देते।

लड़के वालों की मनाही कहीं न कहीं पूरे परिवार को तोड़ देती, कई दिनों तक घर में एक अजीब-सी नीरवता छा जाती। सब एक-दूसरे से नजरें चुराते रहते, सुधा एक अजीब-सी आत्मग्लानि से भर जाती। लड़के वालों के आने से पहले होने वाले ताम-झाम के पीछे छिपे अनावश्यक खर्चों से वो कसमसा कर रह जाती। पापा लड़के वालों को लुभाने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ते पर फिर भी... एक अजीब-सा अपराधबोध सुधा को लगातार घेर रहा था। लड़के वालों की लगातार मनाही से वो अंदर ही अंदर टूट रही थी। एक दिन मां भैया पर बुरी तरह चिल्ला पड़ी थी,

'कितनी बार कहा कि सुधा की फोटो किसी कायदे के स्टूडियो में खिचवाओ पर मेरी सुनता कौन है।'

'मां ! तुम भी न... फोटो का क्या है। मैंने तो उससे कहा भी था कि एक शेड गोरी करके प्रिंट निकालना पर पता नहीं इन लड़कों वालों का कुछ समझ नहीं आता। आखिर उनको बहू लानी है कि हीरोइन।'

मां न जाने क्यों अचानक से वहमी होती जा रही थी,

'सुधा के पापा... अबकी लड़के वाले आये तो उन्हें काजू वाली नहीं पिस्ते वाली मिठाई परोसेंगे। शुक्लाइन कह रही थी शुभ काम में सफेद नहीं रंगीन मिठाई खाई और खिलाई जाती है। हो सकता है लाडो की शादी इसी वजह से न हो पा रही हो।

सुधा की साड़ियों का रंग भी हर लड़के वाले कि मनाही के साथ बदलता जा रहा था। शायद? नवीन और उसका परिवार पिछले महीने ही देख कर गया था, नवीन के परिवार ने सुधा को देखते ही पसन्द कर लिया। मां के पैर तो जमीन पर ही नहीं पड़ रहे थे। सुधा ने भी कहीं न कहीं राहत की सांस ली, इस रोज-रोज के दिखावे से वो भी तंग आ चुकी थी। दो साल का वनवास आज ख़त्म हो गया था, वो खुश थी शायद इसलिए... क्योंकि घर में सब खुश थे। आज तक वो उनकी खुशी में ही तो खुश होती आई थी। खुद की खुशी क्या है... वो कब का भूल चुकी थी।

पापा और मम्मी नवीन के परिवार से आगे की बात करने के लिए कल सुबह ही निकल गए थे, रात में पापा के फोन आने के बाद घर में एक अजीब-सा भूचाल मचा हुआ था। सुधा पूरी रात सो नहीं पाई थी। भैया सुबह-सवेरे ही उसके कमरे में चले आये थे, वो उसे काफी देर तक समझाते रहे। सुधा विचारों के भंवर में डूब उतरा रही थी। भैया बिस्तर से उठ खड़े हुए,

'सुधा सोच लो, कोई दबाव नहीं है। पापा-मम्मी ने मुझ पर ये जिम्मेदारी छोड़ रखी है। कोई तुम्हारा बुरा नहीं चाहता, तुम जो फैसला लोगी वो सबको मंजूर होगा।'

भैया ने हाथ बढ़ाकर कमरे के पर्दे को हटाया और कमरे से बाहर निकल ही रहे थे कि सुधा ने पीछे से आवाज लगाई,

'भैया...'

'क्या हुआ... कुछ कहना चाहती हो... बोलो मैं सुन रहा हूं।'

भैया चुपचाप बिस्तर पर आकर बैठ गए, सुधा के चेहरे पर एक अजीब-सी बेचैनी थी। वो समझ नहीं पा रही थी कि बात कहां से शुरू करें।

'भैया ! आप बुरा न माने तो एक बात पूछूं?'

'बोल न... मैं सुन रहा हूं।'

भैया ने बड़े प्यार से सुधा के सिर पर हाथ फेरा।

'भैया ! अगर ऐसा ही रिश्ता आपके लिए आया होता तो क्या आप... आप तैयार होते, आप शादी के लिए हां कर देते।'

शायद ये बात कहने के लिए सुधा को बहुत हिम्मत जुटानी पड़ी थी, उसके चेहरे पर न जाने कितने रंग आये और गए। उसकी सांसें फूल रही थीं, जैसे वो न जाने कितने मीलों का सफर तय करके आयी थी। सच ही तो था, वो आज तक एक सफर में ही थी। एक ऐसा सफर, जिसके मंजिल की डोर हमेशा दूसरे के हाथों में थी। आज पहली बार उससे उसका फैसला पूछा गया था। फैसला ! अपनी ज़िंदगी का फैसला ...आज तक वो सिर्फ दूसरे के फैसले सुनती आई थी और मानती भी आई थी।

शिकायत नहीं थी उसे किसी से... होती भी तो किससे..., फैसले लेने वाले लोग भी अपने ही तो थे पर आज तक उसके जिंदगी के फैसले दूसरों ने ही लिए थे। किस साइड से उसे पढ़ना है, कौन से विषय उसे लेने चाहिए, कॉलेज जाने के लिए इस रंग का सूट नहीं... बिल्कुल भी नहीं, पढ़ने जा रहे हैं कोई बाजार-हाट घूमने नहीं। कॉलेज से इतने बजे तक आ जाना..... उफ्फ। सुधा ने अपने कान बन्द कर लिए... चारों तरफ विचारों का एक अजीब-सा कोलाहल था पर भीतर एक गहरा सन्नाटा पसरा हुआ था। माथे पर पसीने की चंद बूंदे गिरने लगीं।

'बोलिए न भैया ! क्या आपने ऐसे रिश्ते के लिए हां कही होती।'

'नहीं ! बिल्कुल भी नहीं !'

सुधा भैया के चेहरे पर अपने सवालों के जवाब ढूंढ़ती रही, भैया के इस एक शब्द से उसकी दुनिया हिल गई।

'क्यों..?'

'मेरे पास इतने सारे विकल्प हैं तो मैं क्यों ऐसी लड़की को पसन्द करूंगा। मुझे एक से एक लड़कियां मिल जाएगी। पढ़ा-लिखा हूं, अच्छा-खासा कमाता हूं, मुझे लड़कियों की कौन-सी कमी..., जो मैं ऐसी लड़की से शादी करूं।'

सुधा आश्चर्य से भैया का मुंह देखती रह गई, भैया अपनी ही दुनिया में मस्त थे। पुरुष होने का दम्भ अचानक से उनके चेहरे पर दिखने लगा था, पढ़ी-लिखी तो वो भी थी। शायद परिवार का प्रोत्साहन मिल जाता तो नौकरी भी कहीं न कहीं मिल ही जाती पर.....

'हमारी जाति में ज्यादा पढ़ाया नहीं जाता। इतना पढ़ा-लिखा लड़का कहां से लाएंगे, वैसे भी सम्भालनी तो गृहस्थी ही है, फालतू में समय और पैसा क्यों बर्बाद करना।'

कितनी आसानी से कह दिया था मां ने, कितना लड़ी थी उस दिन वो मां से...।

'अपनी जाति में लड़के न पढ़े इसलिए मैं भी न पढ़ूं, ये कहां का न्याय है। मेरे सपनों को क्यों कुचल रही हो मां..'

न जाने क्या सोचकर सुधा की आंखें भीग गईं पर भैया न जाने किस दुनिया में खोए हुए थे।

'सुधा ! गनीमत है लड़के वालों ने कुछ छिपाया नहीं, ये तो उनकी शराफत है वो चाहते तो छुपा भी सकते थे। भगवान का शुक्र है हमें शादी से पहले ही पता चल गया।'

'ऐसे कैसे छुपा लेते भैया... शादी-ब्याह का मामला है। दो परिवारों के विश्वास की बात है। उन्हें लगा होगा किसी तीसरे से पता चले उससे अच्छा है कि खुद ही बता दे।'

'तू कितनी भोली है, अभी तूने दुनिया देखी ही कहां है।'

भइया ने तर्क दिया

'भैया ! उन्हें भी डर था कि अब गोद भराई तक बात पहुंच गई है, अब नहीं बताया तो सब गड़बड़ हो जाएगा पर गड़बड़ तो हो गई न...।'

'गड़बड़ कैसी?'

'इतना बड़ा सच उन्होंने हमसे छुपाया और आप कह रहे हैं...'

'दिक्कत क्या है सुधा... इंजीनियर है... इकलौता है। शहर के बीचों-बीच दो मंजिला मकान है। पूरा परिवार तुम्हें हाथों-हाथ लिए रहेगा और क्या चाहिए तुम्हें...?'

'भैया ! उसके पैर में रॉड पड़ी है। कल...!'

'सुधा ! वो एक दुर्घटना थी। हड्डी टूट गई, डॉक्टर ने रॉड डाल दी। तुमने भी देखा है नवीन को चलने-फिरने में कोई दिक्कत नहीं है।'

'पर कल...!'

'कल क्या... उन्होंने बताया कि रॉड जिंदगी भर भी पड़ी रहे तो भी कोई दिक्कत नहीं और निकाल ले तो भी...।'

'पर...!'

'पर-वर कुछ नहीं।'

सुधा की आशंका गहराती जा रही थी, सुधा के पास इस रिश्ते से इंकार करने का सारे तर्क भैया ने ध्वस्त कर दिए थे। एक तरफ सबने फैसले लेने के सारे अधिकार भी उसके नाम से सुरक्षित कर दिए थे और दूसरी तरफ तर्क पर तर्क देकर उसकी शंका, उसके सवालों को ध्वस्त करते जा रहे थे। न जाने क्यों... उसे ऐसा लग रहा था मानो वो कोई विज्ञापन देख रही हो, जहां सामान की कोई गारंटी नहीं लेना चाहता और उद्घोषक वैधानिक चेतावनी के नाम पर नियम-कानून इतनी तेजी से बोलता है कि आप सुनकर भी सुन नहीं पाते।

'सुधा ! एक बात कहूं, पति अपने से कुछ कमतर हो तो जीवनभर अहसान तले दबे रहता है। परिवार तुम्हें देवी की तरह पूजेगा और समाज की नजरों में तुम हमेशा महान बनी रहोगी। जानती हो नवीन की मम्मी बता रही थी कि नवीन ने अपना सर्टिफिकेट भी बनवा रखा है, ट्रेन में उसका टिकट मुफ्त हो जाता है और साथ चलने वाला का आधा... मौज ही मौज रहेगी तुम्हारी।'

सुधा आश्चर्य से भैया को देख रही थी, नवीन अपने परिस्थितियों के आगे अपाहिज थे, लाचार थे... ईश्वर ने उनके साथ अच्छा नहीं किया पर क्या ये समाज भी मानसिक रूप से अपाहिज नहीं है। महान बनने का इससे अच्छा शॉर्टकट कोई हो ही नहीं सकता था, कहीं न कहीं इस रिश्ते के लिए पापा-मम्मी और भैया का मन भी गवाही नहीं दे रहा था, जिंदगी भर उसके हर छोटे-बड़े फैसले आज तक वो ही लोग ले रहे थे पर आज... । कहीं न कहीं भैया ने अपनी बातों से ये जता भी दिया था कि लड़कियों का क्या है उनके लिए कुछ भी चलता है पर क्या सच में... कल समाज को जवाब देते-देते वो थक जाएगी। कमी उसमें नहीं नवीन में थी पर उंगलियां हमेशा उस पर उठेगी, जरूर कोई बात होगी जो घर वालों ने ऐसे लड़के से शादी कर दी। महान बनने का इससे अच्छा मौका उसे नहीं मिलेगा पर क्या वो सचमुच अपने पति को बेचारे की तरह उम्र भर प्यार करना और चाहना चाहती है। आज पहली बार किसी ने उससे उसकी राय, उसका फैसला पूछा है। एक बारगी उसे नवीन पर दया भी आती थी पर कहीं न कहीं वो भी तो समाज के मानसिक विकलांगता की शिकार थी।

सुधा फैसला कर चुकी थी, इस फैसले का जो भी परिणाम हो पर अब वो समाज की खोखली विकलांगता का शिकार नहीं हो सकती। सभी को अपनी लड़ाई खुद लड़नी होगी, चाहे सामने कोई भी हो।

'भैया ! मैं माफी चाहती हूं, मैं ये शादी नहीं कर सकती। मम्मी-पापा को बता दीजियेगा। लड़के वालों को मना कर दें।'

भैया हक्के-बक्के से सुधा को देख रहे थे, शायद उन्हें सुधा से इस बात की उम्मीद नहीं थी। शायद वो भी ये मानकर चले थे कि लड़कियों के लिए कुछ भी चलता है पर नहीं बस अब और नहीं। किसी न किसी को तो कदम तो बढ़ाना ही होगा... सुधा का चेहरा आत्मविश्वास से चमक रहा था। सुधा के एक फैसले ने जता दिया कि लड़कियों के लिए कुछ भी नहीं चलता। सुधा सोच रही थी कि सही मायने में विकलांग कौन था नवीन या फिर समाज...?

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

छोटे-छोटे संकल्प समय के साथ चाबी बन जाते हैं जो हमारी गाड़ी को सही दिशा में चलाती है

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह
हरदा मध्य प्रदेश

लाखों की कीमत वाली गाड़ी सड़क पर दौड़ती हुई जितनी आकर्षक लगती है, उतनी ही असुरक्षित भी हो सकती है यदि उसके पास सही चाबी और मजबूत ब्रेक न हों, चाबी इंजन को चलाती है और ब्रेक उसे समय पर रोकते हैं, इन दोनों के बिना वही गाड़ी जानलेवा साबित हो सकती है, ठीक इसी प्रकार करोड़ों की लागत से बना हुआ भव्य मकान, ऊँची दीवारें, सुन्दर फर्नीचर और चमकदार सजावट के बावजूद तब तक सुरक्षित नहीं माना जा सकता जब तक उसके दरवाज़े पर लगा छोटा-सा ताला मज़बूत न हो, घर की पूरी संपत्ति, वर्षों की मेहनत और परिवार की सारी पूँजी उस छोटे-से धातु के टुकड़े पर निर्भर होती है, जो दिखने में साधारण होता है पर भीतर की हर अमानत का रक्षक बन जाता है, जीवन का सबसे बड़ा सत्य यही है कि बड़ी से बड़ी चीज़ें भी अक्सर बहुत छोटी-छोटी व्यवस्थाओं पर टिकी होती हैं, ये व्यवस्थाएँ न दिखाई देती हैं, न ही अधिकांश लोग उनका महत्व समझते हैं, लेकिन सुरक्षा और संतुलन का वास्तविक आधार वही बनती हैं। मनुष्य का व्यक्तित्व भी कुछ-कुछ ऐसा ही है, बाहर से दिखने वाली चीज़ें,जैसे सुन्दर चेहरा, महँगे कपड़े, ऊँचा पद, बड़ा घर या गाड़ी,सब गाड़ी की बॉडी और घर की सजावट की तरह हैं, वे दूसरों की नज़र को तो खींचती हैं लेकिन किसी भी संकट में हमें बचाने की शक्ति उनमें नहीं होती, जब जीवन मोड़ लेता है, परिस्थितियाँ विपरीत हो जाती हैं, लोग साथ छोड़ने लगते हैं, तब यह बाहरी चमक बेकार हो जाती है, उस समय जो चीज़ हमें गिरने से रोकती है, वह है हमारी सोच का ब्रेक और स्वभाव का ताला, यदि सोच सकारात्मक, संयमित और वास्तविक हो, तो कठिन से कठिन हालात में भी मन आशा की रोशनी देख लेता है, और यदि स्वभाव नम्र, करुणामय और सच्चा हो, तो रिश्ते टूटने की बजाय और गहरे हो जाते हैं। सोच हमारे भीतर का वह इंजन है जो हर सुबह को अर्थ देता है, जैसे ही आँख खुलती है, पहला विचार दिन की दिशा तय कर देता है, अगर पहला विचार शिकायत, निराशा या किसी के प्रति नफ़रत का हो, तो पूरा दिन धीरे-धीरे उसी रंग में रंगने लगता है, लेकिन यदि मन कृतज्ञता से भरकर उठे, यह महसूस करे कि एक और दिन मिला है कुछ अच्छा करने का, अपने आप को सुधारने का, किसी दुखी चेहरे पर मुस्कान लाने का, तो वही दिन साधारण होते हुए भी असाधारण बन जाता है, सकारात्मक सोच का अर्थ यह नहीं कि हम कठिनाइयों को नकार दें, बल्कि इसका अर्थ है कि हम कठिनाइयों के भीतर छिपा सबक और अवसर देखना सीखें, जो व्यक्ति हर घटना में सीख खोज लेता है, वह कभी टूटता नहीं, वह गाड़ी की तरह है जिसके ब्रेक कितनी भी तेज़ रफ़्तार में चलने पर उसे समय पर रोक लेते हैं, ऐसे लोग आवेश में आकर ऐसे निर्णय नहीं लेते जो बाद में पश्चाताप का कारण बनें। स्वभाव दूसरी चाबी है, यह हमारे व्यवहार, भाषा, चाल-ढाल और हमारी उपस्थिति से झलकता है, किसी से मिलते ही जो पहला प्रभाव पड़ता है, उसमें शब्दों से अधिक स्वभाव की भूमिका होती है, एक ही वाक्य प्रेमपूर्वक कहा जाए तो मरहम बन जाता है, वही वाक्य कटुता के साथ कहा जाए तो तीर की तरह घायल कर देता है, स्वभाव ही तय करता है कि हम अपने से छोटे लोगों के साथ कैसा व्यवहार करेंगे, किसी से हमें लाभ न हो, फिर भी क्या हम उसके प्रति सज्जन बने रहेंगे या नहीं, यह परीक्षा हमारे वास्तविक चरित्र की होती है, नम्र स्वभाव वाला व्यक्ति परिस्थितियों को अपने पक्ष में करने की जल्दी में नहीं रहता, वह समय को अपना साथी बनाकर धीरे-धीरे विश्वास जीतता है, उसके आसपास के लोग निश्चिंत होकर खुलते हैं, क्योंकि उन्हें महसूस होता है कि यहाँ कोई छल नहीं, कोई दिखावा नहीं, केवल सच्ची मानवता है, यही स्वभाव जीवन के हर रिश्ते के द्वार पर लगा वह ताला है जो अविश्वास, ईर्ष्या और स्वार्थ जैसे चोरों से रिश्तों को बचाकर रखता है। अनुशासन और आत्मनियंत्रण इन दोनों को संभालने वाली तीसरी शक्ति हैं, जिस तरह बेहतरीन इंजन और महँगी कार भी बेकार है यदि ब्रेक ढीले हों, उसी तरह उच्च शिक्षा, प्रतिभा और प्रतिभाशाली सोच भी हानिकारक हो सकती है यदि व्यक्ति अपने क्रोध, वासना, लालच और अहंकार पर ब्रेक न लगा सके, कई बार एक गलत क्षण में लिया गया निर्णय पूरी ज़िंदगी की मेहनत को नष्ट कर देता है, किसी पर अनायास बरसा दिया गया क्रोध, स्वार्थ में आकर किया गया छोटा-सा छल, या अपने आपको साबित करने के लिए बोले गए कुछ झूठ, यही वे पल होते हैं जहाँ आत्मनियंत्रण का ब्रेक हमें बचा सकता है, यदि व्यक्ति ने अपने भीतर यह क्षमता विकसित कर ली हो कि वह उत्तेजना के क्षण में भी दो पल ठहरकर सोच सके, तो उसके निर्णय अधिक संतुलित होते हैं, वह अपने और दूसरों के लिए सुरक्षा कवच बन जाता है, यही आत्मानुशासन है जो सोच को भी नियंत्रित करता है और स्वभाव को भी कोमल बनाए रखता है। आधुनिक जीवन में जहाँ सफलता का अर्थ अक्सर धन, प्रसिद्धि और प्रभाव से जोड़ा जाता है, वहाँ यह समझना और भी आवश्यक हो जाता है कि इन सबकी तुलना में सोच और स्वभाव कहीं अधिक कीमत रखते हैं, असली सफलता वह है जिसमें मन शांत हो, रात को नींद चैन से आए, और यह महसूस हो कि दिन भर किसी का दिल दुखाए बिना जी लिया, हज़ारों परिचितों से भरा जीवन उस एक व्यक्ति के आगे फीका पड़ जाता है जिसके साथ बिना डर, बिना संकोच, पूरी सच्चाई के साथ जी भरकर बातें की जा सकें, ऐसे संबंध केवल अच्छे स्वभाव और स्वच्छ सोच से ही जन्म लेते हैं, धन से खरीदे नहीं जा सकते, इसलिए यदि कभी अपने जीवन की दिशा पर संशय हो तो अपने आप से केवल दो प्रश्न पूछ लेना चाहिए,मेरी सोच मुझे ऊँचा उठा रही है या नीचे खींच रही है, और मेरा स्वभाव मेरे आसपास के लोगों के लिए आरामदायक है या बोझ, उत्तर यदि ईमानदारी से दिया जाए तो आगे का रास्ता अपने आप स्पष्ट हो जाता है। हर सुबह जब हम "सुप्रभात" या "गुड मॉर्निंग" कहते हैं, तो यह केवल औपचारिक अभिवादन न रहे, बल्कि अपने लिए एक गहरा संकल्प बन जाए, जैसे ही नया दिन शुरू हो, भीतर से आवाज़ आए कि आज अपनी सोच को शिकायत से बचाकर कृतज्ञता की ओर मोड़ना है, अपने स्वभाव से किसी को चोट नहीं पहुँचने देना है, चाहे जितनी जल्दी हो, चेहरे पर मुस्कान रखना है और भाषा को नरम बनाए रखना है, यही छोटे-छोटे संकल्प समय के साथ वह चाबी बन जाते हैं जो हमारी गाड़ी को सही दिशा में चलाती है, वही ताला बन जाते हैं जो हमारे व्यक्तित्व को हर नकारात्मकता से सुरक्षित रखता है, और तब हमारा जीवन केवल सफल नहीं, बल्कि सार्थक भी हो उठता है।

जी राम जी योजना का मजदूर वर्ग को सीधे फायदा होगा : रणधीर कलेर

संगरूर, (जगसीर सिंह) -

भाजपा पंजाब किसान मोर्चा के उपाध्यक्ष श्री रणधीर सिंह कलेर ने कहा कि केंद्र सरकार द्वारा लाई गई जी राम जी योजना का मजदूर वर्ग को सीधे फायदा होगा ,क्योंकि इस योजना में गरीब मजदूर जिसने इस योजना के अंतर्गत जो भी कार्य किया है, उसकी पेमेंट सीधे खाते में जमा होगी व गांवों में मनरेगा योजना में हो रहे भ्रष्टाचार को पूर्ण रूप से मुक्ति मिलेगी । श्री कलेर ने कहा कि इसके साथ साथ जी राम जी योजना में जो भी मज़दूर रजिस्टर्ड होंगे, उनको 125 दिनों के रोजगार की गारंटी होगी। योजना का मकसद सिर्फ रोजगार देना ही नहीं, बल्कि देश के ग्रामीण क्षेत्रों में गांवों का इन्फ्रास्ट्रक्चर बेहतर और सशक्त बनाना है,सड़कें, पुल, समुदाय भवन निर्माण, कृषि क्षेत्रों में मजदूर उपलब्धता और प्राकृतिक आपदाओं में असर कम हो इसके लिए सभी को स्किल ट्रेनिंग से लोकल ग्रामीण स्तर पर तैयार करना है।

विकसित भारत-जी राम जी बिल से खेती और गांव के मजदूरों को होगा फायदा : सरजीवन जिंदल

संगरूर, (जगसीर सिंह) - भारतीय जनता पार्टी के स्टेट एग्जीक्यूटिव मेंबर सरजीवन जिंदल ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि नरेगा स्कीम को भारतीय संसद ने अगस्त २००5 में पास किया था। इसे २ फरवरी २००6 को लागू किया गया था। २ अक्टूबर २००9 को नरेगा स्कीम का नाम बदलकर मनरेगा कर दिया गया। इस स्कीम का नाम हमारे देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की भावना के अनुरूप विकसित भारत-जी राम जी रखा गया है। इससे गांव के मजदूरों को इसका ज्यादा फायदा मिलेगा। इसके लिए 1,51,२8२ लाख करोड़ रुपये का बजट रखा गया है। इस स्कीम से राज्य सरकारें 30 दिन खेती, 30 दिन रबी की फसल और 60 दिन खरीफ की फसल की कटाई और बुवाई के लिए काम दे पाएंगी। इस नई स्कीम में 125 दिन का पक्का काम दिया जाएगा। पहले 100 दिन की गारंटी स्कीम थी, मज़दूर की मज़दूरी पहले 15 दिन बाद मिलती थी। अब उसकी मज़दूरी 7 दिन बाद मिलेगी। अगर मज़दूरी देने में देरी होती है, तो नियम के हिसाब से मुआवज़ा देना होगा। कांग्रेस पार्टी की सरकार में मनरेगा स्कीम का बजट सिर्फ़ 30,000 करोड़ रुपये था। अब यह पाँच गुना ज़्यादा है। हम देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी को धन्यवाद देते हैं कि उन्होंने डेवलप्ड इंडिया-जी-राम जी स्कीम पास की, और उनकी आगे की सोच से गाँव के मज़दूरों को बहुत फ़ायदा होगा।

हिसार जिले के उपमण्डल बरवाला में खोला जाए रोजगार कार्यालय - नरेश गुणपाल

बरवाला/हिसार/हाँसी/नारनौंद

आरटीआई एक्टिविस्ट नरेश गुणपाल ने पढ़े लिखे बेरोजगार युवाओं को रोजगार विभाग हरियाणा के अधीनस्थ मण्डल रोजगार कार्यालय हिसार में लगभग 65 से 70 किलो मीटर दूर से आने व जाने में हो रही दिक्कतों को मध्यनजर रखते हुए हिसार जिले के उपमण्डल बरवाला में रोजगार कार्यालय खोलने की मांग की हैं।

उन्होनें कहा कि दूरी अधिक होने के कारण मण्डल रोजगार कार्यालय हिसार में पढ़े-लिखे बेरोजगार युवाओं को समय की बर्बादी के साथ-साथ आर्थिक एवं मानसिक परेशानियों का भी सामना करना पड़ता है।

उन्होनें कहा कि उपमण्डल बरवाला के गांव बिठमड़ा की दूरी मण्डल रोजगार कार्यालय हिसार से लगभग 70 किलो मीटर पड़ती है, जिससे उन्हें हरेक्स पोर्टल पर पंजीकरण के बाद अपने दस्तावेजों के वैरीफिकेशन हेतु एवं सक्षम योजना स्कीम में पंजीकरण के बाद संबंधित दस्तावेज जमा करवाने हेतु मण्डल रोजगार कार्यालय हिसार में आना व जाना पड़ता है, जिससे उन्हें अनेकों परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

उन्होने कहा कि हाँसी जिला बनने के बाद उपमण्डल रोजगार कार्यालय हाँसी का दर्जा भी जिला रोजगार कार्यालय का हो जाएगा तो उपमण्डल रोजगार कार्यालय नारनौंद भी जिला रोजगार कार्यालय हाँसी के अधीनस्थ आ जाएगा, जो कि हाँसी जिला बनने से पहले दोनों उपमण्डल रोजगार कार्यालय हिसार के अधीनस्थ थे, तो दोनों उपमण्डल रोजगार कार्यायलयों का उचित माध्यम से पत्राचार भी सीधे तौर पर होता है, लेकिन जिला रोजगार कार्यालय हाँसी बनने के बाद, जिला रोजगार कार्यालय फतेहाबाद व सिरसा मण्डल रोजगार कार्यालय हिसार के अधीनस्थ ही रहेगें, लेकिन उप मण्डल रोजगार कार्यालय नारनौंद का उचित माध्यम से पत्राचार जिला रोजगार कार्यालय हाँसी बनने बाद रोजगार कार्यालय हाँसी के माध्यम से ही होगा नां कि सीधे तौर पर मण्डल रोजगार कार्यालय हिसार से होगा।

उन्होंने कहा कि मण्डल रोजगार कार्यालय हिसार में पहले ही पढ़े-लिखे बेरोजगार युवाओं का हरेक्स पोर्टल एवं सक्षम योजना स्कीम का काफी डाटा है।

उन्होंने कहा कि हाँसी जिला बनने के कारण मण्डल रोजगार कार्यालय हिसार के अधीनस्थ एक भी उपमण्डल नहीं रहेगा जिसका उचित माध्यम से पत्राचार मण्डल रोजगार कार्यालय हिसार से सीधे तौर पर हो सके।

उन्होंने कहा कि पढ़े-लिखे बेरोजगार युवाओं की समस्याओं को मध्य नजर रखते हुए राज्य सरकार को इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए।

उन्होंने कहा कि हिसार जिले से लेकर हाँसी जिले की दूरी लगभग 26 किलोमीटर की है जबकि उपमण्डल बरवाला की दूरी लगभग 40 किलोमीटर की है, इसलिए पढ़े-लिखे बेरोजगार युवाओं की समस्याओं का मध्य नजर रखते हुए उपमण्डल बरवाला के अंदर रोजगार कार्यालय का खोला जाना सर्वथा उचित है।

जहांगीर पुरी में पुलिस—पब्लिक मीटिंग आयोजित

– असामाजिक तत्वों, नशे व छीना-झपटी पर सख़्त कार्रवाई की मांग

नई दिल्ली। रेज़िडेंट वेलफेयर एसोसिएशन आई एवं जे ब्लॉक, जहांगीर पुरी के अध्यक्ष डॉ. एम. एल. भास्कर के नेतृत्व में क्षेत्र में एक पुलिस—पब्लिक मीटिंग का आयोजन किया गया। इस बैठक में आई एवं जे ब्लॉक के सैकड़ों क्षेत्रवासी उपस्थित रहे। बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में थाना महेंद्र पार्क के अतिरिक्त एस.एच.ओ. अरविंद व कई पुलिस अधिकारी मौजूद रहे। मीटिंग में उपस्थित लोगों ने क्षेत्र में सक्रिय असामाजिक तत्वों, नशे के अवैध कारोबार एवं छीना-झपटी की घटनाओं पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए पुलिस प्रशासन से सख़्त एवं प्रभावी कार्रवाई की मांग की। क्षेत्रवासियों ने पुलिस प्रशासन से इन समस्याओं पर शीघ्र कार्रवाई करने की अपील की। बैठक को संबोधित करते हुए अतिरिक्त एस.एच.ओ. अरविंद जी ने कहा कि पुलिस इन सभी मामलों को गंभीरता से संज्ञान में लेकर शीघ्र उचित कार्रवाई करेगी तथा क्षेत्र में शांति एवं सुरक्षा बनाए रखने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाएंगे। इस अवसर पर डॉ. एम. एल. भास्कर के अलावा रेज़िडेंट वेलफेयर एसोसिएशन के संरक्षक भाई जितेंद्र ढिका, कोषाध्यक्ष रविंद्र गुप्ता, उपाध्यक्ष संजय बागड़ी, बाबी, अनीश भाई, रोशन भाई, आशा मंगला, अरुण कुमार, रमेश बागड़ी, प्रेम एलाबादी, बाबूद्दीन, मास्टर शरीफ, राम शर्मा सहित सैकड़ों नागरिक उपस्थित रहे।

हैदराबाद इन्वेस्टर्स समिट सफल रहा , 67,000 करोड़ रुपये के इन्वेस्टमेंट प्रपोज़ल मिले

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : हैदराबाद में आयोजित दो दिन का इन्वेस्टर्स समिट सफल रहा।ओडिशा इंडसट्रियली डेवलप होगा। राज्य को इन्वेस्टमेंट के और मौके मिलेंगे। हैदराबाद इन्वेस्टर्स समिट में 13 MoUs के साथ 67,000 करोड़ रुपये के इन्वेस्टमेंट प्रपोज़ल मिले हैं। इन्वेस्टर मीट से लौटने के बाद मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में यह रिएक्शन दिया।मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि ओडिशा में इन्वेस्टमेंट पर दो राउंड टेबल मीटिंग हुईं। इन मीटिंग में फार्मा और डिफेंस में इन्वेस्टमेंट पर चर्चा हुई। फार्मा में 8 और डिफेंस में 27 मीटिंग हुईं। इसके अलावा मुख्यमंत्री ने 38 इन्वेस्टर्स से वन-टू-वन चर्चा की और 73 मीटिंग कीं। सरकार ने इन्वेस्टमेंट पर 500 इंडसट्रियल इंस्टीट्यूशन्स से बातचीत की। जिसके चलते राज्य सरकार ने 13 MOU साइन किए हैं। इससे 27,650 करोड़ रुपये का इन्वेस्टमेंट होगा और 15,905 लोगों को नौकरी मिलेगी। हैदराबाद इंडसट्रियल मीट में मैन्युफैक्चरिंग, हेल्थकेयर, डिफेंस, रिन्यूएबल एनर्जी, टेक्सटाइल में इन्वेस्टमेंट और सरकार की पॉलिसी पर चर्चा हुई। मुख्यमंत्री ने कहा कि वह खुद इंडस्ट्री लगाने का मामला देख रही हैं। सीएम मोहन माझी ने कहा कि अगर ज़रूरत पड़ी तो ओडिशा हैदराबाद की एक बड़ी डिफेंस कंपनी BHL को मिसाइल बनाने के लिए ज़रूरी पार्ट्स देगा। मोहन माझी ने कहा कि आने वाले दिनों में बेंगलुरु और कोलकाता में एक इन्वेस्टर समिट आयोजित किया जाएगा।

कानपुर में जारी कोहरे के कहर ने ली 2 किशोरों की जान, टकराईं बाइक

सुनील बाजपेई

कानपुर। यहां कड़ाके की ठंड के साथ लगातार जारी कोहरे का कहर लोगों की असमय ही जान लेने से नहीं चूक रहा है ,जिसके फल स्वरुप दो किशोरों की बाइकों के टकराने से मौत हो गई। घटना से उनके परिवार में कोहराम मचा हुआ है। उन्हें पुलिस ने लाशों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा है । यह हादसा अरौल थाना के पिहानी गांव में कोल्ड स्टोरेज के पास हुआ। दो किशोरों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि चार अन्य घायल हो गए। मौके पर पहुंची पुलिस ने बताया कि मृतकों की पहचान पिहानी गांव निवासी 17 साल के रितिक चतुर्वेदी और 16 साल के रौनक उर्फ बाबी के रूप में हुई है। रितिक, रौनक और नमन गौतम (16) कन्नौज के तेरामल्लू गांव से एक ही बाइक पर सवार होकर अपने गांव लौट रहे थे। जानकारी के मुताबिक टक्कर के बाद बाइकें सड़क पर दूर गिरीं पिहानी-तेरामल्लू रोड पर गांव के नजदीक कोल्ड स्टोरेज के पास घने कोहरे के कारण उनकी बाइक सामने से आ रही दूसरी बाइक से टकरा गई। दूसरी बाइक पर कोल्ड स्टोरेज का पल्लेदार सनोज अपने दो अन्य साथियों के साथ सवार थे। टक्कर इतनी भीषण थी कि दोनों बाइकें सड़क पर दूर जा गिरीं। राहगीरों की सूचना पर परिजन और ग्रामीण मौके पर पहुंचे। एंबुलेंस की मदद से सभी घायलों को तुरंत कन्नौज जिला अस्पताल पहुंचाया गया। अस्पताल में डॉक्टरों ने रितिक चतुर्वेदी और रौनक उर्फ बाबी को मृत घोषित कर दिया। अन्य चार घायलों का इलाज चल रहा है। इंस्पेक्टर जनार्दन सिंह यादव ने बताया कि तहरीर मिलने पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

पंजाब सरकार पूर्व सैनिकों की भलाई, सम्मान और सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध - मोहिंदर भगत

परिवहन विशेष न्यूज

संगरूर, (जगसीर सिंह) - पंजाब के रक्षा सेवा कल्याण, स्वतंत्रता सेनानी तथा बागवानी विभाग के कैबिनेट मंत्री श्री मोहिंदर भगत ने जोर देकर कहा कि पंजाब सरकार पूर्व सैनिकों की भलाई, सम्मान तथा सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए दृढ़ता से प्रतिबद्ध है। वे आज संगरूर स्थित माननीय कैप्टन करम सिंह सैनिक रेस्ट हाउस के नवीनीकरण के बाद उद्घाटन करने के लिए विशेष रूप से पहुंचे थे।

इस अवसर पर श्री राहुल चाबा डिप्टी कमिश्नर संगरूर, कर्नल जरनैल सिंह (सेवानिवृत्त), ओएसडी मुख्यालय, एसडीएम श्री चरनजोत सिंह वालिया, कमांडर दिलप्रीत सिंह कंग (सेवानिवृत्त), ज़िला रक्षा सेवा कल्याण अधिकारी संगरूर, नगर परिषद प्रधान श्री भूपिंदर सिंह तथा आम आदमी पार्टी के ज़िला प्रधान श्री श्याम सिंगला उपस्थित थे। समारोह को संबोधित करते हुए श्री भगत ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री भगवंत सिंह मान के नेतृत्व में पंजाब सरकार पूर्व सैनिकों की भलाई, सम्मान तथा सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि हम थलसेना, वायुसेना तथा नौसेना के उन जवानों के ऋणी हैं जिन्होंने दूर-दराज़ की सीमाओं की रक्षा के लिए बड़ी वीरता से लड़ाई लड़ी और उनमें से कई ने राष्ट्र की आज़ादी, एकता तथा अखंडता के लिए देश सेवा में सर्वोच्च बलिदान दिया। आज भी देश की वर्तमान स्थिति में वे बढ़-चढ़कर जूझ रहे हैं, जिन्होंने अपना आज कुर्बान करके हमारा कल सुरक्षित किया है। हम शहीदों के ऋणी हैं, जिनकी बदौलत हम इस खुशनुमा माहौल में जीवन व्यतीत कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि पंजाब सरकार ने देश के लिए जान न्योछावर करने वाले सैनिकों के परिवारों के लिए

सहायता राशि को 50 लाख रुपये से बढ़ाकर 1 करोड़ रुपये कर दिया है। इसके अलावा परिवार के एक सदस्य को स्थायी सरकारी नौकरी दी जाती है। सरकारी नौकरियों में पूर्व सैनिकों के लिए 13 प्रतिशत नौकरियां आरक्षित रखी गई हैं। पूर्व सैनिकों से संबंधित लंबित मामलों के निपटारे के लिए विशेष अभियान शुरू किया गया है। हर ज़िले में डिप्टी कमिश्नर की अध्यक्षता में तिमाही समीक्षा बैठकें अनिवार्य की गई हैं ताकि पूर्व सैनिकों से जुड़ी समस्याओं का तुरंत निपटारा किया जा सके। कैबिनेट मंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि सरकारी योजनाओं और सुविधाओं का लाभ हर योग्य पूर्व सैनिक तक समय पर पहुंचना चाहिए। इस समारोह में कैबिनेट मंत्री द्वारा 14 पूर्व सैनिकों तथा विधवाओं को 6,50,000 रुपये की आर्थिक सहायता के चेक भेंट किए गए तथा विकलांग पूर्व सैनिकों को इलेक्ट्रिक ट्राई-स्कूटर वितरित किए गए। पूर्व सैनिकों से मिलकर उनकी समस्याओं की जानकारी ली गई तथा उनकी कठिनाइयों और शिकायतों का शीघ्र समाधान करने का विश्वास दिलाया गया। उपस्थित सभी पूर्व सैनिकों तथा उनके आश्रितों को आश्वासन देते हुए उन्होंने कहा कि पंजाब सरकार उनकी भलाई के लिए प्रतिबद्ध है और उनकी समस्याओं के समाधान में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी जाएगी। उन्होंने पूरे कार्यालय स्टाफ, पूर्व सैनिकों तथा उनके आश्रितों से भी मुलाकात की। पत्रकारों के सवाल पर उन्होंने कहा कि किसान बागवानी विभाग से जुड़कर अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं। विभाग द्वारा "मेरा पिंड मेरा बाग" योजना शुरू की गई है, जिसके तहत गांवों में पंचायती ज़मीनों पर बाग लगाए जा रहे हैं ताकि पंचायतों की आय में वृद्धि हो सके तथा एक उदाहरण प्रस्तुत करके लोगों को बागवानी व्यवसाय से जोड़ा जाए।

इससे पहले ज़िला रक्षा सेवा कल्याण कार्यालय, संगरूर पहुंचने पर ज़िला प्रशासन द्वारा कैबिनेट मंत्री का गार्ड ऑफ ऑनर देकर हार्दिक स्वागत किया गया। उन्होंने सैनिक रेस्ट हाउस के नवीनीकरण का उद्घाटन किया तथा रेस्ट हाउस का दौरा किया। समारोह को कमांडर दिलप्रीत सिंह कंग ने भी संबोधित किया।

बीरमगुड़ा गौशाला में श्री गौमाता यज्ञ एवं 15 वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

जगदीश सीरवी

हैदराबाद, बीरमगुड़ा के अमीनपुर मंडल स्थित श्री ब्रह्मरम्भा मल्लिकार्जुना स्वामी गौशाला में श्री कामधेनु जीव रक्षा समिति ट्रस्ट के तत्वावधान में श्री गौमाता यज्ञ एवं 15 वाँ वार्षिक उत्सव भव्य रूप से आयोजित किया गया।

आज यहाँ जारी प्रेस विज्ञप्ति में चेयरमैन सोहनलाल दायमा व अध्यक्ष ए. दामोदर ने संयुक्त रूप से बताया कि गौभक्तों के सान्निध्य में कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रातः वेला में मंदिर को विशेष फूलों व लाइटिंग से सजाकर ठाकुरजी का श्रृंगार किया गया। तत्पश्चात हवन-यज्ञ, गौपूजन व दीप प्रज्वलित कर वार्षिकोत्सव का भव्य शुभारम्भ सहयोगकर्ता, पदाधिकारियों व गौभक्तों के सान्निध्य में किया गया। पंडित के मंत्रोच्चारण से हवन-यज्ञ कार्यक्रम में गौशाला पदाधिकारियों द्वारा पूजा-अर्चनाकर श्रीफल से आहुति दी गयी। एक शाम गौमाता के नाम जागरण भजन गायक डॉ ओमजी मुंडेल (डिगरना) ने तेजाजी महाराज के भजनों की प्रस्तुति दी। भजनों पर भावविभोर होकर झूमने लगे। राजस्थान से आए भजन गायक दिव्या वैष्णव जोधपुर, देवेन्द्र लांबिया, मंच संचालन पत्रकार शेखर सारस्वत थांवला ने राजस्थानी अंदाज में भजन प्रस्तुत किये।कार्यक्रम के पावन संत सानिध्य पीर मंगलनाथजी महाराज,श्रीश्री 1008 श्रीनारायणनाथजी महाराज, बाल योगी पीर लक्ष्मणनाथजी महाराज (मेवड़ा), दीपकनाथजी महाराज, महेन्द्र सिंहजी तंवर, श्रीश्री 1008 संत योगी स्वरूपनाथजी महाराज एवं संत धीरजरामजी महाराज के सान्निध्य में आयोजित यज्ञ में उपस्थित मुख्य अतिथि भाजपा तेलंगाना प्रदेश संगठन महामंत्री चन्द्रशेखर तिवारी , अविनाश देवड़ा,विधायक महिपाल रेड्डी, पांडु रंगा, नरसिंग, अंजी रेड्डी, पुष्पा यादव, एस. आदर्श रेड्डी, प्रवीण सिंह चौहान, कालू सिंह लोध, मनोहर भडियासर, शैलेंद्र उपाध्याय, व सर्व समाज अध्यक्ष व सचिव सम्मानित अतिथियों, दान-दाताओं व गौशाला से ट्रस्टियों को मंच पर आमंत्रित कर शॉल, पुष्प मालाओं व स्मृति चिह्न भेंट कर स्वागत किया गया। वेद सेवा व गौसेवा कार्यों के लिए ने समस्त गौसेवा दल को स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मान किया। श्री श्री 1008 श्री नारायण नाथ महाराज, ने अपने संबोधन में कहा कि गाय बचेगी तभी भारतीय संस्कृती बचेगी। सभी गौभक्तों को प्रतिदिन गौदान करते हुए दिन की शुरुआत करनी चाहिए। गौशाला में किये जा रहे कार्यों के लिए आयोजकों को उन्होंने शुभकामनाएँ दीं। विधायक महिपाल रेड्डी ने 15 वें वार्षिकोत्सव की गौभक्तों को शुभकामनाएँ देते हुए बताया कि तेलंगाना में बसे सभी प्रवासी बन्धु तेलंगानावासी हैं। राज्य के चहुमुखी विकास में प्रवासी बन्धुओं का विशेष सहयोग है। उन्होंने भरोसा दिलाया कि गौशाला की मदद के लिए वह हमेशा सहयोग करेंगे। पेपर विज्ञापन के लाभार्थी पुरुषोत्तम, राजकुमारी मिश्र (ज्ञानबाग कॉलोनी) के सहयोग के लिए आयोजकों द्वारा विशेष सम्मान किया गया। श्री ब्रह्मरम्भा मल्लिकार्जुना स्वामी गौशाला में श्री कामधेनु जीव रक्षा समिति ट्रस्ट के तत्वावधान में आयोजित श्री गौमाता यज्ञ एवं 15 वें वार्षिक उत्सव का दृश्य।अवसर पर चेयरमैन सोहनलाल दायमा ने पधारे गौभक्तों को वार्षिकोत्सव की शुभकामनाएँ देते हुए आह्वान किया कि जो सच्चे मन से गौमाता की सेवा करता है, वह हमेशा सुख सम्पन्न रहता है। प्रतिदिन गौमाता की सेवार्थ दान-पुण्यकर दर्शनमात्र से ही मानव का कल्याण हो जाता है। गौसेवा ही सर्वश्रेष्ठ सेवा है। उन्होंने बताया कि पाँच गौमाताओं से गौशाला का शुभारम्भ कर आज 15 वें वार्षिकोत्सव पर गौशाला में 1080 गौवंश व कबूतरों का दानदाताओं के सहयोग से व्यवस्थित संरक्षण हो रहा है। पधारे भक्तों के लिए भोजन प्रसादी की व्यवस्था गौशाला प्रांगण में की गई।

इस महोत्सव में करीब 8 से 10 हजार की संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। महोत्सव में ट्रस्ट बोर्ड चेयरमैन सोहनलाल दायमा , प्रसिडेन्ट ए. दामोदर रेड्डी , वाइस प्रसिडेन्ट अमृतलाल शर्मा, सुखदेव जोशी, के. भुपाल रेड्डी, मंत्री दीपक माली, सहमंत्री मांगीलाल चौधरी, अशोक पारीक ,कोषाध्यक्ष राजेन्द्र तिवाड़ी, संरक्षक ट्रस्टी सुरेशकुमार सिंघल, प्रहलाद दायमा, लक्ष्मीनारायण लोहिया, घनश्याम पटेल ट्रस्टी पुरुषोत्तम तिवाड़ी, श्याम सुन्दर दायमा, वेनाराम चौधरी, मनोजकुमार चोकडा, सुरेन्द्र गोयल, सतीशकुमार सोनी, विनोद कुमार बांगड, राजकुमारी मिश्र, मेघराज तिवाड़ी, महेन्द्र तिवाड़ी, श्यामसुन्दर लोहिया, शिवप्रकाश मंत्री, हर्ष अग्रवाल, लक्ष्मीनारायण सुंठवाल, महावीर जोशी, रमेशकुमार बोहरा, पुनाराम चौधरी, CA विनीत पारीक, सानतना बाबू, ए. नरसिम्हा रेड्डी, एल. सत्यनारायण रेड्डी, बी. के राघव रेड्डी, के. मल्लेश (कौन्सलर), जी.वी.वी. गिरी, ए. श्रीनिवास रेड्डी, CA कोमल, संदीप कोठारी, CA निकिता अग्रवाल, स्व. भाईलाल पटेल, शांताबेन पटेल, धरमिष्ठाबेन पटेल, अमित पटेल, राधा पटेल, अक्षय पटेल, मानसी पटेल, पी. जयकृष्णा रेड्डी, मनोज जैन, प्रेमराज बोहरा, सुरेश बोहरा, राम गोयल, बचनाराम, प्रेमेश्वर वैष्णव, बी. विठ्ठल, ओमप्रकाश गेहलोत, बी. श्रीनिवास (साई बुक हाऊस), समस्त श्री ब्रह्मराम्भा मल्लिकार्जुना स्वामी गौशाला ट्रस्ट एवं राजस्थानी गौशाला गैर मंडली *6 कौम, बिरमगुडा , सदस्यों, दान-दाताओं, रामदेव मित्र मंडल, राजस्थानी गैर मंडली, महिला मंडल का विशेष सहयोग रहा। कवरेज पत्रकार जगदीश सीरवी ने किया।सीधा युटुब चैनल लाईव प्रसारण एंड हरि ओम साउंड रविन्द्र नाथ काटेदान किया।अध्यक्ष ए. दामोदर रेड्डी ने पधारे सभी गौभक्तों का आभार प्रकट किया।

कॉरपोरेट रिमोट कंट्रोल के इशारों पर काम करना बंद करें स्थानीय प्रशासन - डॉ यादव (राकपा)

लांजीबेरना में धरना-प्रदर्शन, प्रशासन के खिलाफ आदिवासियों का महाजुटान
डीसीबीएल के पक्ष में भूमि अधिग्रहण का विरोध, फसल नष्ट होने से उबाल

परिवहन विशेष न्यूज

सुंदरगढ़ । सुंदरगढ़ जिले में डीसीबीएल कंपनी के पक्ष में किए जा रहे कथित अवैध भूमि अधिग्रहण और खनन पट्टे के विरोध में सोमवार को आदिवासी समुदाय का आक्रोश सड़कों पर फूट पड़ा। कुत्रा तहसील के लांजीबेरना क्षेत्र में प्रशासन के खिलाफ विशाल धरना-प्रदर्शन और महाजुटान का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में प्रभावित रैयत, ग्रामीण और सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि शामिल हुए।

जानकारी के अनुसार, डीसीबीएल कंपनी को खटांग और कुकुड़ा ग्राम पंचायत क्षेत्र की भूमि के लिए खनन पट्टा दिया गया है, जिसका ग्राम सभाओं ने एकमत से विरोध किया। ग्राम पंचायतों द्वारा प्रपत्र "एम" में अनापत्ति प्रमाण-पत्र (एनओसी) नहीं दी गई, वहीं प्रभावित परिवारों से प्रपत्र "जे" के तहत सहमति भी नहीं ली गई, जो कानूनी प्रक्रिया का स्पष्ट उल्लंघन है। भूमि अधिग्रहण के इस पूरे मामले को लेकर सर्वोच्च न्यायालय में एसएलपी (सिविल) केस संख्या-914/2025 दायर है, जो फिलहाल लंबित है।

इसके बावजूद 13 दिसंबर की तड़के लगभग सुबह 3 बजे बुलडोजर और जेसीबी मशीनों से खेतों की खुदाई किए जाने का आरोप है। इस कार्रवाई से आदिवासी समुदाय में भारी रोष फैल गया। आंदोलनकारियों का कहना है कि यह न केवल न्यायालय की अवहेलना है, बल्कि उनकी आजीविका और अस्तित्व पर सीधा हमला भी है।

प्रदर्शनकारियों ने बताया कि पुलिस बल की मौजूदगी में कुत्रा तहसील के लांजीबेरना मैजर में 18 रैयतों की कुल 27.26 एकड़ भूमि तथा राजगांगपुर तहसील के विहाबंद मौजा में 9.22 एकड़ जमीन जब्त कर ली गई। इस दौरान रैयतों की दाल की तैयार फसल को नष्ट कर दिया गया और उपजाऊ कृषि भूमि को जेसीबी मशीनों से पूरी तरह बर्बाद कर दिया गया।

इस मुद्दे पर राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के ओडिशा प्रदेश अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव ने प्रशासन के समक्ष कड़ा विरोध दर्ज कराया। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि आदिवासियों की जमीन और फसल को बलपूर्वक नष्ट करना असंवैधानिक है और यह आदिवासी अधिकारों पर सीधा प्रहार है।

डॉ. यादव ने कहा कि ग्राम सभा की सहमति के बिना और सर्वोच्च न्यायालय में मामला लंबित होने के बावजूद की गई कार्रवाई गंभीर अपराध की श्रेणी में आती है। उन्होंने जिला प्रशासन से तत्काल अवैध भूमि अधिग्रहण रोकने, दोषी अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई करने और प्रभावित परिवारों को न्याय दिलाने की मांग की।

डॉ यादव ने अपने व्यक्तव्य में कहा कि आदिवासी नेताओं ने जिला प्रशासन को निर्णय लेने के लिए समय-सीमा तय की। उन्होंने स्पष्ट किया कि यदि उनकी मांगों पर शीघ्र कार्रवाई नहीं हुई, तो वे अनिश्चितकालीन आर्थिक नाकाबंदी शुरू करेंगे, जिसकी पूरी जिम्मेदारी प्रशासन की होगी।

आदिवासियों की प्रमुख मांगों में नष्ट की गई भूमि और फसलों की तत्काल बहाली, रैयत भूमि को कंपनी के नाम से हटाकर सीधे प्रभावित परिवारों के खाते में स्थानांतरण, तथा आदिवासियों के संवैधानिक और परंपरागत अधिकारों की पूर्ण सुरक्षा सुनिश्चित करना शामिल है।

यह मामला अब सुंदरगढ़ जिले में भूमि अधिग्रहण और खनन गतिविधियों को लेकर बढ़ते असंतोष और तनाव का प्रतीक बन चुका है जो आने वाले समय में मोहन सरकार के लिए किरकिरी का कारण बनेगा इसकी सम्भावनाओं से इन्कार नहीं किया जा सकता। आने वाले दिनों में प्रशासन की भूमिका और निर्णय पर ही यह निर्भर करेगा कि स्थिति शांत होती है या आंदोलन और अधिक उग्र रूप लेता है।

रांची में जमीन कारोबारी से पांच करोड़ रंगदारी की मांग,नहीं दिया तो ताबडतोड फायरिंग

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, रांची के नगड़ी थाना क्षेत्र के बालालौंग में अपराधी राहुल सिंह के गुर्गों ने जमकर तांडव मचाया। गश्ती पुलिस को चुनौती देकर बाइक सवार अपराधियों ने पांच करोड़ रंगदारी नहीं मिलने पर जमीन कारोबारी बबलू प्रसाद के घर पर ताबड़तोड़ फायरिंग की। खबर है कि अपराधियों ने एक दर्जन राउंड गोली चलाई और पिस्टल लहराते हुए फरार हो गए। घटना शुक्रवार देर रात की है। कारोबारी के बयान पर नगड़ी थाना में प्राथमिकी दर्ज की गई है। बता दें कि 11 दिन पहले अपराधियों ने बबलू प्रसाद से पांच करोड़ की रंगदारी मांगी थी। पुलिस के मुताबिक, दहशत फैलाने के लिए अपराधियों ने फायरिंग की है।

इधर, घटना का पता चलने पर मुख्यालय टू डीएसपी, नगड़ी थानेदार दलबल के साथ मौके पर पहुंचे। पुलिस ने घर से कुछ दूरी पर खेत से दुर्घटनाग्रस्त बाइक के अलावा आधा दर्जन खोखे व दो पिस्टल बरामद किए हैं। पुलिस को शक है कि गोलीबारी के बाद भागते समय अपराधियों की बाइक दुर्घटनाग्रस्त हो गई और पिस्टल गिर गई होगी। हालांकि अब तक पुलिस को अपराधियों का सुराग नहीं मिला है। घटना के 8 घंटे बाद पुलिस पहुंची कारोबारी के घर बबलू प्रसाद शुक्रवार को घर पर परिवार के साथ थे। रात में करीब 11:45 बजे गोली चलने की आवाज सुनी। कारोबारी के मुताबिक गोलीबारी की जानकारी नगड़ी थाना को दी गई। लेकिन पुलिस अगले दिन शनिवार सुबह 8 बजे उनके घर पहुंची। इसके बाद पुलिस की टीम जांच पड़ताल की है। सीसीटीवी से कुछ भी हाथ नहीं लगा बताया गया कि बालालौंग क्षेत्र के कई घरों में सीसीटीवी कैमरे लगे हुए हैं। लेकिन शुक्रवार रात घना कोहरा था। इसके चलते कैमरे में अपराधियों की फुटेज साफ नहीं आ पाई है। नगड़ी थाना प्रभारी प्रवीण कुमार ने बताया कि शनिवार शाम में पीड़ित ने आवेदन दिया है। 11 दिन पहले बबलू प्रसाद से मांगी थी रंगदारी कारोबारी ने बताया कि उन्हें नौ दिसंबर को राहुल सिंह गिरोह के द्वारा फोन किया गया था। फोन रीसिव नहीं होने पर उन्हें एक मैसेज भेजा गया। जिसमें कहा गया कि जमीन का काम कर रहे हैं। गैंग के पांच करोड़ देना होगा। अगर राशि नहीं मिली तो उनकी हत्या कर दी जाएगी। इस मामले में बबलू ने नगड़ी थाना में प्राथमिकी दर्ज करायी। कुछ दिन बाद फिर से राहुल गैंग ने मैसेज भेज कहा कि फोन नहीं उठाते हो, अब अंजाम भुगताने को तैयार रहो। दर्ज प्राथमिकी के आधार पर पुलिस न तो उन्हें सुरक्षा मुहैया करायी और न ही कोई कार्रवाई ही की। विदेश में बैठा राहुल चला रहा गैंग राहुल सिंह गिरोह अमन साव गिरोह का गुर्गा है। फिलहाल विदेश में छिपा बैठा है। लगातार व्यवसायियों को इंटरनेट कॉल और मैसेज कर धमकी दे रहा है। राहुल गिरोह ने ऑडियो और व्हाट्सऐप मैसेज भी भेजा है। इसमें 5 करोड़ की रंगदारी मांगी गई है। नहीं देने पर हत्या की धमकी भी दी है। तीन माह पहले अशरफ से मांगी थी 5 करोड़ रंगदारी तीन माह पूर्व नगड़ी के जमीन कारोबारी अशरफ अंसारी से भी राहुल गैंग के नाम से फोन पर पांच करोड़ की रंगदारी मांगी गई थी। उस समय अशरफ ने थाने में केस किया था। लेकिन अब तक इसमें किसी को पुलिस गिरफ्तार नहीं कर पाई है।

Teachers Of Bihar–The Change Makers : शिक्षा परिवर्तन की सबसे बड़ी प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी

परिवहन विशेष न्यूज

पटना/बिहार:- बदलते समय के साथ शिक्षा व्यवस्था में नवाचार, तकनीक और शिक्षक सहयोग की भूमिका लगातार महत्वपूर्ण होती जा रही है। ऐसे दौर में Teachers Of Bihar–The Change Makers मंच देश की शिक्षा व्यवस्था में एक सकारात्मक परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में उभरकर सामने आया है। बिहार से शुरू हुई यह पहल आज देश की सबसे बड़ी प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी (PLC) के रूप में अपनी सशक्त पहचान बना चुकी है।

शिक्षकों द्वारा शिक्षकों के लिए एक सशक्त मंच....

Teachers Of Bihar मंच का मूल उद्देश्य शिक्षकों को एक-दूसरे से जोड़कर सहयोगात्मक अधिगम (Collaborative Learning) को बढ़ावा देना है। यहाँ शिक्षक अपने अनुभव, नवाचार, टीएलएम, गतिविधि आधारित शिक्षण पद्धतियाँ और कक्षा में किए गए सफल प्रयोग साझा करते हैं। यह मंच केवल चर्चा तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका सीधा प्रभाव कक्षा शिक्षण और छात्र अधिगम पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

एनसीईआरटी द्वारा सराहना–राष्ट्रीय पहचान.....

Teachers Of Bihar मंच द्वारा किए जा रहे शैक्षिक प्रयासों को राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT) द्वारा सराहा जाना इस बात का

प्रमाण है कि यह पहल अब राज्य स्तर से निकलकर राष्ट्रीय मंच पर अपनी उपयोगिता और प्रभाव सिद्ध कर चुकी है। यह उपलब्धि बिहार के शिक्षक समुदाय के सामूहिक प्रयासों का परिणाम है।

ई-पत्रिकाओं के माध्यम से ज्ञान का विस्तार....

मंच द्वारा शिक्षकों एवं छात्रों के लिए नियमित रूप से कई शैक्षिक ई-पत्रिकाएं प्रकाशित की जाती हैं।

दैनिक ज्ञानकोश के माध्यम से समसामयिक एवं सामान्य ज्ञान की जानकारी,

प्रज्ञानिका के जरिए शैक्षिक नवाचार, साहित्य, शोध एवं शिक्षण रणनीतियाँ,

तथा बालमंच एवं बालमन के द्वारा बच्चों की रचनात्मक अभिव्यक्ति, लेखन और प्रतिभा को मंच प्रदान किया जाता है। वहीं अन्य पत्रिकाओं में पद्मपंकज एवं गद्यगुंजन भी शिक्षकों एवं छात्रों के लिए काफी उपयोगी साबित हो रहा है।

इन ई-पत्रिकाओं ने डिजिटल माध्यम से शिक्षा को अधिक सुलभ, रोचक और प्रभावी बनाया है।

मजबूत नेतृत्व और स्पष्ट दृष्टि.....

Teachers Of Bihar के फाउंडर शिव कुमार एवं टेक्निकल टीम लीडर ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन के नेतृत्व में मंच निरंतर नई ऊँचाइयों को छू रहा है। उनका मानना है कि शिक्षक ही शिक्षा व्यवस्था की रीढ़ हैं और जब शिक्षक सशक्त होंगे, तभी छात्र और समाज सशक्त होगा।

शिक्षा आंदोलन का रूप लेता मंच....

प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार एवं प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार के अनुसार, Teachers Of Bihar आज केवल एक डिजिटल प्लेटफॉर्म नहीं, बल्कि शिक्षा सुधार का एक सशक्त आंदोलन बन चुका है। मंच से जुड़े हजारों शिक्षक अपने नवाचारों के माध्यम से सरकारी विद्यालयों की शैक्षिक गुणवत्ता में सकारात्मक बदलाव ला रहे हैं।

कार्यक्रम, प्रशिक्षण और नवाचार....

मंच के इवेंट लीडर केशव कुमार बताते हैं कि Teachers Of Bihar द्वारा समय-समय पर वेबिनार, ऑनलाइन शिक्षक संवाद, नवाचार प्रदर्शन एवं कार्यशालाएं आयोजित किए जाते हैं। इन कार्यक्रमों से शिक्षकों को नई शिक्षण तकनीकों, डिजिटल टूल्स और राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप शिक्षण पद्धतियों की जानकारी मिलती है।

भविष्य की दिशा....

Teachers Of Bihar–The Change Makers का लक्ष्य आने वाले समय में और अधिक शिक्षकों को जोड़ते हुए शिक्षा को समावेशी, गुणवत्तापूर्ण और बाल-केंद्रित बनाना है। यह मंच यह सिद्ध कर रहा है कि जब शिक्षक संगठित होकर सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ते हैं, तो शिक्षा व्यवस्था में वास्तविक परिवर्तन संभव है।

Teachers Of Bihar केवल एक नाम नहीं,

यह शिक्षा परिवर्तन की पहचान है।

ग़रीब आदिवासी द्वारा बेटे का शव को झोले में ले जाने मामले पर मधु व गीता कोडा ने दिया धरना

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

चाईबासा ,चाईबासा अस्पताल से एक पिता द्वारा अपने चार माह के बेटे के शव को झोले में ले जाने के दो दिन बाद सिंहभूम की पूर्व सांसद सह संप्रति भाजपा नेत्री गीता कोड़ा अपने पति पूर्व मुख्यमंत्री मधु कोड़ा संग सोमवार को चाईबासा अस्पताल में व्याप्त 'घोर कुप्रबंधन' के खिलाफ रविवार को धरना दिया और परिवार के लिए न्याय की मांग की. कोड़ा ने डिम्बा चतोम्बा नाम के व्यक्ति के गांव का दौरा किया, जिन्हें शुक्रवार को अस्पताल से गांव तक शव ले जाने के लिए वाहन उपलब्ध न होने के कारण अपने चार माह के बेटे का शव थैले में ले जाना पड़ा. पूर्व सांसद ने कहा कि सदर अस्पताल में 20 एम्बुलेंस हैं, लेकिन केवल दो शव वाहन हैं. उन्होंने बताया कि इन दो वाहनों में से एक दुर्घटना के बाद बेकार पड़ा है.

पूर्व सांसद ने आरोप लगाया कि हाल ही में अस्पताल को लगभग 90 लाख रुपये की धनराशि आवंटित की गई थी, लेकिन दवाइयों की खरीद और वाहनों का रखरखाव करने के बजाय, बेईमान अधिकारियों ने इसे हड़प कर लिया. शुक्रवार की घटना का जिक्र करते हुए, गीता ने अनुमंडल पदाधिकारी (सदर) द्वारा मामले की जांच के बाद प्रस्तुत जांच रिपोर्ट का खंडन किया.

रिपोर्ट में दावा किया गया था कि अस्पताल द्वारा उपलब्ध कराई गई गाड़ी के आने से पहले ही डिम्बा शव लेकर अस्पताल से निकल गये थे. भाजपा नेता ने कहा, 'यह बिल्कुल गलत है. मैं व्यक्तिगत रूप से डिम्बा से मिली थी, जिन्होंने बताया कि उन्होंने अपने बेटे के शव को ले जाने के लिए वाहन उपलब्ध कराने का अनुरोध किया था. लेकिन उनके पास पैसे नहीं थे इसलिए अस्पताल अधिकारियों ने उन्हें फटकार लगाई.'

रिम्स की अधिग्रहित जमीन पर अवैध निर्माण कर फ़्लैट बेचने बाले बिल्डरों, नौकरशाहों पर गिरी गाज

हाईकोर्ट ने दी एफ आई आर दर्ज कर खरीददारों को पैसे वापिस करने का आदेश । एसीबी जांच, ज़रूरत पड़ी तो सीबीआई ।

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

सरायकेला, झारखंड हाईकोर्ट ने रांची के डीआईजी ग्राउंड स्थित रिम्स की जमीन पर अवैध निर्माण के मामले में एसीबी जांच के निर्देश दिए हैं. साल 1964-65 से अधिग्रहित भूमि पर बनी बहुमंजिला इमारतों को गिराने के बाद फ्लैट खरीदारों के मुआवजे की जिम्मेदारी भ्रष्ट अफसरों और बिल्डरों पर तय करने को कहा है

झारखंड हाईकोर्ट ने रिम्स की जमीन पर अतिक्रमण के मामले में प्रभावित फ्लैट खरीदारों को उचित मुआवजा देने और यह राशि दोषी अधिकारियों व बिल्डरों से वसूलने का निर्देश दिया है. अदालत ने साफ कहा कि निर्दोष खरीदारों का नुकसान सरकारी कोष से नहीं, बल्कि उन लोगों से भरपाई कराई जाए जिन्होंने सरकारी जमीन को निजी बताकर बेचने का अपराध किया है. झारखंड हाई कोर्ट के अधिवक्ता धीरज कुमार ने बताया कि यह फैसला चीफ जस्टिस तरलोक सिंह चौहान और जस्टिस सुजीत नारायण की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने सुनाया है. मामले की विस्तृत सुनवाई 6 जनवरी को होगी.

कोर्ट ने इस पूरे घोटाले की जांच एंटी करप्शन ब्यूरो एसीबी से कराने का आदेश देते हुए यह भी टिप्पणी की कि आवश्यक हो तो आगे चलकर सीबीआई जांच की संभावना खुली रहेगी. अदालत ने संबंधित अफसरों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने और उनकी जिम्मेदारी तय करने को कहा, ताकि भविष्य

में सरकारी भूमि की ऐसी अवैध सौदेबाजी दोबारा न हो सके.

सरकार ने हाईकोर्ट को बताया है कि रांची के मोरहाबादी और कोकर मौजा में रिम्स की करीब 9.65 एकड़ जमीन पर अवैध कब्जा किया गया, जिस पर मंदिर, बाजार, कच्चे मकान और बहुमंजिला अपार्टमेंट तक खड़े कर दिए गए. यह वही जमीन है, जो 1964-65 में चिकित्सा संस्थान के विस्तार और सार्वजनिक उपयोग के लिए अधिग्रहित की गई थी, लेकिन बाद में राजस्व रिकॉर्ड, रजिस्ट्रेशन और नगर निगम की मिलीभगत से इसे निजी प्लॉट की तरह बेच दिया गया.

इसी अवैध सौदेबाजी के तहत उक्त ग्राउंड के पास बनी एक चार मंजिला अपार्टमेंट सहित कई पक्के ढांचे तैयार हुए, जिनमें दर्जनों फ्लैट बेच दिए गए और लोगों ने जीवन भर की बचत लगा दी. अब हाईकोर्ट के आदेश पर इन संरचनाओं को अवैध घोषित कर गिराया जा रहा है, जिससे पीड़ित खरीदारों की आर्थिक सुरक्षा और आवासीय अधिकार का सवाल सामने आया है.रिम्स परिसर और डीआईजी ग्राउंड की जमीन को अतिक्रमण मुक्त कराने के लिए जिला प्रशासन ने हाईकोर्ट के 3 दिसंबर 2025 के आदेश के बाद 72 घंटे की समय सीमा खत्म होते ही अभियान शुरू किया. इस आदेश में कोर्ट ने स्पष्ट किया था कि रिम्स कैंपस और उससे सटे सरकारी भूखंडों से हर तरह का अतिक्रमण हटाया जाए और किसी भी प्रकार की रोक लगाने वाली याचिकाओं को स्वीकार नहीं किया जाएगा.

इसके बाद पिछले सप्ताह से रांची नगर निगम, पुलिस और रिम्स प्रबंधन की संयुक्त टीम बुलडोजर और जेसीबी की मदद से अवैध मकानों, दुकानों और चार मंजिला अपार्टमेंट को तोड़ रही है, जिससे पूरे इलाके में भारी पुलिस बंदोबस्त के बीच लगातार अतिक्रमण हटाओ अभियान जारी है. हाईकोर्ट ने ताजा सुनवाई में इस अभियान की धीमी रफ्तार पर नाराजगी जताते हुए इसे तेजी से पूरा करने का निर्देश दोहराया.

हाईकोर्ट ने टिप्पणी की कि यदि संबंधित अधिकारी शुरू से सतर्क रहते तो न रिम्स की जमीन बेची जाती और न ही लोगों को अपना घर उजड़ते देखने की नौबत आती. अदालत ने कहा कि बिल्डिंग प्लान पास करने, रजिस्ट्रेशन- म्युटेशन और रेरा स्वीकृति देने वाले अधिकारियों की भूमिका की सेवानिवृत्त या सेवा में मौजूद होने की परवाह किए बिना जांच होनी चाहिए और दोषी पाए जाने पर निलंबन व आपराधिक कार्रवाई की जाए.

दूसरी ओर, निर्दोष फ्लैट खरीदारों के लिए यह आदेश बड़ी राहत माना जा रहा है, क्योंकि कोर्ट ने साफ कर दिया कि उनका आर्थिक नुकसान किसी भी स्थिति में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा और मुआवजा सुनिश्चित कर उन्हें न्याय दिलाया जाएगा. अब सारा ध्यान इस पर है कि एसीबी जांच कितनी तेजी से दोषियों तक पहुंचती है और सरकार कितनी जल्दी प्रभावित लोगों को मुआवजा दिलवाकर रिम्स की जमीन को पूरी तरह अतिक्रमण मुक्त कर पाती है. बता दें कि 20 दिसंबर को स्वतः संज्ञान याचिका पर खंडपीठ ने सुनवाई की थी और रविवार को ऑर्डर की कॉपी जारी हुई है.

महात्मा गांधी हर भारतीय के दिल में, एडिशनल डिपॉजिट बढ़ोतरी वापस ली जाए: कांग्रेस

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर:- कांग्रेस भवन में तीन गंभीर मुद्दों - टाटा पावर का शोषण, MGNREGA स्कीम से महात्मा गांधी का नाम बदलना - पर एक प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित की गई।

कॉन्फ्रेंस में भाग लेते हुए PCC अध्यक्ष भक्त चरण दास ने कहा कि टाटा पावर एडिशनल डिपॉजिट बढ़ाकर और मीटर और बिलों में धोखाधड़ी करके आम आदमी का शोषण कर रही है, इसलिए कांग्रेस इसके खिलाफ जनजागरण अभियान शुरू करेगी। जी राम जी को वापस लेना होगा। दलितों, आदिवासियों और पिछड़े गरीब लोगों को काम की तलाश में शोषण किया गया। उनकी हालत दयनीय थी। लेकिन काम के अधिकार में, UPA-1 से 2014 तक, श्रीमती सोनिया गांधी कांग्रेस की अध्यक्ष थीं और नेशनल एड्स सलाहकार समिति में, राज्य और देश के सभी लोगों की आर्थिक स्थिति को सुधारने और सभी को काम दिलाने के लिए महात्मा गांधी के नाम पर एक रचनात्मक कार्यक्रम दिया गया था। गांधीजी के निर्देशों और संविधान के अनुसार, यह महात्मा गांधी के नाम पर दिया गया था। इससे पूरा देश खुश था। गरीबों को काम या पैसा दिया जाएगा, लेकिन इस सरकार ने इस कानून को तोड़ा है। इसलिए इसे वापस लेना चाहिए। 26 दिसंबर को हर जिला हेडक्वार्टर में रैली होगी और टाटा कंपनी के खिलाफ पब्लिक मीटिंग होगी और जिला कलेक्टर को मेमोरेंडम दिया जाएगा। 30 दिसंबर से पहले एक्स्ट्रा डिपॉजिट अमाउंट रिजेक्ट करना होगा। सरकार को तुरंत कदम उठाने चाहिए। राज्य सरकार को ओडिशा के लोगों के साथ खड़ा होना चाहिए। नहीं तो कानून तोड़ा जाएगा और टाटा कंपनी के जाने तक आंदोलन जारी रहेगा और 29 दिसंबर को सभी बिजली डिपार्टमेंट पूरी तरह खत्म कर दिए जाएंगे। एक मजबूत आंदोलन होगा। ओडिशा में इतनी मिनरल संपदा है कि इसे एक मिनट में हल किया जा सकता है। टाटा कंपनी ओडिशा के लिए लाइफलाइन है। अगर इस टाटा कंपनी को ओडिशा में रहना है तो हमें इसे तुरंत वापस लेना चाहिए। नहीं तो यह तय किया गया है कि कंपनी को निकाल दिया जाएगा। 22 तारीख को हर जिले में पदयात्रा के जरिए सभी वर्कर विरोध करेंगे कि भारत सरकार महात्मा गांधी द्वारा NREGA में किए गए बदलावों को वापस ले, श्री दास ने कहा। कॉन्फ्रेंस के एक और सदस्य, पूर्व फाइनेंस मिनिस्टर पंचानन कानूनगो ने कहा कि अगर कंजम्पशन बढ़ेगा तो बिल बढ़ेगा नहीं तो कम होगा। पिछले साल यह कम होता गया और कम होता गया। क्या कंपनी ने किसी यूजर को पैसे वापस किए? और क्या उसने इसका कोई डेटा दिया है? आपको पता होना चाहिए कि करीब 86 हजार करोड़ रुपये कमाए गए हैं लेकिन उसका कोई डेटा नहीं है। वह रुपया कहां गया? और कंपनी का कंज्यूमर से एक्स्ट्रा डिपॉजिट चार्ज करना बिल्कुल भी मंजूर नहीं है? इसलिए, पूरे राज्य में टाटा पावर के शोषण के खिलाफ विरोध करने की जरूरत है।

पूर्व PCC प्रेसिडेंट प्रसाद हरिचंदन ने कहा, एक गुजराती महात्मा गांधी जिन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन का विरोध करके अंग्रेजों को भगाया और दो गुजराती प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह विदेशी कंपनियों को भारत लाए। जैसे गांधीजी ने अंग्रेजों को भारत छोड़ो कहा था, वैसे ही हमारा नारा है टाटा कंपनियां ओडिशा छोड़ो।

किसानों के उगाए धान की खरीद में बड़े पैमाने पर अनदेखी के कारण, किसान सड़कों पर बैठकर मिल का पैसा गिन रहे हैं। महात्मा गांधी का नाम बदलना लोकतंत्र के लिए चुनौती है।

पूर्व मंत्री जगन्नाथ पटनायक, पूर्व मंत्री सरथ राउत और PCC वाइस प्रेसिडेंट लालतेंदु महापात्रा समेत दूसरे नेताओं ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में अपनी स्पीच दी, जबकि मीडिया सेल के चेयरमैन अरविंद दास ने प्रेस कॉन्फ्रेंस को मॉडरेट किया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023